द्विबिन्दु वर्गीकरण का संक्षिप्त परिचय

बी एन शर्मा
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
राजस्थान विश्वविद्यालय
राजस्थान कालेज प्रांगण, जयपुर

पंचशील प्रकाशन, जयपुर

प्रकाशक पंचशील प्रकाशन
फिल्म कालोनी, जयपुर-302003

सस्करण प्रथम

प्रकाशन वर्ष 1977

मूल्य बीस रुपया मात्र

मुद्रक शीतल प्रिन्टर्स
फिल्म कालोनी, जयपुर-302003

Dwibindu Vargikaran ka Sankshipt Parichay

By B. N. SHARMA

समर्पण

परम श्रद्धेय भारतीय-पुस्तकालय-आन्दोलन के जनक

स्व० डॉ० एस० आर० रंगनाथन

की

पावन स्मृति में—

"त्वदीयंवस्तु देवेश तुभ्यमेव समर्पये"

दो शब्द

पुस्तकालय जगत मे वर्गीकरण का स्थान अद्वितीय है। वर्गीकरण के आधार पर ही पुस्तकालयो मे सगृहीत-ज्ञान का अधिक से अधिक उपयोग हो सकता है। प्रचलित वर्गीकरण प्रणालियो मे स्व० डा० एस आर रगनाथन महोदय की 'द्विबिन्दु-वर्गीकरण-प्रणाली' एक शास्त्रीय प्रणाली मानी जाती है। यह प्रणाली वैज्ञानिक सिद्धान्तो व सूत्रो पर आधारित है तथा इन सूत्रो व सिद्धान्तो को एक बार भलीभाति समझ लेने पर, प्रयोग की दृष्टि से यह पद्धति सर्वश्रेष्ठ, सर्वाधिक स्पष्ट, गहन, विस्तृत तथा सरल सिद्ध होती है।

प्रस्तुत रचना मे, अनेक सहयोगियो व पुस्तकालय–विज्ञान के विद्यार्थियो के परामर्श पर ही, पद्धति के कतिपय प्रमुख सिद्धान्तो व सूत्रो का सरल मातृभाषा मे सक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, जिससे द्विबिन्दु के गूढतम सूत्रो को समझने मे सहायता मिल सके। मूल रूप मे पुस्तक को दो भागो मे विभक्त किया गया है। सर्वप्रथम पद्धति के विभिन्न सस्करणो, आवश्यक एकलो व मूलभूत सिद्धान्तो पर प्रारम्भिक 12 अध्यायो मे प्रकाश डाला गया है तथा शेष भाग मे ज्ञान जगत के विभिन्न प्रचलित विषयो के वर्गाको की रचना हेतु सूत्रों को सरल भाषा मे उपयुक्त उदाहरणो सहित स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। आशा है कि पुस्तकालय विज्ञान के विद्यार्थी व पुस्तकालयो मे कार्यरत बन्धुगण इससे लाभान्वित होगे।

इस रचना मे स्व० डा० एस आर रगनाथन महोदय के अनेक ग्र थो से सहायता व मार्गदर्शन प्राप्त किया गया है तथा अन्य अनेक आचार्यों के ग्र थो से यत्रतत्र सहायता ली गई है जिसके अभाव मे मुझ अल्पज्ञ के लिए एक शास्त्रीय ग्र थ का परिचय प्रस्तुत करना कठिन कार्य था, अत मैं उन सभी गुरुजनो व महानुभावो का हृदय के गहनतल से आभार प्रकट करता हूँ। इसके साथ ही मैसर्स पचशील प्रकाशन जयपुर के श्री मूलचन्दजी गुप्ता को धन्यवाद देना चाहता हू, जिन्होने मुझे इस कार्य हेतु प्रोत्साहित किया तथा बडी लगन से इस ग्रथ को प्रकाशित किया।

अन्त मे, सबसे अधिक आभारी मैं उन गुरुजनो व पाठको का रहूगा जो मेरी मानव-सुलभ-त्रुटियो से होने वाली असुविधाओ के लिए क्षमा करते हुए मुझे मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

—लेखक

अनुक्रमणिका

1

विषय प्रवेश

द्विबिन्दु वर्गीकरण की आवश्यकता

"आवश्यकता आविष्कार की जननी है।" द्विबिन्दु वर्गीकरण सम्बन्ध मे यह कथन पूर्णतः चरितार्थ होता है। मद्रास विश्वविद्यालय, पुस्तकालयाध्यक्ष श्री शियाली रामामृत रगनाथन् जब 1924 ई० मे लन्दन स्कूल आफ लाईब्रेरियनशिप मे पुस्तकालय विज्ञान की शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। उस समय उन्होने वहा दशमलव वर्गीकरण, विषय वर्गीकरण, विस्तारशील वर्गीकरण तथा लाईब्रेरी आफ काग्रेस वर्गीकरण प्रणालियो का अध्ययन किया। अपने अध्ययन काल मे ही उन्होने अनुभव किया कि ये सभी प्रचलित वर्गीकरण प्रणालिया गणनात्मक होने के कारण कठोर हैं तथा नवीन विकसित तथा पुरातन विषयो के लिए उचित वर्गांकों की रचना करने मे असमर्थ हैं। श्री शियाली रामामृत रगनाथन संस्कृत, अंग्रेजी व गणित के विद्वान होने के साथ साथ भारतीय साहित्य की प्रमुख शाखाओ जैसे दर्शन, धर्म, मनोविज्ञान शिक्षा आदि के भी पूर्ण ज्ञाता थे। अतः उनके विचार से इन प्रचलित वर्गीकरण पद्धतियो मे से कोई भी पद्धति विकासशील देश के वाङमय के वर्गीकरण हेतु पूर्ण पद्धति नही हो सकती थी। विशेषतः भारतीय साहित्य के लिए तो ये सभी प्रणालियां अपूर्ण ही नही, निरर्थक भी थी। इस सम्बन्ध मे उन्होने भारतीय वाङमय के सम्यग् वर्गीकरण की आवश्यकताओ को दृष्टि मे रखते हुए, दशमलव वर्गीकरण के जनक प्रो० मेलविल ड्यूई महोदय के सम्मुख उस वर्गीकरण मे कतिपय सुधार करने हेतु अपने सुझाव प्रस्तुत किए। ड्यूई महोदय इन सुझावो को स्वीकार करने के लिए सहमत नही हो सके।

द्विबिन्दु वर्गीकरण की उत्पत्ति

श्री रगनाथन अपने अध्ययन काल मे ही एक ऐसी वर्गीकरण पद्धति की आवश्यकता का अनुभव कर रहे थे जो स्वतन्त्र रूप से सर्वदेशीय विशेषतः भारतीय प्राचीन तथा प्रगतिशील साहित्य का सम्यग् रूप से वर्गीकरण कर सके। इस आवश्यकता ने ही उन्हे इस विचार की ओर आकर्षित किया कि यदि विषयो के विभिन्न पक्षो के लिए पृथक् पृथक् तालिकाओ की रचना की जावे तथा इन

तालिकाओं के एकलो के किसी सयोजक चिन्ह की सहायता से आवश्यकता अनुसार सयोजन किया जावे तो पूर्ण वर्गांक की रचना हो सकती है। इस धारणा को क्रियान्वित करने के लिए उन्होने अपने अध्ययन काल मे ही कुछ विषयो मे अलग-अलग तालिकाएँ बनायी तथा द्विबिन्दु के सयोग से उस विषय के कुछ वर्गांको की रचना करने मे सफलता प्राप्त की। इन तालिकाओं को उन्होने अपने वर्गीकरण के प्राध्यापक डब्लू० सी बारविक शेयर्स महोदय को दिखाया तथा नवीन वर्गीकरण पद्धति की रचना करने हेतु अपनी रुचि व्यक्त की। शेयर्स महोदय ने उन तालिकाओं को देखा तथा सराहना की किन्तु एक चेतावनी स्वरूप उन्होने कहा कि नवीन वर्गीकरण प्रणाली की रचना करना बाहर से आकर्षक व सहज लगता है किन्तु इसके आन्तरिक सतह बहुत कठिन व श्रम पूर्ण होते है। श्री रगनाथन ने अपने प्राध्यापक की यह चेतावनी एक मार्ग दर्शन के रूप मे सहर्ष स्वीकार की तथा अपने अध्ययन के साथ साथ ही नवीन तालिकाओं के निर्माण मे व्यस्त हो गये। इस सम्बन्ध मे डा० रगनाथन समय समय पर शेयर्स महोदय से परामर्श भी करते रहते थे। इस प्रकार सन् 1925 के प्रारम्भ से ही श्री रगनाथन ने एक नवीन वर्गीकरण पद्धति का विधिवत् शुभारम्भ किया। इस पद्धति मे सयोजक चिन्ह द्विबिन्दु निश्चित होने के कारण ही इसे द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली कहा गया।

द्विबिन्दु वर्गीकरण का विकास

पुस्तकालय विज्ञान की शिक्षा समाप्त करके जब श्री रगनाथन जुलाई 1925 मे स्वदेश लौटे तो मद्रास विश्वविद्यालय पुस्तकालय की लगभग 30,000 पुस्तको को इस पद्धति के अनुसार वर्गीकृत करके पुस्तकालय को सुव्यवस्थित किया। इस पद्धति की उपयोगिता से प्रभावित होकर वहा के प्राध्यापको व विद्यार्थियों ने इसकी प्रशसा की। इस पद्धति का सर्वप्रथम सस्करण सन् 1933 मे मद्रास पुस्तकालय सघ के द्वारा प्रकाशित हुआ। इस सस्करण मे सम्पूर्ण ज्ञान जगत को सत्ताईस प्रमुख विषयो म विभक्त किया गया, जिन्हे रोमन लिपि के बडे अक्षरो द्वारा प्रकट किया गया। वर्गीकरण मे अकन पूर्णत मिश्रित रखा गया जिनमे रोमन के बडे व छोटे अक्षर व अरबी अको का प्रयोग हुआ। अरबी अको से तालिकाओं तथा सामान्य वर्गों को प्रकट किया गया। रोमन के छोटे अक्षरो से सामान्य उप विभाग तथा बडे अक्षरो से मुख्य वर्ग व कालक्रम प्रकट किया गया। विषय को सूक्ष्म बनाने के लिए आठ विधियो की रचना की गई तथा सयुक्त विषयो को व्यक्त करने के लिए विषयाग सम्बन्धो का भी निर्माण हुआ। इस सस्करण मे ही विविध विषयो के वर्गांक बनाने हेतु नियमावली व सूत्रो का प्रयोग किया गया। वर्गीकरण पद्धति को सार्थक बनाने के लिए पुस्तको के निर्माण हेतु नवीन विधि का आविष्कार किया गया।

द्वितीय संस्करण 1939

सन् 1939 मे द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली का द्वितीय सशोधित सस्करण प्रकाशित हुआ। जिसमे वर्गीकरण के अट्ठाईस सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया गया तथा एक नवीन 'स्मृति-सुलभ-विधि' का निर्माण भी हुआ। इस सस्करण मे पुरानी तालिकाओ मे सशोधन के साथ विस्तार किया गया तथा अनेक नवीन तालिकाओ की रचना भी की गई। कुछ मुख्य विषयो के नामो मे परिवर्तन किए गए तथा मानव शास्त्र को इतिहास से हटाकर के समाजशास्त्र मे सम्मिलित किया गया। इस सस्करण मे अध्यात्मवाद नामक नवीन मुख्य विषय की रचना हुई जिसको व्यक्त करने के लिए ग्रीक लिपि का डेल्टा △ प्रयोग किया गया। इस सस्करण मे सम्पूर्ण पुस्तक को चार भागो मे विभक्त किया गया जैसे—

1. वर्गीकरण के नियम
2. वर्गीकरण की तालिकाएं
3 *तालिकाओ की अनुक्रमणिका*
4 वर्गांको के कुछ नमूने

तृतीय संस्करण 1945

द्विबिन्दु वर्गीकरण के द्वितीय सस्करण मे कुछ समय पश्चात् ही पुन सशोधन की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी। अत. 1945 ई० मे पुन सशोधित सस्करण प्रकाशित हुआ। इसमे वर्गीकरण के मूलभूत श्रेणियो-व्यक्तित्व पदार्थ, ऊर्जा, स्थान व समय को द्विबिन्दु की मुख्य धारणाओ के रूप मे प्रकट किया गया तथा विभिन्न विषयो मे सहायक क्रमो के स्तरो को निश्चय किया। इसी सस्करण मे वर्गीकरण के व्यवहारिक सिद्धान्तो का प्रतिपादन भी हुआ।

विषयाग सम्बन्धो मे विभिन्न सबधो का उल्लेख करके उन्हे प्रकट करने के हेतु पृथक पृथक बोधाको की रचना की गई। शास्त्रीय विधि द्वारा भारतीय आर्य ग्रन्थो के लिए अलग से एक तालिका का निर्माण हुआ। साहित्य व भाषा शास्त्र मुख्य विषयो के लिए अगीकृत भाषा की धारणा व्यक्त की गई तथा उसे एक आडी रेखा '——' *द्वारा प्रकट किया गया। पूर्व सस्करण के चतुर्थ भाग की समाप्ति की* गई। इस प्रकार उक्त तीनो सस्करणो मे द्विबिन्दु वर्गीकरण शनै शनै स्वतन्त्र पक्षीय पद्धति की ओर अग्रसर हुआ।

चतुर्थ संस्करण 1952

इस पद्धति के चतुर्थ सस्करण 1952 मे द्विबिन्दु वर्गीकरण का पूरा कायाकल्प किया गया। इसी सस्करण से द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति ने ग्रन्थो के वर्गीकरण क्षेत्र से प्रगति करके आलेखो के क्षेत्र मे वर्गीकरण हेतु प्रवेश किया। अत. इस सस्करण मे पुरानी धारणाओं तथा पारिभाषिक शब्दावलियो मे संशोधन किया

गया । पाच मूलभूत श्रेणियों को अब तक द्विबिन्दु ' ' के सयोजक चिन्ह द्वारा ही सयोजन किया जाता था किन्तु अब उनके लिए अलग अलग सयोजक चिन्ह निश्चित किए गए । अब यह पद्धति पूर्णत पक्ष-विश्लेपण का स्वरूप ग्रहण कर चुकी थी । सामान्य उपविभागो को सुव्यवस्थित करके उन्हे तीन भागो मे विभक्त किया गया ।

1 पूर्ववर्ती सामान्य उपविभाग
2. परवर्ती सामान्य उपविभाग
3. पुस्तकाक के रूप विभाग

इस चतुर्थ सस्करण मे ही सामान्य वर्ग को व्यक्त करने के लिए अरबी अको के स्थान पर छोटे रोमन अक्षरो का प्रयोग हुआ । अरबी का उपयोग अब केवल तालिकाओ तथा प्रारम्भिक मुख्य वर्गो के लिए ही माना गया है । मुख्य वर्गो मे भी सयुक्त मुख्य विषयो की रचना की गई तथा उन्हे ग्रीक अक्षरो द्वारा प्रकट किया गया । वर्गांको की रचना हेतु नियमो को समझाने के लिए तैयार वर्गांको की सूची भी प्रकट की जाने लगी ।

पाचवां सस्करण 1957

द्विबिन्दु वर्गीकरण का यह सस्करण मूलत मुख्य वर्गो तक ही सीमित रहा । इसमे अनेक तालिकाओ को विस्तृत किया गया, अनेक तालिकाओ मे पुन सशोधन किया तथा अनेक नवीन तालिकाओ की रचना भी की गई । अर्थशास्त्र मुख्य वर्ग म 'प्रबन्ध' व 'मजदूरी की तालिकाओ मे सशोधन हुआ तथा विधिशास्त्र मुख्य वर्ग म नवीन तालिकाओ की रचना हुई । अनुक्रमणिका का भी विस्तार हुआ । इस प्रकार चतुथ सस्करण मे जो त्रुटिया अथवा कमिया रह गई थी उन्हे 1957 के पचम सस्करण मे सशोधित करके प्रकाशित किया गया ।

छठा सस्करण 1960

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति मे उक्त सस्करण के कुछ समय पश्चात ही पुन सशोधन की आवश्यकता हो गई । अत 1960 ई० म यह पद्धति अनेक नवीन धारणाओ के साथ छठे सस्करण के रूप मे प्रकाशित हुई । मुख्य वर्गो मे सयुक्त विषयक मुख्य वर्गो के बोधाक ग्रीक अक्षरो के स्थान पर सयुक्त रोमन अक्षरो का प्रयोग उसी क्रम म किया गया । जैसे—खनिज विज्ञान व पशु पालन के लिए क्रमश HZ व KZ का प्रयोग हुआ । इसके साथ ही मुख्य वर्गो मे साहित्य व भाषा का सयुक्त विषयक वर्ग NZ सम्मिलित किया गया । समय व स्थान पक्ष की तालिका को सूक्ष्म बनाने के लिए उनमे द्वितीय स्तर का नवीन तालिकाओ की रचना की गई । वर्गीकरण के मूल नियमो म भी सशोधन किया गया । शिक्षा व कृषि वर्गो के पक्षो मे भी परिवर्तन किया गया ।

पुनर्मुद्रित छठा सस्करण 1963, 1964, 1969,1976

द्विविन्दु वर्गीकरण प्रणाली की लोकप्रियता व उपयोगिता को देखते हुए तथा उसे अभिनव बनाये रखने के लिए छठे सस्करण मे पुन सशोधन करने की आवश्यकता का अनुभव किया जाने लगा। इन आवश्यकताओ की पूर्ति हेतु ही छठा सस्करण अनेको बार पुनर्मुद्रित किया गया। इन सस्करणो मे अनेक सशोधन होने पर भी इन्हे सशोधित सस्करण न कह करके पुनर्मुद्रित सस्करण ही कहा गया। क्योंकि इनमे जो कुछ भी सशोधन हुआ है वह केवल परिशिष्ट (Annexure) के रूप मे ही प्रकाशित हुआ। वस्तुत जो कुछ व जिस रूप मे भी सशोधन हुआ है वह वास्तव मे महत्वपूर्ण है क्योंकि इन सस्करणो मे समय पक्ष की अभिव्यक्ति समोजक चिन्ह बिन्दु के स्थान पर उद्धरण ' ' ' चिन्ह से की गई है। पूर्व सस्करणो मे स्थान व समय दोनो पक्ष ही बिन्दु द्वारा व्यक्त किये जाते थे। इस परिशिष्ट मे स्थान पक्ष की अभिव्यक्ति भी चार खण्डो द्वारा की गई है—

1 प्राकृतिक भूखण्ड
2 राजनैतिक भूखण्ड
3 जनसख्यात्मक भूखण्ड
4 दिशामानात्मक भूखण्ड

इन सभी भूखण्डो का प्रयोग करने के सूक्ष्म रूप से नियम भी प्रकट किए गये है। मुख्य वर्गों इतिहास व राजनीतिशास्त्र मे प्रयुक्त *'विदेशनीति'* के लिए नये वर्ग की रचना की गई है तथा उसे व्यक्तित्व पक्ष के अनुसार विस्तृत करके एक तालिका की भी रचना की गई है। मुख्य वर्ग 'उपयोगी कलाएं' के विभागो मे परिवर्तन के साथ विभिन्न पक्षो की तालिकाओ मे भी परिवर्तन किए गये है।

अत यह सस्करण अन्य सस्करणो की भाति ही महत्वपूर्ण है। इन सशोधनो के आधार पर कहा जा सकता है कि चौथे सस्करण से छठे पुनर्मुद्रित सस्करणो तक द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति लगभग पूर्ण स्वतन्त्र पक्षीय पद्धति बन चुकी है। क्योकि विभिन्न बोधाको के कारण पक्षो के स्तरो व आवर्तनो की कठोरता प्राय समाप्त हो चुकी है।

आगामी सातवा सस्करण

द्विबिन्दु वर्गीकरण का आगामी सातवा सस्करण लगभग पूर्ण तैयारी पर है। यह सातवा सस्करण डा० शियाली रामामृत रगनाथन के स्वप्नो को साकार करेगा क्योकि यह सस्करण प्रकाशित होने पर यह पद्धति पूर्णत स्वतन्त्र पक्षीय प्रणाली बन जावेगी, ऐसा विश्वास किया जा रहा है।

यह सस्करण क्षेत्रक अकन की सहायता से विभिन्न पक्षो के स्तरों व आवर्तनो के अनुक्रम मे प्रच्छन्न कठोरता को पूर्णरूपेण समाप्त करेगा। इस सस्करण का

प्रमुख उद्देश्य गहन वर्गीकरण करना है। जिससे प्रलेखो का वर्गीकरण सहज हो सके। इन धारणाओं के कारण ही इस पद्धति मे विशाल पैमाने पर परिवर्तन किए जाने की सभावनाएँ हैं—जैसे आशिक व सर्वव्यापी मुख्य वर्गों की सख्या इस सस्करण मे 105 तक पहुच गई है। मूल विषयो की सख्या मे विधि प्रणालियो व विशिष्ट अध्ययनो को भी सम्मिलित कर लिया गया है। नवीन 'परिवेशीय विधि' का भी निर्माण हो रहा है। पूर्ववर्ती सामान्य एकलो के लिए भी सयजोक चिन्ह दो उद्धरणो ' का प्रयोग किया जावेगा। इनके साथ ही ऊर्जा, पदार्थ व व्यक्तित्व पक्षो के लिए सामान्य मूल श्रेणी के एकलो की रचना का प्राविधान है। अनेक स्थानो पर प्रचलित ऊर्जा पक्ष के विभागो का उपयोग इस सस्करण मे पदार्थ पक्ष के रूप मे किया जाना है। विषयाग सबन्धो के मूल सयोजक चिन्ह 'O' के स्थान पर '&' का प्रयोग किया जाना है।

इस प्रकार द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति 1933 से निरन्तर लोकप्रिय, प्रगतिशील व उपयोगी पद्धति बनी हुई है।

द्विबिन्दु वर्गीकरण की विशेषताए

1 द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली एक वैश्लेषी सश्लेषणात्मक पद्धति है। यह पद्धति पक्ष नियम उपनियमो द्वारा कठोर नही होती बल्कि किसी भी विषय का वर्गांक बनाने मे सहज हो जाती है। इस पद्धति मे वर्गांको की तैयार तालिकाए नही है अपितु तालिकाओं की मदद से वर्गांक तैयार होते हैं।

2 द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली का आकार अन्य प्रणालियो से छोटा है किन्तु अन्य वर्गीकरण प्रणालियो की अपेक्षा कही अधिक वर्गांको की रचना करने मे सक्षम है।

3 द्विबिन्दु वर्गीकरण मे प्रत्येक विषय विशिष्टता प्राप्त किए हुए है तथा यह विशिष्टता अन्य विषयो की सहगामी भी है।

4 द्विबिन्दु वर्गीकरण मे वर्गों की 'श्रृखला तथा पक्तियों' मे अनन्त ग्राह्यता है जिनके कारण विषय का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण हो सकता है।

5 पद्धति पाच मूलभूत श्रेणियो के सिद्धान्त पर आधारित होने के कारण पूर्णत शाश्वत् वर्गीकरण प्रणाली सिद्ध होती है।

6 यह पद्धति विषय के प्रत्येक स्तर पर पक्ष विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

7 द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति मे विभिन्न विषयो तथा उनके उप विभागो मे अनेक प्रकार के सम्बन्धो के कारण सयुक्त-विषयो मे वर्गांको की रचना करने म सक्षम है।

8 द्विबिन्दु पद्धति मे विशिष्ट अध्ययनो तथा प्रणालियो के लिए पूर्ण प्राविधान है। जिसके कारण वर्गीकरण सूक्ष्म व विस्तृत होता है।

9. द्विविन्दु प्रणाली मे सामान्य उपविभागो की विस्तृत व व्यवस्थित तालिकाए होने के कारण मुख्य विषय तथा उनके प्रत्येक पक्ष अधिक स्पष्ट व सूक्ष्म बनाए जा सकते है।

10 यह पद्धति वर्गीकरण के सभी सिद्धान्तो का प्रतिपादन करने मे हमेशा अभिनव व शाश्वत पद्धति बनी हुई है।

11. द्विविन्दु पद्धति मे विविध 'विधिया' होने के कारण किसी भी विषय व उसके पक्षो को अधिक स्पष्ट व सूक्ष्म प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है।

12. द्विविन्दु वर्गीकरण प्रणाली मे 'शास्त्रीय विधि' द्वारा किसी भी आर्ष-ग्रन्थ को अपने से सम्बन्धित प्रत्येक रचनाओ को एक ही स्थान पर एकत्रित व व्यवस्थित करने की क्षमता है।

13 द्विविन्दु पद्धति मे प्रत्येक विषय के भाग, विभाग, उपविभाग तथा इनके सूक्ष्म से सूक्ष्म अश भी पूर्ण तर्क पर आधारित हैं तथा सभी प्रकार के पक्षपात से रहित है।

14 द्विविन्दु वर्गीकरण पद्धति के प्रमुख विषयो मे 'विधि विधाओ' का एक प्रमुख वर्ग है जो अन्य मुख्य विषयो से सबधित रहता है। इसका प्रयोग वेष्टित अकन द्वारा होता है।

15. इस पद्धति मे पुस्तकाक की रचना के लिए विशेष सूत्र दिए गए हैं तथा पुस्तकाक को वर्गाक का एक भाग ही माना गया है।

वस्तुत. मिल्स महोदय के अनुसार द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के मौलिक नियम व सिद्धान्तो को समझने के पश्चात यह पद्धति प्रयोग के लिए अत्यधिक सरल हो जाती है।

2

प्रमुख विषय

द्विविन्दु वर्गीकरण प्रणाली मे ज्ञान जगत के सभी सामान्य व यथार्थ प्रमुख विषयो तथा मान्यता प्राप्त नवीन प्रमुख विषयो का पूर्णत समावेश किया गया है। इसके साथ ही साथ नवीन विधि विधाए तथा भविष्य मे समावित ज्ञात व अज्ञात प्रमुख विषयो के समावेश हेतु भी पद्धति मे पूर्ण व्यवस्था रखी गई है। इस प्रकार द्विविन्दु प्रणाली मे विश्व के समस्त ज्ञान को निम्न प्रकार से चार प्रमुख क्षेत्रो मे विभक्त किया गया है। इन सभी प्रमुख विषयो को कृत्रिम भाषा द्वारा प्रकट करने के लिए विविध बोधाको की रचना भी की गई है—

1 सामान्य प्रमुख विषय क्षेत्र
2 नवीन प्रमुख विषय क्षेत्र
3 यथार्थ प्रमुख विषय क्षेत्र
4 नवीन विधि विधाए विषय क्षेत्र

1 सामान्य प्रमुख विषय

सामान्य प्रमुख विषय क्षेत्र के अन्तर्गत उन सामान्य विषयो का चयन किया गया है जो सनातन से (कम व अधिक मात्रा मे) सभी प्रणालियो मे सामान्य रूप से प्रयोग किए जाते है। सामान्य मुख्य विषय से तात्पर्य भी उस विषय से है जिसमे अनेक विषयो से सम्बन्धित विषय-वस्तुओ का समावेश होने के कारण, किसी एक यथार्थ मुख्य विषय द्वारा प्रकट नही किया जा सकता हो। जैसे सामान्य ग्र थ-सूची, सामान्य-विश्वकोष, सामान्य-सामयिक व नियमित प्रकाशन, सामान्य लेख-सग्रह अथवा सामान्य जीवनी सग्रह।

इस प्रकार के सामान्य प्रमुख विषयो को द्विविन्दु वर्गीकरण प्रणाली मे छोटे रोमन अक्षरो (a-z) द्वारा प्रकट किया गया है। z अक्षर को सामान्य विषयो व वर्गों की अभिव्यक्ति हेतु चुना गया है जैसे —

सामान्य ग्र थ सूची	za
सामान्य विश्वकोष	zk
सामान्य सामयिक प्रकाशन	zm

सामान्य लेख सग्रह	zx
सामान्य जीवनिया	zw

यहा z की अभिव्यक्ति केवल सामान्य के अर्थ म ही है अत इसका प्रयोग नही भी किया जावे तो मूल अर्थ म कोई अन्तर नही आता है। जैसे ग्रथ-सूची व विश्वकोष आदि का अर्थ भी सामान्य ग्रथ-सूची व विश्वकोष से ही लिया जाता है।

आधुनिक काल मे अनेक सामान्य प्रमुख विषयो का प्रादुर्भाव हो रहा है तथा वर्गीकरण प्रणालियो म इनका महत्व बढ़ रहा है जैस पाश्चात्य विद्या, गाधी साहित्य, इस्लामी विद्या आदि।

पाश्चात्य विद्या से तात्पर्य पश्चिमी देशो की सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक, तथा वैज्ञानिक विषयो के सबध मे सामुहिक रूप से जानकारी प्रदान करने वाली विद्या से है। गांधी-साहित्य भी महात्मा गाधी के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, दार्शनिक विचारो के सामूहिक वाड्मय का द्योतक है। उसी प्रकार इस्लामी विद्या इस्लाम धर्म से सबधित आचार विचार आदि सभी विषयो पर सामान्य रूप से विवरण प्रस्तुत करने वाली विद्या है। इन सभी विषयो मे अनेक विषयो का सम्मिश्रण होने के कारण, इन्हे किसी एक यथार्थ विषय की विषय-वस्तु के अन्तर्गत रखा नही जा सकता है तथा इसके लिए कोई एक नवीन विषय अथवा वर्ग की रचना भी सभव नही। अत इन विषयो को सामान्य मुख्य विषय कहा जाकर छोटे रोमन अक्षर z द्वारा ही अभिव्यक्त किया गया है।

जैसे —

पाश्चात्य विद्या	z5
भारतीय विद्या	z44
गाधी-साहित्य	zG
विवेकानन्द-साहित्य	zV
इस्लामी विद्या	z(Q7)
बौद्ध-विद्या	z(Q4)

2 नवीन प्रमुख विषय

द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली मे ज्ञान जगत के द्वितीय क्षेत्र से उन नवीन मुख्य विषयो का समावेश किया गया है जो ज्ञान जगत मे मान्यता प्राप्त कर चुके है तथा प्रत्येक वर्गीकरण प्रणाली मे अपना महत्वपूर्ण अस्तित्व स्थापित कर चुके है। जैसे ग्रथालय विज्ञान, पत्रकारिता विशिष्टीकरण आदि। इन प्रमुख विषयो के अभाव मे

किसी भी यथार्थ प्रमुख विषय व वर्ग का सृजन एव सुरक्षा समव नही है। अत इन नवीन विषयो व वर्गो को द्विबिन्दु मे यथार्थ मुख्य विषयो के पूर्व स्थान प्रदान किया गया है। इन विषयो की अभिव्यक्ति के लिए अरबी अको का प्रयोग किया गया है जैसे —

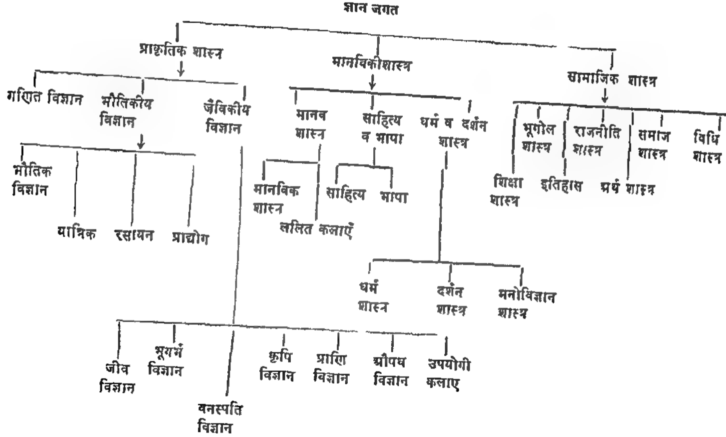
ज्ञान जगत	1
ग्रंथालय विज्ञान	2
पुस्तक विज्ञान	3
पत्रकारिता	4
मानवीकरण	5
विशिष्टीकरण	6
आदर्शीकरण	7

3. यथार्थ मुख्य विषय

इस क्षेत्र मे समस्त ज्ञान को सर्वप्रथम तीन प्रमुख यथार्थ भागो मे विभक्त करके उनमे अन्तर्निहित विविध विषयो को वर्गीकरण पद्धति मे यथार्थ मुख्य विषय या मुख्य-वर्ग कहा गया है। डा० रगनाथन के अनुसार ये सभी मुख्य वर्ग आपस में पृथक् है तथा ज्ञान जगत मे पूर्णतया नि शेष है। इसे अगले पृष्ठ पर रेखाचित्र द्वारा अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है —

इन सभी यथार्थ मुख्य विषयो व वर्गों को द्विबिन्दु वर्गीकरण मे बडे रोमन अक्षरो (A से Z) द्वारा अभिव्यक्ति किया है जैसे .—

प्राकृतिक विज्ञान	A
गणितिय विज्ञान	AZ
गणित विज्ञान	B
भौतिकीय विज्ञान	BZ
भौतिक विज्ञान	C
यान्त्रिक विज्ञान	D
रसायन विज्ञान	E
प्रयोग विज्ञान	F
जीव विज्ञान	G
भू-गर्भ विज्ञान	H
खनिज विज्ञान	HZ
वनस्पति विज्ञान	I
कृषि विज्ञान	J
प्राणी विज्ञान	K


ज्ञान जगत
प्राकृतिक शास्त्र
मानविकीशास्त्र
सामाजिक शास्त्र
गणित विज्ञान
भौतिकीय विज्ञान
जैविकीय विज्ञान
भौतिक विज्ञान
यान्त्रिक
रसायन
प्राद्योग
मानव शास्त्र
साहित्य व भाषा
धर्म व दर्शन शास्त्र
मानविक शास्त्र
ललित कलाएँ
साहित्य
भाषा
धर्म शास्त्र
दर्शन शास्त्र
मनोविज्ञान शास्त्र
जीव विज्ञान
भूगर्भ विज्ञान
वनस्पति विज्ञान
कृषि विज्ञान
प्राणि विज्ञान
औषध विज्ञान
उपयोगी कलाए
शिक्षा शास्त्र
भूगोल शास्त्र
इतिहास
राजनीति शास्त्र
अर्थ शास्त्र
समाज शास्त्र
विधि शास्त्र

पशुपालन विज्ञान	Kz
चिकित्सा विज्ञान	L
औषध विज्ञान	LZ
उपयोगी कलाएँ	M
अध्यात्मवाद व दैविक अनुभूति	Δ
मानविकी तथा सामाजिक विज्ञान	MZ
मानविकी शास्त्र	MZA
ललित कलाए	N
साहित्य और भाषाशास्त्र	NZ
साहित्य	O
भाषा	P
धर्मशास्त्र	Q
दर्शनशास्त्र	R
मनोविज्ञान	S
सामाजिक शास्त्र	SZ
शिक्षा शास्त्र	T
भूगोल शास्त्र	U
इतिहास शास्त्र	V
राजनीति शास्त्र	W
अर्थशास्त्र	X
व्यवस्था	XZ
समाज शास्त्र	Y
सामाजिक कार्य	YZ
कानून	Z

अत. उपरोक्त तालिका मे रेखाचित्र के अनुसार प्राकृतिक विज्ञान (उपयोगी कलाओं के साथ) को A से M तक तथा मानविकीशास्त्र को N से S तथा सामाजिक शास्त्र को T से Z तक भागों मे विभक्त किया गया है। ग्रीक भाषा का डेल्टा Δ भारतीय परम्परागत ब्रह्मविद्या व आध्यात्मिक अनुभूति हेतु मध्य मे प्रयोग किया है। इस प्रकार प्रत्येक प्रमुख विषय हेतु एक अक्षर का उपयोग किया जाता है। किन्तु अनेक विषय इस प्रकार के भी होते हैं। जिनमें दो या दो से अधिक विभाग वाले विषय होते उन्हे Z के संयोग मे प्रकट किया है। जैसे साहित्य व भाषा NZ, सामाजिक शास्त्र SZ, मानविकीशास्त्र MZA, उसी प्रकार भौतिकीय विज्ञान BZ प्रकट किए गये हैं।

4 नवीन विधि विधाएं

इस क्षेत्र के अन्तर्गत आधुनिक शिल्पविधाओं का समावेश किया गया है। जैसे मूल्यांकन, शिल्पविधि, प्रशासन-प्रतिवेदन–शिल्पविधि, व्यवस्था-विधि आदि। इन विषयो पर प्रति दिन ग्र थ रचना हो रही है तथा ये नवीन विषय किसी यथार्थ विषय क्षेत्र मे नही आते हैं। इस क्षेत्र की रचना पूर्व कथित क्षेत्रो के विषयो से ही की जा रही है। किन्तु इनकी शिल्पविधि निराली व नवीन है अत उक्त क्षेत्रो के विषय सूचक वर्णों द्वारा ही इनकी अभिव्यक्ति की जाती है। इन अ को मे परस्पर किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न न हो इसलिए इस क्षेत्र के विषय-सूचक अ को को कोष्ठो ( ) मे लिखा जाता है जैसे :—

ग्र थसूची विधा	(a)
सम्मलित शिल्पविधि	(p)
प्रशासन प्रतिवेदन शिल्पविधि	(v)
जीवन विधा	(w)
जनसपर्क शिल्पविधि	(y)
सचार व्यवस्था सिद्धान्त	(P)
व्यवस्था शिल्पविधि	(X)
मूल्यांकन शिल्पविधि	(g)

इस प्रकार ज्ञानजगत के चारो क्षेत्रो के उक्त विवेचनों से यह स्पष्ट हो जाता है कि द्विबिन्दु वर्गीकरण मे मुख्य विषयो अथवा वर्गो को इतना विस्तृत करने पर भी सभी विषय सुस्पष्ट व सुव्यवस्थित है। इस सबध मे सभी मुख्य विषयो अथवा मुख्य वर्ग की एक समुचित सारणी द्विबिन्दु वर्गीकरण के द्वितीय खड मे दी गई है।

3

सामान्य एकल

वर्गीकरण मे सामान्य एकल का तात्पर्य उन एकलो व संज्ञाओ से है जिनका अर्थ व प्रयोग सामान्यत सभी स्थानो पर एक ही प्रकार से होता है। इन एकलो का प्रयोग मुख्य वर्गों पक्षो व अन्य एकलो के साथ उनके विस्तार व गहन अध्ययन हेतु किया जाता है। ये सामान्य एकल वर्गीकरण जगत मे विभिन्न नामो तथा विभिन्न रूपो म प्रयोग किए जाते हैं। द्विबिन्दु प्रणाली मे इनका प्रयोग वैज्ञानिक धरातल पर किया गया है तथा इन्हे सामान्य एकल कहा गया है। डॉ० रगनाथन के अनुसार सभी या बहुसंख्यक वर्गों के पक्षो मे से किसी भी विषय के साथ जो संलग्न हो सकता है जिसके अलग बोधाक से एक ही प्रकार का अर्थ स्पष्ट होता है या एक ही प्रकार की कल्पना व्यक्त होती है तथा जो वर्गांक मे सदैव एक ही प्रकार का कार्य करता है उसे सामान्य एकल कहते हैं।"

द्विबिन्दु वर्गीकरण मे ये सामान्य एकल मुख्यत तीन प्रकार के पाये जाते हैं —

1 वे सामान्य एकल जो किसी ग्रंथ के भौतिक आकार व रूप के वर्गीकरण मे प्रयोग होते हैं जैसे लघु आकार, दीर्घ आकार।
2 वे सामान्य एकल जो किसी ग्रंथ के रूप व भाषा के लिए प्रयोग होते हैं जैसे तालिका, चित्रावली, भाषण, गद्य, पद्य आदि जिसमे ग्रंथ की रचना की गई हो।
3 वे सामान्य एकल जो किसी ग्रंथ की विषय–सामग्री के लिए प्रयोग होते हो जैसे—ग्रंथ-सूची, कोष, सर्वेक्षण, मूल्यांकन, इतिहास आदि।

इस विषय–सामग्री सबधी सामान्य एकलो का प्रयोग द्विबिन्दु प्रणाली मे विभिन्न सूत्रो के आधार पर छोटे रोमन अक्षरो, जिसमे से i, j l, o, q को छोड़कर मे, व्यक्त किया गया है जैसे —

a ग्रन्थावली
b व्यवसाय
c कोश
d तालिका
n वार्षिकी
p सम्मेलन कार्यवाही
r प्रशासनिक रिपोर्ट
s सांख्यिकी

e सूत्र	t कमीशन रिपोर्ट
f मानचित्र	u सर्वेक्षण
g मूल्यांकन	v इतिहास
h औद्योगिक संस्था	w जीवनिया
k विश्वकोष	x संकलित कार्य
m पत्रिका	y साराश

इस प्रकार के सामान्य एकल सुविधा हेतु मुख्यतः दो भागो मे विभक्त किये गये है :—

1. पूर्ववर्ती-सामान्य-एकल
2. परवर्ती-सामान्य-एकल

पूर्ववर्ती सामान्य एकल—उन एकलो को कहते हैं जो मुख्यवर्ग के पूर्ववर्ती हो अर्थात् जिनका स्थान वर्गीकरण मे वर्गांको के पूर्व हो। इन एकलो का पूर्व अध्ययन मूल विषय को समझाने मे सहायक होता है। जैसे भारतीय ज्योतिष के अध्ययन के पूर्व भारतीय ज्योतिष संबधी ग्रंथ-सूची तथा उसकी पृष्ठभूमि जानना अधिक उपयोगी होगा। अत. इनकी उपयोगिता मूल विषय ग्रथो से पूर्व ही होती है।

पूर्ववर्ती-सामान्य एकलो का प्रयोग किसी भी वर्गांक मे स्थान-पक्ष के पूर्व होता है तथा इसके लिए किसी प्रकार के संयोजक चिन्ह की आवश्यकता नही होती है

जैसे— v	इतिहास का प्रयाग निम्न प्रकार से ह :—
2v	पुस्तकालय विज्ञान का इतिहास
234v	विश्वविद्यालय पुस्तकालय का इतिहास
234,12v	विश्वविद्यालय पुस्तकालयो मे पाडुलिपियो का इतिहास
234:51v	विश्वविद्यालय पुस्तकालय मे वर्गीकरण का इतिहास
234:51v.44	भारत के विश्वविद्यालय पुस्तकालय मे वर्गीकरण का इतिहास

पूर्ववर्ती सामान्य एकलो का प्रयोग सुविधा की दृष्टि से तीन प्रकार से किया जाता है .—

1. देशपक्ष के पूर्व प्रयुक्त पूर्ववर्ती सामान्य एकल
2. देशपक्ष के पश्चात् प्रयुक्त पूर्ववर्ती सामान्य एकल
3. केवल काल पक्ष के पश्चात् प्रयुक्त पूर्ववर्ती सामान्य एकल

1. जो पूर्ववर्ती सामान्य एकल देशपक्ष के पूर्व प्रयोग किये जाते है अर्थात् मुख्य वर्ग, व्यक्तित्व, पदार्थ व उर्जा पक्षो के पश्चात् प्रयोग होते है, उनके लिए किसी भी प्रकार के संयोजक चिन्ह की आवश्यकता नही होती है। इन एकलो के अलग अलग सूत्र होते हैं जो व्यक्तित्व के प्रथम स्तर व द्वितीय स्तर मे विभक्त है। इनमे

व्यक्तित्व प्रथम स्तर प्राय भौगोलिक विभाग को तथा द्वितीय स्तर कालक्रम को प्रकट करते हैं। इन दोनो स्तरो को अल्पविराम के साकेतिक चिन्ह की सहायता से अलग अलग व्यक्त किया जाता है। इस प्रकार देश पक्ष के पूर्व प्रयुक्त पूर्ववर्ती सामान्य एकल उनके सूत्रो के साथ निम्न प्रकार से है —

a	ग्रंथ सूची	a [का]
c	कोष (किसी लेखक व रचना हेतु)	
d	तालिका	
e	सूत्र	
f	मानचित्र	f [का]
k	विश्वकोष	k [व्य], [व्य2]
m	सामयिक प्रकाशन	m [व्य], [व्य2]
n	नियमित प्रकाशन	n [व्य], [व्य2]
p	सगोष्ठी कार्यवाही	p [व्य], [व्य2]
v	इतिहास	v [दे], [का]
w	जीवनी	w [दे], [का]
	सामान्य	w [व्य]
	व्यक्तिगत	w [व्य]
	आत्मकथा	w [व्य], 1
	सूक्तियां	w [व्य], 2
	पत्रावली	w [व्य], 4
x	लेख सग्रह	x [व्य]
y1	निर्देश मार्गक्रम	
y2		
y3		
y4	क्षेत्र	
y7	अध्ययन	
y8	साराश (जीवनी की भांति)	

उक्त सूत्रों के आधार पर ही पूर्ववर्ती सामान्य एकलों का प्रयोग निम्न प्रकार से होता है—

2aN57	1957 मे प्रकाशित पुस्तकालय ग्रंथ-सूची
O15,1D40c	कालीदास शब्द-सागर। (सप्रसग व्याख्या)
k66,L68	ब्रिटनिका विश्वकोष

यदि कोई पत्रिका किसी शिक्षित सस्था द्वारा प्रकाशित होती है तो प्रथम प्रकाशन तिथि के स्थान पर सस्था का स्थापना वर्ष दिया जाता है जैसे—

नागरी प्रचारिणी सभा पत्रिका O152mM93
(1893 नागरी प्रचारिणी सभा का स्थापना वर्ष)

सामान्य एकल w व y7 का प्रयोग समान रूप से होता है मत इनके पारस्परिक अन्तर को समझ लेना आवश्यक है। साधारणत w जीवनी के लिए तथा y7 जीवन अध्ययन के लिए प्रयोग होता है। जीवनी के सूत्र के अनुसार आत्मकथा के लिए, 1, वचनामृत के लिए 2 तथा पत्रावली के लिए 4 अको का प्रयोग काल अक के पश्चात् अल्पविराम चिन्ह के साथ किया जाता है जैसे —

शि० रा० रगनाथन की जीवनी	2wM62
मेरी कहानी–जवाहरलाल नेहरू	V44wM89,1
परम हस के वचनामृत	△2wM73,2

किसी व्यक्ति की जीवनी किमी विषय विशेष से सबधित न हो अथवा एक ही पुस्तक मे अनेक व्यक्तियो की जीवनिया हो तो इस प्रकार के ग्र थ सामान्य वर्ग मे ही रखे जाते हैं।

किसी राजनैतिक, ऐतिहासिक व्यक्ति जैसे राजा, अध्यक्ष, मत्री ससद सदस्य व किसी राजनैतिक दल के नेता के जीवन सबधी विषय सामग्री को उस विषय से सबधित वर्गांक के साथ रखनी चाहिऐ तथा वहा w के स्थान पर y7 का प्रयोग होता है जैसे —

प्रधान मत्री मुरारजी देसाई– एक अध्ययन	V44,24y7M96
नेपोलियन का चरित्र	V53,1y7L69
राममनोहर लाल लोहिया—जीवन कथा	V44,45(P)y7N10

देशपक्ष के पश्चात प्रयुक्त सामान्य एकल—द्विबिन्दु प्रणाली मे कुछ पूर्ववर्ती सामान्य एकलो का प्रयोग देश पक्ष के पश्चात् होता है। इन्हे छोटे रोमन अक्षर r व s से व्यक्त किया जाता है। इनका भी कोई सयोजक चिन्ह नही होता है।

r का प्रयोग प्रशासनिक रिपोर्ट के लिए तथा s का प्रयोग सामयिक सांख्यिकी के लिए होता है जैसे —

भारतीय रेल मत्रालय की आर्थिक रिपोट, 1965	X415 44r'N65
1952 के भारतीय रेल यात्रियो की सांख्यिकी	X415 44s'N52

केवल कालपक्ष के पश्चात् प्रयुक्त पूर्ववर्ती सामान्य एकल—जो पूर्ववर्ती सामान्य एकल केवल कालपक्ष के पश्चात् ही प्रयोग होते हैं वे इस प्रकार हैं —

s सांख्यिकी (अनियमित)	v वस्तुस्त्रोत
t कमीशन रिपोर्ट	v5 साहित्य
t4 सर्वेक्षण	v6 परम्परा
t5 योजना	v7 अभिलेख
t6 आदर्श	v8 आलेख

भारत में विश्वविद्यालय शिक्षा की सांख्यिकी, 1969	T4 44'N69s
योजना आयोग भारत सरकार प्रतिवेदन, 1966	X 75 44'N65t
भारत मे ग्रंथालयों का सर्वेक्षण, 1967	2 44'N67t4
बेसिक शिक्षा के आदर्श, 1970	TN2'N7t6

परवर्ती सामान्य एकल— का तात्पर्य उन एकलों से है जो वर्गांक मे पक्षों के पश्चात् उनके संयोजक चिन्हों द्वारा प्रकट होते हैं तथा उन वर्गांकों को अधिक गहन करने हेतु प्रयोग किए जाते हैं। इस प्रकार परवर्ती सामान्य एकल विषय का विस्तार गहन करने में सहायक होते हैं।

परवर्ती सामान्य एकल मुख्यत दो प्रकार के दिए गये हैं —

1 परवर्ती सामान्य एकल (व्यक्तित्व पक्ष)
2 परवर्ती सामान्य एकल (ऊर्जा पक्ष)

1 परवर्ती सामान्य एकल व्यक्तित्व पक्ष निम्न प्रकार से होते है—

b व्यवसाय	f3 परीक्षण
d संस्था	f4 संगोष्ठी
e शैक्षणिक	f7 यौगिक
e2 निम्नतर	g शिक्षित संस्थाएं
e4 उच्चतर	h औद्योगिक संस्था
f2 निरीक्षण	k व्यापारिक संस्था
	w सरकारी प्रशासनिक विभाग

इन सब को प्रयोग करने के लिये सूत्र [व्य] [व्य2] है। परवर्ती सामान्य एकल व्यक्तित्व का प्रयोग प्राय देश पक्ष के पश्चात् ही होता है तथा इसे व्यक्त करने के पूर्व व्यक्तित्व पक्ष का संयोजक चिन्ह अल्पविराम का प्रयोग आवश्यक है। वर्गांक को सूक्ष्म बनाने के लिए अल्पविराम की सहायता से किसी विशिष्ट नगर के आद्य अक्षर के द्वारा भी उसे व्यक्त किया जा सकता है जैसे ,—

भारत मे रेल व्यवसाय	X415.44,b
राजस्थान पुस्तकालय सघ	2 4437,g
भारत सरकार कृषि मत्रालय, भारत सरकार दिल्ली	J.44,w,D

2 परवर्ती सामान्य एकल : उर्जा—यह परवर्ती सामान्य एकल (उर्जा) सदैव देशपक्ष के पूर्व उर्जा के सयोजक चिन्ह द्विबिन्दु के माध्यम से व्यक्त किये जाते हैं। इन एकलो के अन्तर्गत निम्नलिखित ऊर्जात्मक सामान्य एकल सम्मिलित है —

b1 गणना	f3 प्रयोग करना
b2 आदर्शीकरण	f4 सगोष्ठी करना
b6 मापन	g मूल्याकन
e1 तोलन	r प्रतिवेदन
f जाच करना	u सर्वेक्षण
f2 निरीक्षण	

भारत मे माध्यमिक शिक्षा पद्धति का आदर्शीकरण	T2 3.b2.44
भारत मे सामाजिक बुराईयो पर सगोष्ठी	Y 4 f4.44
प्रसाद मे नाटको का मूल्याकन	O152,2M89:g

4

काल–एकल

आधुनिक वर्गीकरण प्रणालियो मे विशेषत विषय वर्गीकरण प्रणालियो मे काल व समय का प्रयोग अनेक मुख्य व सामान्य वर्गों के लिए आवश्यक है। विभिन मुख्य वर्गों व सामान्य–वर्गों म काल एकल का प्रयोग अनेक रूपो मे हुआ है। जैसे —

ललितकलाए, इतिहास, साहित्य, कानून तथा ग्र थ-सूची, पत्रिका, विश्वकोष, वार्षिकी आदि मे समय का प्रयोग व्यक्तित्व पक्ष के रूप मे हुआ है। काल–एकल का प्रयोग वर्गांक के लिए ही आवश्यक नही है अपितु पुस्तकाक की रचना मे भी आवश्यक है। अत द्विबिन्दु वर्गीकरण मे कालक्रम के लिए दो प्रकार की अलग अलग अनुसूचिया दी गई है।

(1) वर्गांक के लिए कालक्रम।

(2) पुस्तकाक के लिए कालक्रम।

वर्गांको की रचना हेतु समय अथवा कालक्रम को दो विभागो मे विभक्त किया गया है—

1 सर्वमान्य काल एकल।

2 विशिष्ट काल एकल।

1 सर्वमान्य काल एकल—ये एकल सामान्यत भूत वर्तमान व भविष्यत् काल के द्योतक हैं। इसमे आदिकाल से लेकर अनिश्चित भविष्यत्काल के सभी वर्षों को यथार्थ रूप मे सम्मिलित किया गया है। अत इन एकलो की अभिव्यक्ति वर्गीकरण के तृतीय क्षेत्र यथार्थ मुख्यवर्ग के अ कन हेतु बड़े रोमन अक्षरो A से Z (केवल O को छोडकर) के माध्यम से किया है।

तालिका मे सर्वमान्य काल–एकलो को ईस्वी सन् के पूर्व तथा ईस्वी सन् के पश्चात् के रूप मे प्रकट किया है जैसे —

999९ ई० पूर्व से आगे के लिए A

9999 ई० से 1000 ई० पूर्व के वर्षों के लिए B

999 से 1 ई० पूर्व के वर्षों के लिए	C
1 से 999 ई० तक के वर्षों के लिए	D

इस प्रकार 999 ई० पू० प्रत्येक 1000 वर्षों के लिए एक अक्षर का प्रयोग किया गया हैं। शेष 1000 ई० के पश्चात् प्रत्येक 100 वर्षों के लिए एक अक्षर का प्रयोग किया गया है जैसे :—

1000 से 1099 ई० तक के वर्षों के लिए	E
1100 से 1199 ई० के वर्षों के लिए	F
1200 से 1299 ई० के वर्षों के लिए	G
———————————	
1800 से 1899 ई० के वर्षों के लिए	M
1900 से 1999 ई० के वर्षों के लिए	N
2000 से 2099 ई० के वर्षों के लिए	P
2900 से 2999 ई० के वर्षों के लिए	Y
3000 से 3099 ई० के वर्षों के लिए	ZA

इसी प्रकार ZZA व ZZZA के रूप मे ये सामान्य काल एकल अनन्तकाल तक अबाध गति चलती रहेगी।

उक्त सारणी के प्रयोग के लिए डा० रगनायन ने कतिपय नियमो की रचना की है जैसे —

1 यदि 1000 ई० पू० से 9999 ई० पू० के मध्य किसी अभिष्ट वर्ष का अ क प्राप्त करना हो तो अभिष्ट वर्ष को 9999 मे से घटाना चाहिए। जो शेष वचे उसके पूर्व B अ क लगाना चाहिए जैसे 7935 ई० पू० अथवा 3219 ई० पू० का वर्ष अ क जानना हो तो 9999–7935 = 2964 = B 2064

9999–3219 = 6780 = B 6780

2 यदि 1 ई० पू० से 999 ई० पू० के मध्य किसी वर्ष का समय एकल व अ क जानना हो तो अभिष्ट वर्ष को 999 मे से घटाना चाहिए। तथा शेष के पूर्व C अ क लगाना आवश्यक है। जैसे 718 ई० पू०, 524 ई० पू०, 300 ई० पू० का समय एकल ज्ञात करना हो तो—

999–718 = 281 = C481

999–524 = 475 = C275

999–300 = 699 = C699

3 यदि ई० से 999 ई० तक के मध्य मे किसी अभिष्ट वर्ष का समय एकल निकालना हो तो उन्हें इस प्रकार लिखा जाता है जैसे :—

1 ई० = D001, 15 ई० = D15, 50 ई० = D 050
615 ई० = D615 ।

4 इसके पश्चात् प्रत्येक अक्षर को भी वर्षों का द्योतक माना है अत इनका प्रयोग सहज है जैसे —

ई सन् 1035	के लिए	E35
ई सन् 1526	के लिए	J26
ई सन् 1857	के लिए	M 57
ई सन् 1976	के लिए	N 76
ई सन् 1977	के लिए	N 77
ई सन् 2512	के लिए	U 12

५ अनेक विषयों के वर्षों में कुछ वर्षों तक किसी प्रकार का भी परिवर्तन नहीं होता है । डा० रंगनाथन ने इस प्रकार की परिस्थितियों के लिए 20 वर्षों की अवधि सीमित करके सौ वर्ष के लिए के पाच अंको का ही प्रयोग निश्चित किया है तथा इसे अन्तिम प्रभावी दशक प्रणाली कहा गया है । जैसे —

पहले दो दशको के लिए अंक	1
तीसरे व चौथे दशको के लिए अंक	3
पाचवे व छठे दशको के लिए अंक	5
सातवें व आठवें दशको के लिए अंक	7
नवे व अन्तिम दशको के लिए अंक	9

उक्त विभाग नीचे दिये गये उदाहरण से स्पष्ट समझा जा सकता है —

सन् 1900 से 1919 तक के वर्षों के लिए	N1
सन् 1920 से 1939 तक के वर्षों के लिए	N3
सन् 1940 से 1959 तक के वर्षों के लिए	N5
सन् 1960 से 1979 तक के वर्षों के लिए	N7
सन् 1980 से 1999 तक के वर्षों के लिए	N9

अनेक अवसरो पर समय एकलो मे वर्तमान से भूतकाल अथवा भविष्यत् से सबध प्रकट करना आवश्यक हो जाता है उस परिस्थिति मे दो समय एकलो को प्रकट करने के लिए समय एकल के सयोजक चिन्ह एक उद्धरण ' , ' का प्रयोग किया जाता है । इस प्रकार के अविरल समय को प्रकट करने के लिए द्विबिन्दु वर्गीकरण मे वाण →, ← सूचक सयोजक चिन्हो का प्रयोग किया गया है ।

1 जब किसी समय अथवा काल का सबध भूतकाल से प्रकट करना होता है तो उस स्थिति मे वाण की दिशा पराङमुख होता है जैसे —

1 अन्तर्राष्ट्रीय सबंध (1919 से 1976 तक)
W 19 1 'N76←'N19

भारत का आर्थिक विकास (1947 से आज तक)
(X 2'N76←'N47)

2. जब किसी समय अथवा काल का सबध वर्तमान अथवा भूतकाल से निश्चित भविष्यत् काल तक प्रकट करना हो तो बाण का दशामुख '→' अभिमुख होता है जैसे

भारत मे आर्थिक नियोजन X.75 2'N77→'N82
1977 से 1982 तक

3. जब किसी वर्गांक मे अनिश्चित काल तक की अभिव्यक्ति करनी हो तो बाण का दिशामुख'→'अभिमुख होता है तथा उसके आगे कोई वर्षांक नही लिखा जाता है जैसे—

विज्ञान का भविष्य A'N→

2 विशिष्टकाल एकल—इन एकलो के अन्तर्गत यथार्थ वर्षों के अतिरिक्त जो अन्य काल अथवा समय सूचक सज्ञाए है उन्हे प्रकट किया है। जैसे ऋतुए, रातदिन मौसम सबधी समय आदि।

इन विशिष्ट काल एकलो द्वारा समय की सूक्ष्मातिसूक्ष्म वर्गीकरण किया जा सकता है।

इस प्रकार के विशिष्ट समय एकलो को छोटे रोमन
अभिव्यक्त किया गया है जैसे —

c दिन	n5 शरद्
d रात्रि	n6 शिशिर
e सध्याकाल	p मौसम सबधी
n ऋतु	p1 शुष्क
n1 वसन्त	p3 आर्द्र
n3 ग्रीष्म	p8 वर्फीली

काल व समय एकलो का सूचक चिन्ह एक उद्धरण होता है। अत विशिष्ट काल सज्ञाए जो काल एकलो को द्वितीय स्तर के रूप मे प्रयोग होती है इससे इन सज्ञाओ मे प्रयोग करने के पूर्व एक उद्धरण का प्रयोग आवश्यक है इस स्तर का प्रयोग स्वतन्त्र रूप मे भी होता है जैसे :—

भारत मे शरद ऋतु मे वर्षा U2855.2 'n5
हिमाचल प्रदेश मे 1976 का वर्फीला समय U.297'N76'P6'.

5

स्थान - एकल

प्रत्येक वर्गीकरण प्रणाली म स्थान सज्ञाओ व एकलो का महत्वपूर्ण स्थान है। स्थान की अभिव्यक्ति के अभाव मे वर्गीकरण पूण नही कहा जा सकता। डा० रगनाथन ने द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति की मूलभूत श्रेणियो म स्थान पक्ष को विशप महत्व प्रदान किया है। अनेक मुख्य वर्गों म स्थान एकलो को विषय के व्यक्तित्व के रूप मे भी प्रयोग किया है जो ससार के किसी भी भू भाग को प्रकट करते हैं। स्थान शब्द इतना व्यापक है कि इसके क्षेत्र म छोटे से छोटे गाव से लेकर महाद्वीप कटिबन्ध व साम्राज्य क्षेत्र तक सम्मिलित किए जा सकते हैं।

मुख्यत द्विबिन्दु वर्गीकरण मे स्थान एकलो को चार भागो म विभक्त किया गया है —

1 प्राकृतिक विभाग
2 राजनैतिक व प्रशासनिक विभाग
3 जनसख्यानुसार विभाग
4 दिशानुसार विभाग

प्राकृतिक विभाग —से तात्पय ससार के सभी प्रकार के प्राकृतिक भू भागो से है जैसे पहाड जगल रगिस्थान, नदी झील, समुद्र आदि जो सामा यत प्रत्येक देश व शहर म पाये जाते हैं। अनेक स्थानो पर इन स्थलो को व्यक्त करना आवश्यक हो जाता है। अत इस प्रकार के सामान्य क्षेत्रो व स्थलो की अभिव्यक्ति भी अन्यत्र की भाति ही छोटे रोमन वर्णों द्वारा की गई है जैसे —

a	भूमि	g1	घाटी
d	मरूभूमि	g7	पवत
e5	डेल्टा	p1	नदी
e6	द्वीप व टापू	p6	झील
f	जगल	r	समुद्र

अनेक

अनेक
वही ए
ससार
प्रदेश न

देश तथा स्थनों का सयोजक चिन्ह बिन्दु ' ' चिह्न है । ग्रत इन भू-मागों के प्रयोग करने के पूव बिन्दु ' चिम्ह लगाना ग्रावश्यक है । जैसे —

राजस्थान की मरुभूमि	U 237 d
ग्रासाम के जगलों मे खेती	J 277 f
पहाड़ो पर चावल की खेती	J 381 g

यदि इन प्राकृतिक स्थलो व स्थानो का वर्णन व्यक्तिगत रूप म ग्रथवा नाम से प्रकट करना ग्रावश्यक हो तो इसके बोधाको के ग्रागे ग्रभिप्ट स्थल व स्थान के प्रथम एक, दो ग्रथवा तीन ग्रक्षरो द्वारा उनके नामो की ग्रभिव्यक्ति की जा सकती है उदाहरणार्थ —

हिमालय पर चावल की खेती	J 381 4 g7H
सिन्धु घाटी की सभ्यता	Y 1 2 g1S
विंध्याचल म पशुग्रो का जीवन	K 2 fV

राजनैतिक विभाग —से तात्पर्य ससार के उन छोटे व विशाल क्षेत्रिय भूभाग से है जहा एक ग्रथवा ग्रनेक भूखण्डो मे राजनैतिक व्यवस्था व प्रशासन एक ही स्थान से सचालित होता हो । इस विभाग के ग्रन्तगत ग्रनेक उप विभाग है जो सुविधा की दृष्टि स सभी क्षेत्रो को निम्न प्रकार से विभक्त किया गया है —

ससार	1
जन्म भूमि	2
ग्रगीकृत प्रदेश	3
एशिया	4
यूरोप	5
ग्रफ्रीका	6
ग्रमेरिका	7
ग्रास्ट्रेलिया	8
सामुद्रिय प्रदेश	9

उक्त उप विभागो मे ससार सर्वव्यापी होने क कारण इसकी ग्रभिव्यक्ति ग्रनेक प्रकार से की गई है ।

साम्राज्य सबधी —ससार के किसी एक भूखण्ड व देश का साम्राज्य ग्रनेक महाद्वीपो व प्रदेशो म फैला हुग्रा होता है किन्तु समस्त व्यवस्था व प्रशासन उसी एक स्थान स सचालित होता है इस प्रकार के साम्राज्यो की ग्रभिव्यक्ति ससार के बोधक एक '1' ग्रक के माध्यम स की जाती है । तथा उस मूल स्थान व प्रदेश की ग्रभिव्यक्ति भी ग्रावश्यक होती है । ग्रत मूल प्रदेश का ग्रध्यारोपण

(Super-imposition) विधि के अनुसार एक सीधी रेखा (—) से संयोजक चिन्ह द्वारा प्रकट किया जाता है जैसे —

रोमन साम्राज्य	1—52
ब्रिटिश साम्राज्य	1—56

जो मूल प्रदेश होता है वह सीधी रेखा के पश्चात् प्रकट होता है। यह साम्राज्य सबंध उप विभाग केवल संसार के लिए ही नही अपितु किसी भी छोटे वह साम्राज्य सूचक भू भाग के लिए उसी प्रकार से प्रयोग किया जाता है जैसे —

पुर्तगाली भारत	44—542
फ्रांसीसी भारत	44—53

महासागर-तटीय-प्रदेश —यदि कोई भूखण्ड एक अथवा एक से अधिक महाद्वीपो मे फैला हुआ हो किन्तु एक ही महासागर से घिरा हुआ हो तो वह भूखण्ड विश्व के बोधाक '1' के साथ साथ 5 से 8 अंको को जोडकर स्थान तालिका (2 8) के अनुसार बनाये जा सकते है। जैसे —

हिन्द महासागर के तटीय प्रदेश	1 + 5 = 15
एटलांटिक महासागर के देश	1 + 6 = 16
प्रशात महासागर के देश	1 + 7 = 17

कटिबन्ध प्रदेश —यदि कोई एक अथवा एक से अधिक भू भाग किसी एक ही कटिबन्ध के अन्तगत हो जैसे विषुवत्वृत–कटिबन्ध–देश, समशीतोष्ण–कटिबन्ध प्रदेश, उत्तर–ध्रुव कटिबन्ध प्रदेश, वहा भी विश्व का बोधाक '1' के साथ '9' अ जोड करके उक्त प्रदेशो के बोधाक तैयार किए जाते है। द्वि बिन्दु वर्गीकरण के द्वितीय खण्ड मे विस्तृत तालिका दी गई है।

दिशाक्रम प्रदेश —यदि एक से अधिक प्रदेश संयुक्त होकर के किसी दिशाक्रम द्वारा जाने जाते हो जैसे सुदुर–पूर्व प्रदेश, मध्यपूर्व प्रदेश आदि। इस प्रकार के देशो की अभिव्यक्ति एक प्रदेश व एक भूखण्ड से न करके दिशाक्रम देशो से की जाती है यह दिशाक्रम के बोधाक 19 के साथ वर्णानुक्रम मे किए जाते है जैसे —

पूर्वीय देश	19B
समीपवर्ती देश	19C
मध्यवर्ती देश	19D
सुदुरवर्ती देश	19E
दक्षिण पूर्वी देश	19F

दक्षिणवर्ती देश	19G
दक्षिण-पश्चिमी देश	19L
पश्चिमी देश	19M
उत्तर पश्चिमी देश	19R
उत्तरीय देश	19S
उत्तर पूर्व देश	19W
आन्तरिक देश	19X
बाह्य प्रदेश	19Y

इस प्रकार ससार के किसी दिशाक्रम के अनुसार विदित देशो को स्थान एकल दिया जा सकता है। दिशाक्रम का प्रयोग यदि किसी निश्चित देश अथवा भूभाग के लिए करना हो तो उक्त वोधाको मे से विश्व का वोधाक 1 को त्याग करके केवल अक व वर्ण के साथ प्रयुक्त होते है। निश्चित प्रदेश व दिशाक्रम वोधाको के मध्य मे स्थान पक्ष का सयोजक चिन्ह एक बिन्दु '·' का प्रयोग आवश्यक है। जैसे :—

पूर्वी भागो मे चावल की खेती	J 381 19B
भारत के पूर्वी भाग मे चावल की खेती	J 381 2 9B
यूरोप का दक्षिण-पूर्वी इतिहास	V 5 9F

निकट सर्वसत्तायुक्त —ससार के विभिन्न प्रदेशो के कुछ भूखण्ड मिल करके एक सघ के रूप मे मान्यता प्राप्त कर लेते हैं। उस सघ मे सम्मिलित सभी प्रदेश उस सघ के नाम से ही जाने जाते हैं। इस प्रकार के सघो के स्थापना शताब्दी व वर्ष के वोधाको को विश्व के वोधाक 1 के साथ सयुक्त करके नये वोधाक की रचना की जाती है। जैसे :—

राष्ट्रसघ	1N	(स्थापना वर्ष 1900 ई०)
सयुक्त राष्ट्रसघ	1N4	(,, 1940 ई०)
ब्रिटिश राष्ट्र मडल	1N48	(,, 1948 ई०)
नाटो	1N46	(,, 1949 ई०)

इस प्रकार के सघ, मडल आदि किसी सीमित प्रदेश के विभिन्न देशो द्वारा मिल करके भी बनाए जाते है। अत. वहा उस प्रदेश विशेष का वोधाक के साथ उनके स्थापना वर्ष के वोधाको का प्रयोग किया जाता है।

Seato	4N5
CENTO	4N55
अरबलीग	46N

विषयानुक्रम भूभाग —संसार के कुछ भूखण्ड विषय के आधार पर ही जाने जाते है अत इस प्रकार भूभागो को विश्व के बोधांक 1 के साथ विषयानुक्रम विधि द्वारा प्रकट किया जाता है विषयानुक्रमो को कोष्ठो मे ही लिखा जाता है जैसे —

हिन्दी भाषी प्रदेश	1 (P152)
आंग्ल भाषी प्रदेश	1 (P111)
बौद्धधर्मी प्रदेश	1 (Q4)
इस्लामी प्रदेश	1 (Q7)
औद्योगिक प्रदेश	1 (X8)
लौह उत्पादक प्रदेश	1 (F182)
कृषि प्रधान देश	1 (J)
अविकसित प्रदेश	1 (Y 42)
साम्यवादी प्रदेश	1 (W691)

मातृभूमि —प्रत्येक प्रदेश मे अपने देश व प्रदेश सबधी प्रकाशन अधिक मात्रा मे उपलब्ध होते हैं। अत अपने प्रदेश के लिए तालिका के बोधाको का प्रयोग न करके वहा स्मृति सुलभ अक 2 का प्रयोग किया जाता है जैसे —

भारत मे	44	के स्थान पर 2	का अक
इगलैण्ड मे	56	के स्थान पर 2	का अक
फ्रास मे	53	के स्थान पर 2	का अक
स रा. अमेरिका	73	के स्थान पर 2	का अक

इस प्रकार एक अक का प्रयोग कम भी होता है तथा मातृभूमि के लिए स्मृति सुलभ अक की रचना भी होती है।

अगीकृत-प्रदेश —प्रत्येक प्रदेश व देश मे किसी एक विशेष देश से अधिक लगाव होता है तथा वहा के प्रकाशन भी पुस्तकालय मे अन्य प्रदेशो से अधिक सग्रहित होते है। अत इस प्रकार के प्रदेशो को अगीकृत देश कहा जाता है जैसे यदि भारत के लिए इगलैण्ड अगीकृत देश है तो भारत के पुस्तकालयो मे 56 के स्थान पर 3 का प्रयोग होगा।

यदि रूस अगीकृत है तो 58 के स्थान पर 3 का प्रयोग होगा।
यदि अमेरिका अगीकृत है तो 73 के स्थान पर 3 का प्रयोग होगा।
इस प्रकार अगीकृत देश अको के प्रयोग करने से सुविधा रहती है।

शेष सभी महाद्वीपो के प्रदेशो के विभागो व उपविभागो की विस्तृत तालिका द्विबिन्दु वर्गीकरण के तालिका खण्ड के अध्याय 4 के अन्तर्गत दी गई है।

जनसंख्यात्मक देश ---यदि किसी भूखण्ड को उसके व्यक्तिगत नाम से प्रकट करना हो तो उस वर्गांक मे भूखण्ड के साथ साथ उस गाव जिला शहर व राज्य आदि जनसख्यात्मक स्थानो को उनके नाम के प्रारम्भिक एक, दो अथवा तीन अक्षरो का प्रयोग किया जाता है । जैसे :—

राजस्थान मे शिक्षा का प्रचार	T.237
जयपुर मे शिक्षा का प्रचार	T.237.J
पूर्वी जयपुर मे शिक्षा का प्रचार	T.237.J 9B
पश्चिमी जोधपुर में शिक्षा का प्रचार	T.237.JO. 9M
पश्चिमी जैसलमेर में शिक्षा का प्रचार	T.237.JA. 9M

इस प्रकार के जनसंख्यात्मक क्षेत्र को प्रकट करने के लिए देश व राज्य के बोधाकों के मध्य मे स्थान सूचक चिन्ह बिन्दु लगाना आवश्यक है ।

———

6

भाषा एकल

किसी भी वर्गांक को गहन व विस्तृत बनाने मे भाषा एकल का प्रमुख सहयोग होता है । भाषा एकल से तात्पर्य वर्गीकरण के उन एकलो व सज्ञाओ से जो किसी भी वर्गीकरण पद्धति मे भाषा सबधी बोधाको के द्योतक होते है । भाषा एकलो का प्रयोग मुख्य वग साहित्य व भाषा विज्ञान मे होता है । द्विबिन्दु वर्गीकरण मे भाषा एकलो का प्रयोग अधिक विस्तृत रूप म हुआ है । जैसे--

हिन्दी साहित्य	O152
द्राविड साहित्य	O3
तेलगु सासित्य	O35
जर्मन साहित्य	O113
फ्रेन्च साहित्य	O122
पजाबी साहित्य	O153
सैमेटिक साहित्य	O2

उसी प्रकार भाषा विज्ञान मे —

डच भाषा	P112
लेटिन भाषा	P12
ग्रीक भाषा	P13
पालि भाषा	P1511
बगाली भाषा	P157
अरबी भाषा	P28
तामिल भाषा	P31
भारतीय भाषाए	P44
जापानी भाषा	P41

इनके अतिरिक्त भाषा एकलो का प्रयोग देश एकलो के रूप मे भी होता है जैसे हिन्दी भाषी देश, जर्मन भाषी देश। इतना ही नही द्विबिन्दु वर्गीकरण के अनुसार समाजशास्त्र मे भाषा के आधार पर जातियो का वर्गीकरण भी है जैसे —

भारतीय जाति	Y73(P15)
द्रविड जाति	Y73(P3)
मंगोलिया जाति	Y73(P41)

साहित्य व भाषा-विज्ञान मे भाषा एकल व्यक्तित्व के रूप मे प्रकट होते हैं। भाषा एकल वर्गांक के अतिरिक्त पुस्तकाक मे सर्वप्रथम प्रयोग होने वाला पक्ष है।

अत डा० रगनाथन महोदय ने अपने द्विबिन्दु वर्गीकरण म स्थान व समय एकलो की भाति ही भाषा एकलो की भी अलग सारणी दी है। इस सारणी म सर्व प्रथम भाषा को उसके तीन प्रमुख परिवारा मे विभक्त किया है। पहला आर्य-यूरोपियन भाषाए, दूसरा सेमेटिक भाषाए तथा तीसरा द्रविड़-भाषाए इन परिवारो के अतिरिक्त भौगोलिक क्षेत्र मे प्रथम पक्ति के महाद्वीपो मे विभक्त किया है जैसे —

आर्य-यूरोपियन भाषा	1
सेमेटिक भाषा	2
द्रविड भाषा	3
अन्य ऐशियाई भाषा	4
अन्य यूरोपीय भाषा	5
अन्य अफ्रीकी भाषा	6
अन्य अमेरिकी भाषा	7
अन्य आस्ट्रेलियन भाषा	8
अन्य सामुद्रिक भाषा	9

प्रथम तीन परिवारो की विस्तृत सारणी द्विबिन्दु मे प्रस्तुत की गई है उदाहरण के लिए द्राविड भाषाओ का विभाजन निम्न प्रकार से है .—

द्रविड	3
तामिल	31
मलयालम	32
कन्नड	33
तूलू	34
तेलगू	35
कूई	36
ब्राहुई	38
टोडा आदि अन्य	39

कभी वर्गांक की रचना करते समय बनावटी अथवा सारणी के अतिरिक्त भाषा एकल की आवश्यकता हो जाती है। इस प्रकार की भाषाओं की रचना कालक्रम-विधि के आधार पर की जाती है। जिस वर्ष मे उस भाषा की उत्पत्ति होती है उसी वर्ष के बोधाक को 99 के आगे रख करके नवीन भाषा एकल तैयार किया जाता है। जैसे —

Esperanto (एस्पीरअन्टो) भाषा के लिए P99M87 भाषा एकल हुआ।

P = भाषा

P99 = बनावटी भाषा

P99M87 = अस्पीरअन्टो। 1887 ई० की बनावटी भाषा का उद्भव।

प्रत्येक पुस्तकालय में कोई भी एक भाषा वहा की अनुकूल अथवा अगीकृत-भाषा होती है। अगीकृत-भाषा से तात्पर्य पुस्तकालय की उस भाषा के सग्रह से है जो उस पुस्तकालय मे अधिक सख्या से सग्रहीत हो। जैसे भारत मे आग्ल भाषा अगीकृत भाषा है। बगाल के पुस्तकालय मे बगाली भाषा अगीकृत भाषा है उसी प्रकार उत्तरी भारत मे हिन्दी अगीकृत भाषा है। अग्रेजी मिशनरी कालेजो के पुस्तकालयो मे अग्रेजी अगीकृत भाषा है। अत द्विबिन्दु वर्गीकरण मे सुविधा की दृष्टि से तथा निश्चयात्मक दृष्टि से इस अगीकृत भाषा के लिए आडी रेखा—का प्रयोग किया जाता है। जैसे गुजरात मे गुजराती अगीकृत भाषा के लिए —

गुजराती भाषा विज्ञान	P–
गुजराती साहित्य	O–
गुजराती कविता	O–,1
गुजराती उपन्यास	O–,3

भौगोलिक व सामुद्रिक सबधी व भाषा एकलो की रचना के लिए कुछ नियमों का निर्माण किया गया है। जैसे—

जिस भौगोलिक क्षेत्र की भाषा का बोधाक जानना हो उस क्षेत्र के स्थान एकल की सहायता से भाषा अक बनाया जाता है जैसे सुमेरियन भाषा का भाषा एकल P467 हुआ क्योकि—

P = भाषा

P4 = ऐशियाई भाषा

P467 = अरबीयन भाषा

ईराक (मेसोपोटामिया) जहा से सुमेरियन भाषा की उत्पति है।

जब किसी प्रविष्ट सामुद्रिक भाषा का बोधाक जानना हो तो भाषा के साथ भौगोलिक क्षेत्र का ग्रक जिससे वह समुद्र क्षेत्र जाना जाता है।

उस क्षेत्र का भौगोलिक ग्रक जोडना चाहिए। जैसे एशिया क्षेत्र मे हो तो 94 बोधाक हुग्रा तथा यदि इसके ग्रागे भी विस्तृत वर्गांक करना हो तो 4 के भौगोलिक विभागो का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे हिन्द महासागर के लिए P944 भाषा एकल हुग्रा।

P = भाषा
P9 = सामुद्रिक भाषा
P94 = एशियाई सामुद्रिक भाषा
P944 = हिन्द महासागर की भाषा
इसी प्रकार
P94462 = बगाली की खाडी की सामुद्रिक भाषा

मूलभूत-श्रेणियां

द्विविन्दु वर्गीकरण प्रणाली मे मुख्य वर्गों का चयन वैज्ञानिक धरातल पर आश्रित है। इसम मुख्य वर्गों के विस्तार का पूर्ण प्राविधान है। वर्गीकरण प्रणाली मुख्यवर्गों तक ही सीमित नही हाती वल्कि वर्गीकरण प्रक्रिया मुख्य वर्गों के निश्चित होने के पश्चात् ही प्रारम होती है। अत मुख्य वर्गों का आन्तरिक विस्तार कौन कौन से लक्षणो के आधार पर किया जावे जिससे उन वर्गों के अन्तर्गत आने वाले सभी आवश्यक तत्वो का समावेश हो सके। अनेक तत्व व लक्षण स्वय मे पूर्ण होन पर भी उस मुख्य वर्ग के अभिन्न अ ग माने जाते है। जैसे पुस्तकालय-विज्ञान मे पुस्तकालय का स्वरूप, अध्ययन सामग्री तथा प्रशासनिक व्यवस्था।

इस प्रकार के विभिन्न तत्वो व लक्षणो के सबध मे विभिन्न विद्वानो ने अलग अलग व्याख्याए की है। ये सभी व्याख्याए एक दूसरे की पूरक व स्वय म अपूर्ण सिद्ध होती है। डा० रगनाथन ने सभी व्याख्याओ का गहन अध्ययन करके पाच मूलभूत श्रेणियो या तत्वो को प्रतिपादन किया है। ये मूल-भूत श्रेणिया वर्गीकरण जगत मे सर्वमान्य है तथा आधुनिक सभी विद्वानो ने इस सिद्धान्त की बहुत प्रशसा की है।

इन मूलभूत श्रेणियो के सिद्धान्त के आधार पर मुख्य वर्गों का आन्तरिक विवेचन व विश्लेपण अधिक सुदृढ तथा सुनियोजित माना जाता है। इन श्रेणियो को द्विविन्दु वर्गीकरण म पक्षो की सज्ञा दी है। पक्षो से तात्पर्य उन धारणाओ से है जिनके आधार पर मुख्य वर्गों के विभिन्न तत्वो को अलग २ विशेषताओ की शृ खला के अनुसार विभक्त किये जा सकते हैं। किसी मुख्य वर्ग मे एक पक्ष भी हो सकता है अथवा अनेक पक्ष भी। उदाहरण के लिए अर्थशास्त्र मुख्य विषय ले सकते हैं। अर्थशास्त्र के अन्तर्गत-वाणिज्य, उद्योग, व्यवस्था, विदेशी विनिमय, सार्वजनिक ऋण, व्यापार, मजदूरी, द्रव्य, कर, योजना, स्वर्ण,मुद्रा, कागजी, मुद्रा, आयात निर्यात, सार्वजनिक वित्त आदि विभिन्न तत्व सम्मिलित हैं।

ये सभी तत्व अर्थशास्त्र के अभिन्न अ ग है जिनका अध्ययन अर्थशास्त्र मुख्य विषय के अन्तर्गत किया जाता है । अत उक्त सभी तत्वो को उनकी विशेषताओ के आधार पर निम्न प्रकार से विभक्त करके समझा जा सकता है —

अर्थ शास्त्र

(क)	(ख)	(ग)
वाणिज्य	व्यवस्था	स्वर्ण मुद्रा
उद्योग	व्यापार	कागजी मुद्रा
कर	विदेशी विनिमय	
सार्वजनिक वित्त	मजदूरी	
सार्वजनिक ऋण	लेखा	
द्रव्य	योजना	
	आयात–निर्यात	

अत एक मुख्य विषय को स्थूल रूप से उक्त विभिन्न श्रेणियो या पक्षो मे विभक्त किया जा सकता है । इन विभिन्न श्रेणियो के विभागों का उनकी विशेषता व प्राथमिकता की श्रृ खला के आधार पर उचित स्थान निश्चित किया जाता है । जैसे श्रेणी 'क' के विभागो को उनकी विशेषताओ की श्रृ खला के आधार पर निम्न-प्रकार से प्रकट किया जाता है —

अर्थ शास्त्र

(क)	(ख)	(ग)
वाणिज्य		
द्रव्य		
सार्वजनिक वित्त		
कर		
सार्वजनिक ऋण		
उद्योग		

डा० रगनाथन ने इन विभिन्न तत्वो व श्रेणियो को केवल मात्र पाच श्रेणियो मे विभक्त किया है जो भारतीय दर्शन के प च तत्वो के स्वरूप है । वैदिक सूत्र "देश काल पात्र–श्रद्धा–सम्पदस्तु" के अनुसार इन श्रेणियो को निम्न स्वरूपो मे विभक्त किया है —

१ व्यक्तित्व	[व्य]	[Personality]	[P]
२ पदार्थ	[प]	[Matter]	[M]
३ ऊर्जा	[ऊ]	[Energy]	[E]
४ स्थान	[स्था]	[Space]	[S]
५ काल	[का]	[Time]	[T]

जैसे जीवन के लिये सभी पचतत्व समान रूप से आवश्यक हैं उसी प्रकार वर्गीकरण मे ये सभी पक्ष समान रूप से महत्वपूर्ण हैं । अत इनका प्रयोग करते समय उक्त क्रम का पूर्ण ध्यान रखा जाता है । क्रम परिवर्तन के कारण वर्गीकरण मे दोष उत्पन्न हो जाता है । इन्ही कारणो से द्विविन्दु-वर्गीकरण को वैज्ञानिक प्रणाली कहा जाता है ।

इन सभी पक्षो मे से कुछ पक्षो की अभिव्यक्ति सहज है तथा कुछ पक्षो की कठिन है । डा० मिल्स महोदय के अनुसार यह प्रणाली देखने म जटिल मालूम पडती है किन्तु इसके सिद्धान्तो को समझने पर सहज प्रणाली है । मूलभूत श्रेणियो को समझने के लिए डा० रगनाथन के अनुसार इन्हे उपक्रम से समझना अधिक सुगम हैं ।

काल [Time] का बोध समय से होता है जिसके अन्तर्गत युग, शताब्दी दशक, वर्ष ऋतुए व रातदिन सम्मिलित हैं किसी भी वर्गांक म यदि कालपक्ष है तो उसे सहज मे ही जाना जा सकता है । स्थान [Space] पक्ष भी भौगोलिक स्थानो का द्योतक है जिससे ससार, महाद्वीप, दीप, प्रदेश, कटिबन्ध, देश, प्रात, जिला, शहर आदि की अभिव्यक्ति होती है । अत काल पक्ष की भाति ही किसी भी वर्गांक के यदि स्थान पक्ष हो तो उसे सहज म जाना जा सकता है । इस प्रकार काल पक्ष व स्थान पक्ष दोनो सहज म बुद्धिगम्य है । उर्जा [Energy] पक्ष या क्रिया पक्ष की अभिव्यक्ति उक्त पक्षो से अवश्य भिन्न है क्योकि इसके अन्तगत रचना क्रिया, प्रभाव, उपचार पद्धतिया जो सभी प्रकार की क्रिया कलापो से सबधित है । जो इस उर्जा पक्ष म सम्मिलित है अत जहा भी किसी प्रकार का क्रियात्मक या प्रभावात्मक किसी विधि या धारणाओ का बोध होता हो वहा उर्जा पक्ष का प्रयोग माना जाता है ।

पदार्थ [Matter] पक्ष स्वय ही बुद्धिगम्य है क्योकि जहा कोई भी सामग्री सामान्यत वस्तु व धातु किसी क्रियापक्ष स सहायक रूप म प्रयोग हो वहा पदाथ पक्ष की अभिव्यक्ति होती है सामान्यत इस पक्ष का वर्गीकरण म प्रयोग सर्वत्र न होकर यत्र तत्र ही होता है ।

व्यक्तित्व [Personality] पक्ष से तात्पय उस पक्ष से है जो किसी भी मुख्य वर्ग म काल, स्थान उर्जा व पदार्थ पक्षा के पश्चात् शेष रह जाता है । अत

किसी भी मुख्य वर्ग का वह भाग जो उक्त चारो पक्षो के अतिरिक्त होता है वह व्यक्तित्व पक्ष का द्योतक है। "नेति नेति" सूत्र ईश्वर के व्यक्तित्व को जानने का साधन है। उसी प्रकार किसी मुख्य वर्ग की मूलभूत श्रेणियो मे भी यह नही, यह नही के पश्चात् जो शेष रहे वही व्यक्तित्व पक्ष कहा जा सकता है। व्यक्तित्व पक्ष का क्षेत्र किसी भी वर्ग या विषय के अधिक निकट होता है।

द्विबिन्दु वर्गीकरण मे इन पांचो पक्षो का प्रयोग व्यक्तित्व, पदार्थ, उर्जा, स्थान तथा काल क्रमश होता है तथा इन्हे प्रकट करने के लिए निम्नप्रकार के सयोजक चिन्हो का प्रयोग किया जाता है।

1	व्यक्तित्व	(Personality)	[व्य] , अल्पविराम
2	पदार्थ	(Matter)	[प] ; अर्द्ध विराम
3	उर्जा	(Energy)	[ऊ] : द्विबिन्दु
4	स्थान	(Space)	[स्था] बिन्दु
5	काल	(Time)	[स] ' उद्धरण

अत किसी विषय या वर्ग के वर्गांक की रचना करते समय इन पक्षो की अभिव्यक्ति इनके सयोजक चिन्हो द्वारा प्रकट की जाती है। अत किसी भी मुख्य वर्ग मे इन पक्षो के एकलो व उपएकलो का प्रयोग करने के पूर्व इन चिन्हो का प्रयोग करना आवश्यक है। उक्त पक्षो को सूत्र रूप मे ध्यान रखने के लिए इसे PMEST का सिद्धान्त कहते है। जैसे —

भारत के राष्ट्रीय पुस्तकालय मे 1947 तक की पाडुलिपियो का वर्गीकरण।

213,12 51 44'N47

2	पुस्तकालय विज्ञान	(मुख्यवर्ग)
13	राष्ट्रीय पुस्तकालय	(व्यक्तित्व)
,	सयोजक चिन्ह पदार्थ	
12	पाडुलिपि	(पदार्थ पक्ष)
	सयोजक चिन्ह उर्जा	
51	वर्गीकरण	(उर्जा पक्ष)
	सयोजक चिन्ह स्थान	
44	भारत	(स्थान)
'	सयोजक चिन्ह काल	
N47	1947	(काल)

अत वर्गांक 213;12 51 44'N47 मे विभिन्न पक्षो की अभिव्यक्ति सयोजक चिन्हो द्वारा ही प्रकट की गई है। उक्त वर्गांक मे व्यक्तिगत की अभिव्यक्ति के लिए',' चिन्ह का प्रयोग नही किया गया क्योकि व्यक्तित्व मुख्य वर्ग के निकटतम

होने के कारण इसके संयोजक चिन्ह की आवश्यकता नहीं होती है। यदि व्यक्तित्व अपने द्वितीय तृतीय व अन्य स्तरों के साथ प्रयोग किया गया हो तो प्रथम स्तर के व्यक्तित्व के अतिरिक्त सभी स्तरों पर ',' चिन्ह का प्रयोग होता है जैसे —

कालीदास कृत रघुवंश O15, 1D40,3

एशिया के आधुनिक प्रजातन्त्र देशों में प्रधान का महत्व W6,1,4'N

द्विबिन्दु वर्गीकरण में, इन पांच पक्षों को अधिक महत्व दिया गया है प्रत्येक मुख्य वर्ग की रचना ही इन सूत्रों के आधार पर की गई है अतः इनमें से प्रत्येक का भलिभाँति समझ लेना आवश्यक है।

व्यक्तित्व (Personality)—जिस प्रकार मनुष्य का व्यक्तित्व उसके प्रमुख गुणों के माध्यम से ही प्रकट होता है। उसी प्रकार एक मुख्य विषय या पक्ष का व्यक्तित्व भी उसके प्रमुख तत्वों व गुणों के द्वारा ही जाना जा सकता है। अतः मुख्य वर्ग के विभिन्न पक्षों के विवेचन करते समय सर्वप्रथम उस वर्ग के गुण, विशेषताएं तथा तत्वों की दृष्टि आवश्यक होती है। उदाहरण के लिए रसायन विज्ञान में प्रमुख तत्व द्रव्य होता है। द्रव्य के अभाव में रसायन का अस्तित्व संभव नहीं, भाषा के अभाव में साहित्य तथा समूह विशेष के अभाव में मनोविज्ञान व समाजशास्त्र अपूर्ण होते हैं। इस प्रकार प्रत्येक विषय के प्रमुख तत्वों व गुणों को वर्गीकरण में मुख्य वर्गों के व्यक्तित्व पक्ष को नाम से जाना जाता है। निम्नलिखित तालिका द्वारा व्यक्तित्व पक्ष को अधिक स्पष्ट समझा जा सकता है—

मुख्य वर्ग	व्यक्तित्व पक्ष
रसायन विज्ञान	द्रव्य
वनस्पति विज्ञान	वंशजाति
जीव विज्ञान	इन्द्रियादि
कृषि विज्ञान	उपज
चिकित्सा	शरीर अंग
साहित्य	भाषा
मनोविज्ञान	समूह
अर्थशास्त्र	व्यवसाय
समाजशास्त्र	समूह

द्विबिन्दु वर्गीकरण में व्यक्तित्व पक्ष की अभिव्यक्ति मुख्य वर्ग के पश्चात् ही की जाती है। प्रत्येक वर्ग में व्यक्तिपक्ष विशेषताओं व श्रृंखलाओं के रूप में रखे गये हैं। तथा समय समय पर उनके विस्तार के लिए भी पूर्ण व्यवस्था रखी गई है। जैसे दर्शनशास्त्र के नीति शास्त्र में व्यक्तित्वपक्ष —

R4 नीतिशास्त्र

R41	व्यक्तिगत नीति शास्त्र
R42	पारिवारिक नीति शास्त्र
R43	सामाजिक नीतिशास्त्र
R44	व्यवसायिक नीतिशास्त्र
R46	मनोविनोदी नीतिशास्त्र
R37	पशुओ के प्रति नीतिशास्त्र
R49	अन्य नीतिशास्त्र

इस शृंखला मे सभी क्रमबद्ध हैं तथा संख्या ५ व ८ किसी नवीन विषय के प्रादुर्भाव की सभावना के लिए रिक्त रखे गये हैं । इसी क्रम मे पारिवारिक नीतिशास्त्र के उप विभाग भी पूर्ण रूप से शृंखला बद्ध है तथा भावी विस्तार का पूर्ण प्राविधान रखा गया है जैसे :—

R42	पारिवारिक नीतिशास्त्र
R421	पति व पत्नि
R422	माता पिता व शिशु
R423	सरक्षक व सरक्षित
R424	आश्रित सबंधी
R425	अन्य सबंधी
R426	अतिथि
R428	घरेलू सेवक

अनेक मुख्य वर्गों मे व्यक्तित्व पक्ष इतने समृद्ध होते हैं कि उन्हे समझाने के लिए उन्हे अनेक स्तरो मे विभक्त करना आवश्यक हो जाता है । उदाहरण के लिए साहित्य मुख्य वर्ग मे समय, देश पदार्थ सभी पक्षो का अभाव है केवल मुख्य वर्ग व उसका व्यक्तित्व पक्ष ही विद्यमान है । अत यहा व्यक्तित्व को अनेक स्तरो द्वारा प्रकट करना आवश्यक हो गया । जैसे —

कालिदास कृत अभिज्ञान शाकुन्तलम् O15,2D40,2

इस मुख्य वर्ग मे व्यक्तित्व पक्ष चार स्तरो द्वारा प्रकट किया जाता है व्यक्तित्व पक्ष मे व्यक्तित्व पक्ष का पहला स्तर भाषा, भाषा के अभाव मे साहित्य की रचना नहीं हो सकती । दूसरा स्तर भाषा का रूप–किसी भी रचना के लिए भाषा को पद्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, गद्य व चम्पू आदि मे से एक रूप प्रदान करना आवश्यक है । तीसरा व्यक्तित्व स्तर रचनाकार भाषा के अनेक रूपो मे से कोई एक रूप मे रचना का सृजनकर्ता होता है । चौथा व्यक्तित्व स्तर कार्य है जो सृजन कर्ता की रचनाओ से सबंधित होता है ।

इस प्रकार साहित्य मुख्य वर्ग मे व्यक्तित्व पक्ष विभिन्न चार स्तरो द्वारा प्रकट होता है जैसे

पहला व्यक्तित्व स्तर	[व्य]	
दूसरा ,, ,,	[व्य2]	भाषा
तीसरा ,, ,,	[व्य3]	रूप
चौथा ,, ,,	[व्य4]	सृजनकर्ता
		कार्य

जैसे तुलसीदास कृत रामचरितमानस O152,1178,1

O	साहित्य
O152	हिन्दी साहित्य (व्यक्तित्व का प्रथम स्तर)
O152,1	हिन्दी मे कविता (व्यक्तित्व का द्वितीय स्तर)
O152,178	तुलसीदास का कविता साहित्य (व्यक्तित्व का तृतीय स्तर
O152,1178,1	तुलसीदास की रामचरित मानस (चतुर्थ स्तर)
NA44,J,2,67	मुगल कालीन अंग्रेजो की वस्तु कला

अत व्यक्तित्व पक्ष, मुख्य वर्ग के गुणो व तत्वो के अनुसार एक स्तरीय अथवा बहुस्तरीय होते है। विभिन्न स्तरो को प्रकट करने के लिए व्यक्तित्व पक्ष का सयोजक चिन्ह',' प्रयोग किया जाता है।

द्विविन्दु वर्गीकरण मे व्यक्तित्व पक्ष इतना समृद्ध व विस्तृत है कि केवल ऊर्जा पक्ष के अतिरिक्त अन्य सभी पक्ष एक अथवा दूसरे रूप मे व्यक्तित्व पक्ष के लिए प्रयोग किए जाते हैं। जैसे कही पदार्थ पक्ष का प्रयोग व्यक्तित्व पक्ष के लिए हो रहा है, कहीं देश पक्ष व्यक्तित्व पक्ष की अभिव्यक्ति करता है तो किसी मुख्य वर्ग मे काल व्यक्तित्व पक्ष का द्योतक है। इस प्रकार सर्व-व्यापी व्यक्तित्व पक्ष विभिन्न मुख्य वर्गों मे विभिन्न रूप से प्रयोग होता है।

पदार्थ पक्ष व्यक्तित्व के रूप मे—सभी प्रकार के धातु, वस्तु सामग्री आदि पदार्थ के अन्तर्गत ही माने जाते हैं। जैसे लोहा, इस्पात, स्वर्ण, कागज, लकडी, रबड, चमडा आदि। इनका प्रयोग भी अर्थशास्त्र मे स्वर्ण मुद्रा कागजी मुद्रा आदि ललित कलाओ मे कागज लकडी रबड आदि पदार्थ के रूप मे प्रयोग होते हैं तथा लोहा, इस्पात, स्वर्ण, रजत आदि रसायन मे उद्योग मे व्यक्तित्व के रूप मे काम आते हैं ग्रन्थसूची मे अनेक धातु व्यक्तित्व के रूप मे प्रयोग हुए हैं। उपयोगी कलाओ मे सन् सूत कागज रबड आदि व्यक्तित्व के रूप मे प्रयोग हुए हैं जैसे :—

लोहा प्रयोग	F182
तावा प्रयोग	F113

स्थान पक्ष व्यक्तित्व के रूप में—स्थान पक्ष की अभिव्यक्ति भौगोलिक भागो से की जाती है। द्विबिन्दु वर्गीकरण मे स्थान पक्ष को अनेक मुख्य वर्गों मे व्यक्तित्व पक्ष के रूप मे प्रयोग किया गया है। जैसे इतिहास, विधिशास्त्र व ललितकलाओ मे स्थान पक्ष व्यक्तित्व के प्रथम स्तर के रूप मे प्रयोग किया गया है। इसके अभाव मे उक्त विषयो का विवेचन ही समव नही होता है। इस प्रकार स्थान पक्ष ही कही कही व्यक्तित्व पक्ष की अभिव्यक्ति हेतु प्रयोग किए गये है जैसे—

इगलैड मे विरोधी दल का इतिहास	V56,45
भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास	V44.51
भारत मे सपति कानून	Z2,2

काल पक्ष व्यक्तित्व के रूप में—अनेक मुख्य वर्गों मे व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति के लिए समय व काल पक्ष का प्रयोग किया जाता है तथा समय ही वहा व्यक्तित्व पक्ष को प्रकट करता है। जैसे ललितकलाओ मे काल पक्ष ही निश्चित पद्धतियो को प्रकट करता है। जैसे मुगलकालीन चित्रकला, ट्यूडर कालीन वास्तु कला, चालुक्य वशीय सगीत, आदि जहा काल पक्ष व्यक्तित्व के द्वितीय स्तर पर प्रयोग हुआ है। साहित्य मे रचनाकार की अभिव्यक्ति काल पक्ष से ही की गई है जो व्यक्तित्व पक्ष के तृतीय स्तर पर प्रयोग हुआ है सामान्य मुख्य वर्गों मे काल पक्ष व्यक्तित्व का ही द्योतक है जैसे—

भारत मे मुगलकालीन चित्रकला	NQ44,J
इगलैड मे नार्मन कालीन वास्तुकला	NA5641,E
भारत का चालुक्य सगीत	NR44,D

देश व काल पक्ष (दोनो) व्यक्तित्व के रूप में—अनेक मुख्य वर्गों मे देश व काल पक्ष व्यक्तित्व के लिए प्रयोग होते हैं। ऊपर लिखित उदाहरणो मे स्पष्ट है कि ललितकला के मुख्य वर्गों मे देश पक्ष व काल पक्ष व्यक्तित्व के प्रथम व द्वितीय स्तर को प्रकट कर रहे हैं। उसी प्रकार साहित्य मे भी कही २ देशपक्ष व्यक्तित्व के प्रथम स्तर (भाषा) के रूप मे तथा काल पक्ष तृतीय स्तर के रूप मे प्रयोग किये जाते है। सामान्य मुख्य वर्गों मे स्थान व काल पक्ष की अभिव्यक्ति ही व्यक्तित्व के रूप मे की गई है जैसे :—

कालिदास की काव्य रचना	O15,1D40
अमेरिकी साहित्य मे उपन्यास	O73,3
ब्रिटेनिका विश्वकोष	k56,L68
भारत वार्षिकी	n2,N

पदार्थ पक्ष—द्विबिन्दु वर्गीकरण के पचभूत श्रेणियो मे पदार्थ का स्थान दूसरा है। किसी भी मुख्य वर्ग का व्यक्तित्व स्पष्ट हो जाने के पश्चात् उसके द्वारा जो काय सपादन करने व अन्य प्रकार के क्रिया कलापो, मे किसी वस्तु व तत्व की आवश्यकता होती है उसे पदार्थ कहा गया है। डा॰ रगनाथन ने किसी भी क्रिया मे उसके सहायक तत्वो को पदार्थ कहा है जैसे —

पुस्तकालय विज्ञान म पाडुलिपिया, अभिलेख, ललित कलाओ मे लकडी कागज धातु व पत्थर। सगीत कला मे—बासुरी, शहनाई, वीणा, अर्थ-शास्त्र मे कागजी मुद्रा, रजत मुद्रा स्वर्ण मुद्रा आदि।

इसी प्रकार अन्य मुख्य वर्गो मे भी जैसे यत्र शास्त्र, मूर्तिकला समाजशास्त्र आदि विषयो मे पदार्थ पक्ष की आवश्यकता होती है। व्यक्तित्व पक्ष की भाति ही पदार्थ पक्ष के भी अनेक स्तर हात हैं तथा सभी पदार्थ के स्तर विभिन्न स्थानो पर अलग-अलग रूप से प्रयोग होते हैं। पदार्थ पक्ष का प्रयोग मुख्य वर्ग तथा व्यक्तित्व पक्ष के पश्चात् ही होता हैं। पदार्थ पक्ष के एकलो का प्रयोग करने के पूर्व अर्द्धविराम के सयोजक चिन्ह का प्रयोग आवश्यक है जैसे —

पुस्तकालय म पाडुलिपिया	2,12
मूर्तिकला मे लकडी का उपयोग	NQ,1
सगीत कला मे बासुरी का स्थान	NR,22
भारत मे कागजी मुद्रा	X61,442

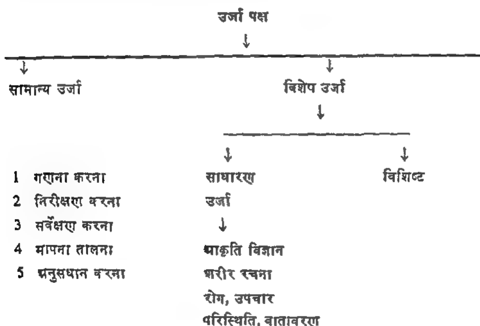
उर्जा पक्ष—मुख्य वर्गो मे अनेक प्रकार की प्रक्रियाओ समस्याओ, व गतिविधियो का उल्लेख रहता है। द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली मे इन सभी धारणाओ की अभिव्यक्ति उर्जा पक्ष के नाम से की गई है। उर्जा पक्ष का प्रयोग द्विबिन्दु ':' सयोजक चिन्ह द्वारा किया जाता हे। उर्जा पक्ष को इस प्रणाली मे केन्द्र बिन्दु माना गया है। वास्तव मे उर्जा व क्रिया पक्ष ही पचभूत श्रेणियो की आत्मा है। डा॰ रगनाथन ने उर्जा पक्ष की अभिव्यक्ति दो रूपो मे की है पहला—वे सभी क्रिया कलाप, समस्याए गतिविधिया जो सामान्यत सभी मुख्य वर्गो के साथ समान अर्थो मे प्रयोग होती है। इसके अन्तर्गत बौद्धिक, व्यवसायिक तथा सस्यात्मक प्रक्रियाए सम्मिलित हैं। अत इस प्रकार की क्रियाए सामान्य क्रियाए कहलाती है। दूसरे प्रकार मे वे समस्याए व प्रक्रियाए हैं जो विशेष प्रयोजन हेतु विशेष मुख्य वर्गो के साथ ही प्रयोग होती है। इस प्रकार की विशेष समस्याए व क्रिया-कलापो का उल्लेख उर्जा पक्ष द्वारा किया जाता है भी दो प्रकार की होती हैं—

1. विशेष क्रियाए समस्याए जो कुछ ही मुख्य वर्गो के साथ प्रयोग किये जा सकते हैं जैसे आकृति विज्ञान, शरीर, रचना, रोग उपचार आदि क्रियाए केवल जीव-

विज्ञान वनस्पति विज्ञान, कृषि शास्त्र, प्राणी विज्ञान, औषध विज्ञान मुख्य वर्गों से साथ ही प्रयोग हो सकते हैं।

2 वे विशिष्ट क्रियाए व धारणायें जो केवल विशिष्ट मुख्य वर्ग के साथ ही प्रयोग किए जा सकते हैं अन्य किसी भी मुख्य वर्ग के साथ उनका प्रयोग सभव नही है जैसे—अर्थशास्त्र मे उत्पादन वितरण, शिक्षा मे पाठ्यक्रम, पाठन प्रक्रिया पुस्तकालय विज्ञान मे—वर्गीकरण सूचीकरण आदि।

इस तथ्य को निम्नलिखित तालिका द्वारा समझा जा सकता है।



जो विशेष श्रेणी की ऊर्जा व क्रियाए हैं वे ही वर्गीकरण ऊर्जापक्ष के अन्तर्गत मानी जाती हैं जैसे —

ग्रथालयो मे वर्गीकरण	2 51
जीवों का शरीर विज्ञान	G 3
शिक्षा मे अध्ययन पद्धति	T 3
भारत की विदेश नीति	V44 19
भारत मे चुनाव पद्धति	V44 91
अर्थशास्त्र म वितरण समस्या	X 3

अनेक पक्षों मे उसी पक्ष का प्रयोग एक से अधिक अवसरो पर करना पडता है। अत उस पक्ष की आकृति दो या दो से अधिक बार करनी होती है। डा०

रगनाथन ने इस प्रकार की आवृत्ति को आवर्तन के नाम से अभिव्यक्त किया है। इस प्रकार के आवतन केवल व्यक्तित्व, पदार्थ व ऊर्जा पक्ष मे ही समव है। आवर्तन के प्रयोग म यह आवश्यक है कि प्रथम आवर्तन के पश्चात् ही द्वितीय आवर्तन का प्रयोग सभव है। अर्थात् प्रथम आवतन के अभाव मे द्वितीय आवर्तन का प्रयोग नही होता है। जैसे उर्जा पक्ष म—

फेफडो की बीमारी	L45 4
फेफडो का एक्सरे से उपचार	L45 4 6253
आखो का इलाज	L185 4 6
ग्रामीण विकास	Y31 7 7
गरीबो के लिए धर्मार्थ	Y 434 68

स्थान पक्ष—अनेक मुख्य वर्गो मे व्यक्तित्व, पदार्थ व ऊर्जा पक्ष की भाति (स्थान अथवा देश पक्ष भी महत्वपूर्ण है। देश पक्ष किसी भी वर्गांक को अधिक गह न विस्तृत बनाने के लिए प्रयोग होता है क्योकि जहा भी वर्गांक म प्रदेश देश अथव उनके विभागो का वर्णन भौगोलिक क्षत्र के द्वारा हो सकता है वहाँ देश पक्ष का प्रयोग आवश्यक है अनेक मुख्य वर्ग इस प्रकार के भी होते है कि दश पक्ष व्यक्तित्व के स्थान म प्रयोग होता है। जैस ललितकलाए, इतिहास, दर्शन, विधि आदि।

द्विबिन्दु वर्गीकरण मे देश पक्ष की अभिव्यक्ति बिन्दु '.' के सयोजक चिन्ह द्वारा की जाती है। देश पक्ष का प्रयोग मुख्य वग, व्यक्तित्व, पदार्थ व ऊर्जा पक्ष के साथ समान रूप से उसके सयोजक चिन्ह की सहायता से किया जा सकता है। जैसे —

भारतीय अर्थशास्त्र	X 44
रूसी साम्यवाद	W 691 58
भारत के राष्ट्रीय पुस्तकालय मे पाडुलिपिया	213, 12 34
भारत मे स्वर्ण मुद्रा का मूल्य	X61, 1 7 44

ललितकलाए, इतिहास, दर्शन, विधि आदि विषयो मे जहा देश पक्ष व्यक्तित्व के रूप म प्रयोग होता है वहा देश पक्ष का सयोजक चिन्ह बिन्दु का प्रयोग आवश्यक नही है जैसे —

ग्रीक वस्तु कला	NA51
भारत का इतिहास	V44
ग्रीकदर्शन परिचय	R851
अमेरिका का कानून	Z73

काल पक्ष—किसी भी वर्गीकरण प्रणाली मे काल अथवा समय पक्ष एक महत्वपूर्ण अंग है। काल पक्ष प्रत्येक मुख्य वर्ग मे एक अथवा दूसरे रूप मे प्रयोग अवश्य होता है। अनेक मुख्य विषयो के सिद्धान्त समय की गति के साथ विकास करने के कारण बदलते रहते हैं। अत उन्हे प्रकट करने के लिए कालपक्ष का प्रयोग किया जाता है, द्विबिन्दु वर्गीकरण मे प्रणाली वर्गों की रचना का आधार ही काल पक्ष है। इस पक्ष का प्रयोग मुख्य वर्ग से लेकर देश पक्ष तक पक्षो के साथ होता है। इस पक्ष का सयोजक चिन्ह मूल पुस्तक के छठे सस्करण 1960 तक बिन्दु था किन्तु इसके पुनर्मुद्रित सस्करण मे अब उद्धरण ',' का सयोजक चिन्ह रखा गया है। मूल पुस्तक मे ही काल पक्ष के लिए दो तालिकाए विभिन्न उपयोग के लिए की गई है। अत काल पक्ष को केवल युग शताब्दि व वर्षों तक ही सीमित न रख करके विभिन्न ऋतुओ रात्रि, दिन सध्या, शीतकाल उष्ण काल आदि तक विस्तृत किया गया है।

8

विधियां

द्विविन्दु वर्गीकरण एव विश्लेषी सश्लेषणात्मक प्रणाली है । इस प्रणाली मे विषयो के विश्लेषण करने की अनेक विधिया अथवा प्रक्रियाए है तथा इनके निश्चित सूत्रो के आधार पर नवीन सयुक्त विषयो का निर्माण तथा उनकी अनुसूचियो मे आवश्यकतानुसार विस्तार किया जा सकता है । समय समय पर वर्गाक रचना सबधी समस्याओ के समाधान के लिए इन सूत्रो तथा विभिन्न विधियो का प्रयोग किया जाता है । इन विधियो की सहायता से ही मुख्य वर्गों उसके विभिन्न पक्षो, एकलो तथा उप एकलो को गहन व विस्तृत किया जा सकता है । वास्तव मे इस प्रकार की प्रक्रियाओ अथवा विधियो के कारण ही वर्गीकरण प्रणाली सर्वदा आधुनिक तथा नवीन विषयो का समावेश करने मे समर्थ रहती है। डा० रगनाथन ने इस प्रकार की विभिन्न विधियो का मुख्यत निम्न रूप से प्रकट किया है —

1	काल क्रम विधि	(Chronological Device)	(CD)
2	भौगोलिक विधि	(Geographical Device)	(GD)
3	विषयक्रम विधि	(Subject Device)	(SD)
4	स्मृतिसुलभ विधि	(Mnemonic Device)	(MD)
5	वर्णक्रम विधि	(Alphabetical Device)	(AD)
6	अध्यारोपण विधि	(Super-imposit on Device)	(SID)

कालक्रम विधि—कालक्रम विधि द्वारा प्रस्तुत विषयो के विस्तृत व स्पष्ट वर्गांक बनाये जाते है । किसी विषय के अन्तर्गत होने वाले नवीन आविष्कार तथा नवीन सप्रदाय, सस्था अथवा योजनाओ को उनके प्रादुर्भाव वर्ष के द्वारा अधिक स्पष्ट किया जा सकता है । किसी व्यक्ति विशेष की अभिव्यक्ति उसके समय द्वारा ही हो सकती है । अनेक मुख्य वर्ग जैसे इतिहास, साहित्य, कानून ललितकलाए आदि मे तो कालक्रम के अभाव मे पूर्ण वर्गांक ही नही बनते है । अत द्विविन्दु वर्गीकरण मे इसके प्रयोग हेतु निम्न प्रकार से नियमो का उल्लेख है —

1 यदि कोई घटना, आविष्कार, सम्प्रदाय व संस्था पूरी शताब्दि मे अपने प्रकार की एक ही हो तो वहा काल पक्ष के एक अंक (शताब्दि द्योतक) का प्रयोग ही उसकी अभिव्यक्ति करने के लिए पर्याप्त होता है जैसे —

आकर्षण सिद्धान्त (Gravitation Theory) (17वी शताब्दी का आविष्कार)	CK
होम्यो चिकित्सा (Homaeopathy) (18वी शताब्दी का आविष्कार)	LL
प्राकृतिक चिकित्सा (Naturopathy) (19वी शताब्दी का आविष्कार)	LM
युद्धस्तरीय अर्थशास्त्र (WAR Economics)	λB

2. जिस शताब्दी मे एक ही प्रकार की घटना, आविष्कार, प्रणाली अथवा संस्था का प्रादुर्भाव एक से अधिक सख्या मे हो (तथा उन सभी की अभिव्यक्ति करना हो) तो समय पक्ष के प्रथम दो अंको का प्रयोग किया जाता जैसे —

ब्रह्म समाज	Q29M2	(19वी शताब्दी के दूसरे दशक मे स्थापना)
प्रार्थना समाज	Q29M6	(19वी शताब्दी के छठे दशक मे स्थापना)
आर्य समाज	Q29M8	(19वी शताब्दी के आठवें दशक मे स्थापना)

तीनो समाजो का प्रादुर्भाव 19 वी शताब्दी के विभिन्न वर्षों मे हुआ अत प्रत्येक को स्पष्ट करने के लिए प्रारम्भ के दो अंको का प्रयोग किया गया है इसी प्रकार—

इथर सिद्धान्त	CM6	(19वी शताब्दी के छठे दशक मे आविष्कार)
इलेक्ट्रोन सिद्धान्त	CM9	(19वी शताब्दी के नवे दशक मे आविष्कार)

3. जिस दशक मे एक ही प्रकार की घटना, आविष्कार, प्रणाली तथा संस्था का उद्भव एक से अधिक हो तो उन सभी की अभिव्यक्ति के लिए काल पक्ष के तीन अंको का प्रयोग होता है।

जैसे —

व्यक्तिवादी मनोविज्ञान	Individualistic Psy	SN14
प्रतिक्रियावादी मनोविज्ञान	Refexology	SN17
'हम' वादी मनोविज्ञान'	We'	SN36

उक्त प्रकार के सभी वर्गांक प्रत्येक विषय अथवा उनके विभागो के अलग अलग वर्षों की अभिव्यक्ति करते है।

4 जिस वर्ष मे एक ही प्रकार की घटना, आविष्कार प्रणाली, व्यक्ति व संस्था का प्रादुर्भाव एक से अधिक हों तो उनकी अभिव्यक्ति काल पक्ष के तीनो अंको को आगे 1, 2, 3, 4, क्रमश. लिखने चाहिए किन्तु यह काल-क्रम व वर्ण-क्रम के एक दो व तीन अक्षरो के पश्चात् ही प्रयोग करने चाहिए।

जैसे—

महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा व सुरेश वर्मा तीनो का वर्ष अंक N05 (1905) है, तथा तीनो के वर्ण क्रम भी समान है। अत

महादेवी वर्मा	O152,3No5 VER,1
रामकुमार वर्मा	O152,3No5 VER,2
सुरेश वर्मा	O152,3No5 VER,3

इस प्रकार कालक्रम विधि द्वारा वर्गांक की अनेक समस्याए सहज मे ही सुगम हो जाती है।

भौगोलिक विधि

किसी भूभाग से सबंधित नवीन प्रणाली, समस्या व धारणा को वर्गीकरण मे समुचित स्थान प्रदान करने के लिए भौगालिक एकलो का प्रयोग किया जाता है। किसी मुख्यवर्ग तथा उसके पक्ष, एकल व उप-एकलो को भौगोलिक एकलो के आधार पर गहन व विस्तृत किया जाता है।

अत इस प्रकार भौगोलिक एकलो के प्रयोग की प्रक्रिया को भौगोलिक विधि कही जाती है।

द्विबिन्दु वर्गीकरण मे भौगोलिक अथवा स्थान-एकलो की विस्तृत सारणी दी गई है जिससे भूभाग के अक प्राप्त किये जा सकते है। जैसे—

अमेरिकी साहित्य	O73
फिजी साहित्य	O9368
नीग्रो जाति	Y76
ग्रीक दर्शन	R851
यूरोपीय दर्शन	R85
सिक्ख धर्म	Q8441
कन्फ्यूसिज्म	Q8412
ताऊ धर्म	Q8413

इसके साथ साथ ललितकलाए, भाषा, इतिहास, कानून आदि म भौगोलिक विधि के अभाव मे वर्गांको की रचना अपूर्ण ही रहती है।

विषय-विधि

विषय विधि से तात्पर्य मुख्यत उस विधि व प्रक्रिया से है जो किसी भी मुख्यवर्ग तथा उसके पक्षो के एकलो उपएकलो को किसी अन्य मुख्यवर्ग व उसके विभागो की सहायता द्वारा अधिक स्पष्ट, उपयोगी व विस्तृत बनाया जाता है।

द्विबिन्दु वर्गीकरण मे इस विधि का प्रयोग विभिन्न अनुसूचियो को विस्तृत करने हेतु तथा सयुक्त विषयो को उनके उपयुक्त स्थान प्रदान करने हेतु अनेक स्थानो पर किया गया है। इस विधि के अभाव मे द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति का आकार दशमलव वर्गीकरण से कही अधिक विस्तृत होता। इस विधि द्वारा ही नवीन सयुक्त विषयो को सरलतापूर्वक द्विबिन्दु वर्गीकरण मे समावेश किया जा सकता है जैसे —

विभागीय पुस्तकालय मे —	24
धार्मिक विभाग पुस्तकालय	24(Q)
बीमा विभाग पुस्तकालय	24(X81)
दर्शन के आत्मविद्या मे —	R3
जननवाद	R39(G)
मानववाद	R39(Y)
शिक्षा मे —	T
ग्रामीण सामुदायिक शिक्षा	T9(Y31)
सैनिक सामुदायिक शिक्षा	T9(Y54)
इतिहास मे कार्य —	V 3
राज्य के धार्मिक कार्य	V 3(Q)
राज्य के शैक्षणिक कार्य	V 3(T)
यातायात सुविधा सबधी कार्य	V 3(X4)
शिक्षा का अधिकार	V 58(T)
समान न्याय का अधिकार	V 58(Z)
अर्थशास्त्र के उद्योग म —	X8
लोहा उद्योग	X8(F182)
कागज उद्योग	X8(M13)

जिस मुख्य वर्ग व उसके विभागो को अन्य वर्ग द्वारा विषय विधि के माध्यम से विस्तृत व स्पष्ट किया जाता है अर्थात् जिस मुख्य वर्ग व उसके विभागो द्वारा विस्तृत किया जाता है उस वर्ग के अको को कोष्ठ ( ) मे प्रकट करना पडता है। जैस उक्त उदाहरणो मे इतिहास के अन्तर्गत राज्य के कार्यो को सख्या 1 व 2 मे धार्मिक (Q) तथा शिक्षा (T) विषयो से प्रकट किया गया है।

ऊर्जा पक्ष की किसी भी अनुसूचि को विषय विधि द्वारा विस्तृत करते समय अन्य वर्ग के अको को प्रधान वर्ग से सूक्ष्म रखना आवश्यक है —

जैसे:—

ब्रिटिश सर्वंधानिक कानून	V56:2(Z)
कानून द्वारा नशे पर पाबंदी	Y:411:5(Z)
साम्यवादी सरकारों में धार्मिक स्वतन्त्रता	W691:58(Q)

वर्ण-क्रमविधि

किसी भी मुख्य वर्ग व उसके विभागों को अधिक स्पष्ट व विस्तृत करने के लिए अनेक अवसरों पर वर्गीकरण में वर्णों का प्रयोग किया जाता हैं। इन वर्णों का प्रयोग सामान्यत: व्यक्ति वाचक सज्ञाओ, संस्थाओं व उद्योगो के नामों के लिए तथा केवल उन वस्तुओं के लिए ही किया जाता है जो अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त किए होती है। अत: इस प्रकार के वर्णों के प्रयोग करने की क्रिया को वर्णक्रम-विधि कहते है।

इस विधि को प्रयोग करने के लिए क्रम विधि की भांति ही एक, दो व तीन वर्णों का प्रयोग ही वाञ्छित है। इस विधि का प्रयोग भी केवल उसी अवस्था व स्थिति मे करना चाहिए जबकि वर्गीकरण पद्धति के अन्य कोई भी सूत्र व धारणाओ का उपयोग न हो सके। जैसे—

अरावली पर्वत	g7A
हिमालय पर्वत	g7H
गंगा नदी	pIG
कृषि मे चावल :—	J381
बसुमति चावल	J381B
सुकानन्दी चावल	J381S
कलजीरी चावल	J381K
यन्त्र विज्ञान में साईकिल——	D5125
एटलस साईकिल	D5125A
रेले साईकिल	D5125R
हिन्द साईकिल	D5125H
हरक्यूलिस साईकिल	D5125H_R

अध्यारोपण-विधि

जब किसी मुख्य वर्ग के एक ही पक्ष मे दो एकलों का परस्पर अध्यारोपण प्रकट करना हो तो इस विधि को काम में लिया जाता है। इस प्रकार की क्रियाओं

मे किसी प्रकार का संबंध नहीं कहा जा सकता है क्योंकि यहां किसी भी प्रकार का या संबंध प्रकट नहीं किया जाता बल्कि एक ही पंक्ति के एकल का गुण-धर्म दूसरे एकल पर प्रकट किया जाता है।

अत. इस विधि के अन्तर्गत एक एकल प्रधान व दूसरा गौण होता है। जो प्रधान एकल होता है वह पहले लिखा जाता है तथा जो गौण एकल होता है वह प्रधान एकल के पश्चात् लिखा जाता है। जैसे हाथ की हड्डियां, यहा हाथ प्रधान है तथा हड्डियां गौण, क्योंकि हड्डियां हाथ पैर नाक मस्तक कहीं भी हो सकती है।

अत प्रधान व गौण एकलो की बीच से छोटी खड़ी रेखा का प्रयोग संयोजक चिन्ह के रूप मे किया जाता है जैसे —

हाथ की हड्डिया	L163–82
आंख के पलक के बाल	L18511–881
रोमन साम्राज्य	I–52
हिन्दू धर्म मे ईश्वर की प्रार्थना	Q2 31–4146
संयुक्त परिवार की अचल संपत्ति मे—विधवा का हक	Z,1154–292

L १८२

स्मृति-सुलभ विधि

द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली मे अंको व वर्णों को प्रयोग मे लिया गया है। प्रत्येक मुख्य वर्ग व पक्षो की अनुसूचियो मे विशेषत अंको का ही प्रयोग हुआ है। प्रयुक्त अंको की संख्या 1 से लेकर 9 तक ही है। इन अंको की बराबर पुनरावृति होती रहती है। अत वर्गीकरण को सहज बुद्धिगम्य बनाने के लिए प्रत्येक अंक को प्राय विशेष गुणो व कार्यों के हेतु ही प्रयोग किया गया है। भविष्य में नवीन वर्गांको के निर्माण करने मे इस प्रकार की सहज बुद्धिगम्य अथवा स्मृति सुलभ विधि हितकर होती है। द्विबिन्दु वर्गीकरण मे इसका प्रयोग व्यवस्थित रूप से हुआ है। जैसे —

अंक 1—हमेशा सर्वश्रेष्ठ, प्रधान, घनत्व तथा विकास क्रम, कालक्रम व स्थानक्रम मे सर्वप्रथम के लिए ही प्रयोग किया गया है।

स्थान पक्ष संसार	1
गणित मे अंक गणित	B1
भौतिक विज्ञान मे सिद्धान्त	C1
दर्शनशास्त्र मे तर्क	R1

शिक्षा, समाज व मनोविज्ञान मे शिशु	S1	पहला समुदाय
इतिहास मे प्रधान	V1	
भाषा पक्ष इन्डो-यूरोपीय	P1	
वैदिक साहित्य मे ईश्वर	Q2.31	

अंक 4—हमेशा बीमारी, बुराई, यातायात, निदान, उष्णता व संयोगीकरण आदि के लिए प्रयोग हुआ है। जैसे जीव-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, प्राणी-विज्ञान, कृषि, भूगर्भ औषध समाज शास्त्र आदि मुख्य विषयो मे प्रायः बिमारी, बुराई, व अपराध के लिए ही प्रयोग हुआ है। यातायात को जहा भी प्रस्तुत किया है इसी अक से किया है। इसी प्रकार अक 9 का प्रयोग प्राय अन्य के सदर्भ मे ही किया गया है।

अत भावी विषयो के वर्गीकरण हेतु स्मृति-सुलभ विधि अधिक सहायक रहती है। किन्तु नवीन वर्गांको की रचना करते समय इस पद्धति की पूर्ण योग्यता के साथ साथ विशेष सावधानी की अधिक आवश्यकता है।

9

विषयांग–सम्बन्ध

आधुनिक युग मे मनुष्यो की अभिरुचियो एव काय कलापो का विकास बडी तीव्र गति से हो रहा है। आज यह आवश्यक नही रहा कि गणितज्ञ केवल गणित अथवा अर्थशास्त्री केवल अर्थशास्त्र के सिद्धान्तो म ही रुचि रखे अपितु विषयों के असीमित भेद एव जटिल सम्बन्धो के कारण किसी भी विषय के विशेषज्ञ को अन्य विषय सम्बन्धी ज्ञान रखना आवश्यक है। जैसे एक अर्थशास्त्री के लिए वैज्ञानिक आविष्कारो, वर्तमान राजनैतिक व सामाजिक परिस्थितियो से परिचित होना परम आवश्यक है। इस प्रकार विषयो के अन्योन्याश्रित होन के कारण अनेक स्वतन्त्र मिश्रित विषयो की रचना होती है। मिश्रित विषय अथवा वर्ग का निर्माण दो अथवा दो से अधिक विषयो व वर्गों मे पारस्परिक सम्बन्धो पर आश्रित होते हैं। वर्गीकरण प्रणाली म इन मिश्रित वर्गों का महत्वपूर्ण स्थान है। डा० रगनाथन ने अपने द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली मे इन समावित सम्बन्धो का स्पष्ट विवेचन किया है तथा इस दिशा म निश्चित सिद्धान्तो का प्रतिपादन भी किया है।

द्विबिन्दु वर्गीकरण मे विषयो व वर्गों के पारस्परिक सम्बन्धो को मुख्यत निम्न लिखित पाच भागो मे विभक्त किया है —

1 सामान्य सम्बन्ध (General Relation)
2 दृष्टि-कोण सम्बन्ध (Bais Relation)
3 तुलनात्मक सम्बन्ध (Comparision Relation)
4 विभेदात्मक सम्बन्ध (Differential Relation)
५ प्रभावात्मक सम्बन्ध (Influential Relation)

सामान्य सम्बन्ध—के अन्तर्गत दो अथवा दो से अधिक विषयो अथवा वर्गो का पारस्परिक साधारण सम्बन्ध प्रकट होता है। जैसे अर्थशास्त्र व समाज शास्त्र का सम्बन्ध, भौतिकी और रसायन शास्त्र का सम्बन्ध"।

दृष्टिकोणात्मक सम्बन्ध—से तात्पर्य किसी एक विषय का विवेचन किसी विशेष दृष्टि व उद्देश्य से किया जावे वहा दृष्टि-कोणात्मक सम्बन्ध होता है जैसे —

'साहित्यिक के लिए भाषाशास्त्रीय अध्ययन"

' चिकित्सक के लिए मनोविज्ञान"

तुलनात्मक सम्बन्ध—जहा दो या दो से अधिक विषयो का तुलनात्मक अध्ययन प्रकट होता हो वहा तुलनात्मक सम्बन्ध होता है । जैसे —

अर्थशास्त्र की राजनीति से तुलना"

' दर्शन व मनोविज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन"

विभेदात्मक सम्बन्ध—जहा दो या दो से अधिक विषयो मे परस्पर भेद अथवा अन्तर प्रकट किया जावे वहा विभेदात्मक सम्बन्ध होता है जैसे —

"इतिहास और भूगोल मे अन्तर"

"भौतिक शास्त्र और रसायन शास्त्र मे अन्तर"

प्रभावात्मक सम्बन्ध—जहा दो या दो से अधिक विषयो मे से एक विषय का दूसरे विषय पर प्रभाव प्रकट होता हो वहा प्रभावात्मक सम्बन्ध होता है जैसे —

' भूगोल का राजनीति पर प्रभाव '

'राजनीति का अर्थशास्त्र पर प्रभाव '

उपरलिखित सभी सम्बन्ध मुख्य वर्गो, विभिन्न पक्षो, अन्तर पक्षो व उनकी पक्तियो के मध्य पाये जाते हैं अत द्विबिन्दु वर्गीकरण म इन्हे निम्न प्रकार के व्यक्त किया गया है—

1 अन्तर-वर्ग विषयाग सम्बन्ध (Phase Relation)

2 अन्तर पक्ष विषयाग सम्बन्ध (Intra fact Relation)

3 अन्तर पक्ति विषयाग सम्बन्ध (Intra-array Relation)

उक्त सम्बन्धो के अतिरिक्त एक पक्ष सम्बन्ध भी होता है । जो एक मुख्य वग के दो अलग पक्षो के मिश्रण से एक नवीन वग की रचना करता है जैसे पृष्ठवशी जन्तुओ की शरीर रचना K9 3

K	जन्तु शास्त्र (मुख्य विषय)
K 9	दृष्टवशी (व्यक्तित्व पक्ष)
K 9 3	शरीर रचना (ऊर्जा पक्ष)

अत व्यक्तित्व पक्ष व ऊर्जा पक्ष के सयोग से इस वग की रचना हुई । किन्तु पक्ष-सम्बन्ध विषयाग सम्बन्ध का विषय नही है इससे यहाँ केवल उक्त तीनो विषयाग सम्बन्धो का ही विवेचन आवश्यक है ।

विषयाग-सम्बन्धो का विवेचन करने के पूर्व यह स्पष्ट समझ लेना है कि यदि एक ग्रन्थ मे दो या दो से अधिक विषयो का अलग अलग विवेचन हो तो उस स्थान

पर किसी भी प्रकार विषयाग सम्बन्ध सिद्ध नही होता है जैसे—"भूगोल व इतिहास का सामान्य परिचय" अथवा "मुद्रा, बैंकिग व राजस्व"। इस दोनो शीर्षको के अन्तर्गत विभिन्न विषयो का अलग अलग विवरण होता है, परस्पर किसी भी प्रकार का सम्बन्ध स्थापित नही होता है। दूसरे शब्दो मे इन विषयो का पुस्तक मे समावेश किसी सम्बन्ध के कारण नही वल्कि ग्रन्थ रचना के कारण है। अत इस स्थिति मे यहा किसी प्रकार का विषयाग सम्बन्ध नही है।

अन्तर-वर्ग विषयांग सम्बन्ध—जब दो या दो से अधिक मुख्य विषयो अथवा मुख्य वर्गों के सयोग से एक स्वतन्त्र मिश्रित वर्ग की रचना हो, वह अन्तर वर्ग विषयाग सम्बन्ध कहलाता है। ये मुख्य वर्ग व्यक्तित्व पक्ष के सहित व स्वतन्त्र भी प्रयोग हो सकते है जैसे .—

"राजनीति व इतिहास का सम्बन्ध" = W + V

"अर्थशास्त्री के लिए सांख्यिकी का प्रयोग" = λ + B28

विषयाग सम्बन्ध प्रकट करने के लिए मूल रूप से रोमन लिपि के छोटे अक्षर **'O'** का प्रयोग होता है। अन्तर वर्ग विषयाग सम्बन्ध के अन्तर्गत ऊपर लिखित पाचो प्रकार के सम्बन्धो को प्रकट करने के लिए द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली मे निम्न प्रकार के छोटे रोमन अक्षरो का प्रयोग किया जाता है।

विषयाग	सम्बन्ध	सयोजक चिन्ह	पूर्ण स चि
अन्तरवर्ग	सामान्य	a	oa
अन्तरवर्ग	दृष्टिकोणात्मक	b	ob
अन्तरवर्ग	तुलनात्मक	c	oc
अन्तरवर्ग	विभेदात्मक	d	od
अन्तरवर्ग	प्रभावात्मक	g	og

उक्त अन्तरवर्ग विषयाग सम्बन्धो को तथा उनके सयोजक चिन्हो का प्रयोग निम्न तालिका द्वारा भी समझा जा सकता है —

मुख्य विषय	वर्ग	सम्बन्ध	सयोजक	वर्गांक
दर्शन तथा मनोविज्ञान का सम्बन्ध	R + S	सामान्य	o + a	= RoaS
अर्थशास्त्री के लिए सांख्यिकी	λ + B28	दृष्टिकोण	o + b	= B28obX
राजनीति व अर्थशास्त्र की तुलना	W + λ	तुलना	o + c	= WocX
भौतिक व रसायन शास्त्र मे अन्तर	C + E	विभेद	o + d	= CodE
भूगोल का इतिहास पर प्रभाव	U + V	प्रभाव	o + g	= VogU

अन्तर-वर्ग विपयाग सम्बन्ध मे वर्गों को क्रमिक स्थान प्राप्त होता है किन्तु प्रभावित विषय को प्रभावक वर्ग से प्रथम स्थान दिया जाता है। उसी प्रकार किसी भी दृष्टि कोण व उद्देश्य से जिस विषय का अध्ययन हो उस मुख्य-वर्ग को ही प्रथम स्थान दिया गया है।

अन्तर-पक्ष विपयाग सम्बन्ध

जब किसी मुख्य वर्ग के अन्तर्गत किसी एक पक्ष विशेष के विभिन्न एकलो मे पारस्परिक सयोग के कारण जो एक मिश्रित वर्ग की रचना होती है वह अन्तर-पक्ष विपयाग सम्बन्ध कहलाता है जैसे "स्कूल व कालेजपुस्तकालयो मे अन्तर' 'वातावरण का जीवो की रचना पर प्रभाव"

प्रथम उदाहरण से मुख्य वर्ग पुस्तकालय के व्यक्तित्व पक्ष के एकलो स्कूल व कालेज का सम्बन्ध है तथा दूसरे मे जीवशास्त्र के उर्जा पक्ष के एकलो का शरीर रचना व वातावरण का सम्बन्ध है।

मुख्य वर्ग के एक पक्ष के विभिन्न एकलो मे जो सम्बन्ध प्रकट हो उसीके अनुसार अन्तर पक्ष विपयाग सम्बन्ध भी होता है तथा उनके सयोजक चिन्ह भी निम्न तालिका के अनुसार होते है —

विपयाग	सम्बन्ध	सयोजक चिन्ह	पूर्ण सयोजक
अन्तर पक्ष	सामान्य	j	oj
अन्तर पक्ष	दृष्टि-कोणात्मक	k	ok
अन्तर पक्ष	तुलनात्मक	m	om
अन्तर पक्ष	विभेदात्मक	n	on
अन्तर पक्ष	प्रभावात्मक	r	or

मूल सम्बन्ध का सयोजक चिन्ह रोमनलिपि का छोटा 'O' सभी सयोजक चिन्हो के पूर्व लगाया जाता है जैसे —

विषय	वर्ग	सम्बन्ध	सयोजक चिन्ह	वर्गांक
पुस्तकालय सगठन व व्यवस्था	2 2 + 2 8	सामान्य	oj	2 2oj8
चिकित्सक के लिए शरीर रचना	G 3 + G 4	दृष्टिकोण	ok	G 4ok3
जैन व बौद्ध धर्म की तुलना	Q3 + Q4	तुलनात्मक	om	Q3om4
शाक्त व बौद्ध धर्म मे अन्तर	Q23 + Q4	विभेदात्मक	on	Q23on4
बौद्ध धर्म पर हिन्दू धर्म का प्रभाव	Q4 + Q2	प्रभावात्मक	or	Q2or4

प्रभावित वर्ग प्रभावक वर्ग से पूर्व स्थान लेता है तथा विवेचन व दृष्टिकोण का वर्ग ही प्रथम स्थान ग्रहण करता है ।

अन्तर-पक्ति विपयांग सम्बन्ध

अन्तर-पक्ति विपयाग सम्बन्ध का विवेचन करने से पूर्व इसके शाब्दिक अर्थ को अच्छी तरह समझ लेना आवश्यक है । ये पक्तिया व विभाग मुख्य वर्ग के विभाग नही होते तथा न ही किसी पक्ष विशेष की पक्ति व विभाग होते है । अत अन्तर-पक्ति का तात्पर्य किसी मुख्य वर्ग म एक पक्ष विशेष के अन्तगत किसी एक एकल की विभिन्न पक्तियो से है । जैसे —"कालेज व विश्वविद्यालय पुस्तकालयो का सबध 233014

पुस्तकालय	मुख्य वग
शैक्षणिक पुस्तकालय	व्यक्तित्व पक्ष एक एकल का एक मात्र विभाग
कालेज	व्यक्तित्व पक्ष उसी एकल का दूसरी पक्ति
विश्वविद्यालय	व्यक्तित्व पक्ष एकल की तृतीय पक्ति ।

यहा पुस्तकालय मुरय वग है, शैक्षणिक पुस्तकालय उसका व्यक्तित्व पक्ष का एकल है तथा इस एकल के कालेज व विश्वविद्यालय विभाग व उप–एकल है । अत मुख्य वर्ग मे एक पक्ष के किसी एकल के उप एकलो व विभागो के सबधो को अन्तर पक्ति सबध कहा जाता है ।

अन्तर–पक्ति विपयाग सम्बन्ध भी पूर्वोक्त सामान्य, दृष्टिकोण तुलनात्मक विभेदात्मक व प्रभावात्मक पाच प्रकार के होते है तथा इन सभी सम्बन्धो के लिए अलग अलग सयोजक चिन्ह हैं जैसे —

विपयाग	सयोजक चिन्ह	पूर्ण सयोजक चिन्ह
सामान्य अन्तर-पक्ति विपयाग सम्बन्ध	t	ot
दृष्टि कोणात्मक अन्तर पक्ति विपयाग सम्बन्ध	u	ou
तुलनात्मक अन्तर पक्ति विपयाग सम्बन्ध	v	ov
विभेदात्मक अन्तर पक्ति विपयाग सम्बन्ध	w	ow
प्रभावात्मक अन्तर पक्ति सम्बन्ध	y	oy

सभी सयोजक चिन्हो के पूर्व रोमन लिपि के छोटे 'o' का प्रयोग आवश्यक है उक्त सभी अन्तर पक्ति विपयाग सम्बन्धो का प्रयोग निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है ।

विषय	वर्ग	सम्बन्ध	संयोजक	वर्गांक
स्कूल व कालेज पुस्त-कालयों का सम्बन्ध	232 + 233	सामान्य	ot	232ot3
ग्रामीणों के लिए शहरी सभ्यता	Y31 1 + Y35 1	दृष्टि कोणात्मक	ou	Y35ou1:1
वर्गीकरण व सूचीकरण की तुलना	2 51 + 2 55	तुलनात्मक	ov	2:51ov5
पुस्तकालय संगठन व व्यवस्था में अन्तर	2 2 + 2 8	विभेदात्मक	ow	2:2ow8
मौसम पर तापमान का प्रभाव	U281 + U284	प्रभावात्मक	oy	U284oy1

पूर्ववत् ही प्रत्येक विषयाग सम्बन्धों में प्रभावित मुख्य वर्ग, पक्ष व पंक्ति प्रभावक के पूर्व आता है तथा किसी भी उद्देश्य व दृष्टि से विषय, पक्ष व पंक्ति का विवेचन करने पर भी मुख्य विषय या वर्ग का स्थान प्रथम ही रहता है। शेष सभी वर्गों का प्रयोग पूर्ववत् होता है।

10

प्रणालियां व विशिष्टाएं

मनुष्य की विचार शक्ति परिस्थितियो, वातावरणो व प्राकृतिक साधनो द्वारा प्रभावित होती है। अत विभिन्न वातावरणो व परिस्थितियो मे विभिन्न विचार-धाराओ का होना स्वाभाविक है। इस प्रकार की विचारधाराए व चिन्तन ही शनै. शनै एक निश्चित पद्धति, प्रणाली व सिद्धान्त का रूप धारण कर लेते हैं। द्विबिन्दु वर्गीकरण मे अनेक विषयो मे विभिन्न प्रणालिया विद्यमान हैं। जैसे अर्थशास्त्र मे समाजवादी–अर्थशास्त्र, साम्यवादी अर्थशास्त्र, सहकारी अर्थशास्त्र, शिक्षाशास्त्र मे मानटेशरी, बालवाडी व वर्धा-शिक्षा प्रणाली, मनोविज्ञान मे, प्रयोगात्मक, व्यवहारात्मक, अन्तर्मुखी पद्धतिया, औषध-विज्ञान में—ऐलोपैथी, आयुर्वेदिक, होम्यापैथी व प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतिया, इसी प्रकार भौतिक विज्ञान मे भी आकर्षण का सिद्धान्त, गति का सिद्धान्त, विद्युदणु सिद्धान्त आदि।

ये सभी पद्धतियाँ, प्रणालिया व सिद्धान्त किसी एक मुख्य विषय पर अपने विभिन्न दृष्टिकोणो के अनुकूल सिद्धान्तो का प्रतिपादन करते है। इस प्रकार के सिद्धान्त, पद्धति व प्रणालिया प्रत्येक वर्गीकरण मे यत्र तत्र विद्यमान रहती है। द्विबिन्दु वर्गीकरण मे इन पद्धतियो व प्रणालियो के सम्बन्ध मे एक निश्चित सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया है। ये प्रणालिया मुख्य वर्ग के समान ही महत्वपूर्ण है तथा इनका विस्तार भी मुख्य वर्ग के समान ही हो सकता है। अत इनकी रचना मुख्य वर्ग के साथ उसके प्रथम व्यक्तित्व के रूप में होती है। इन प्रणालियो व पद्धतियो को व्यक्त करने के लिए उनके उद्भव काल को ही माध्यम माना गया है। अत कालक्रम के सिद्धान्त के अनुसार इन्हे व्यक्त किया जाता है जैसे —

आकर्षण का सिद्धान्त	17वी शताब्दी मे हुआ अत इसका बोधाक	CK
विद्युदणु का सिद्धान्त	1890 ई० की देन है अत इसका बोधाक	CM9
प्रयोगात्मक मनोविज्ञान	19वी शताब्दी की देन है अत इसका बोधाक	SM
समाजवादी अर्थशास्त्र	1820 ई० मे प्रारम्भ हुआ अत इसका बोधाक	XM2
साम्यवादी अर्थशास्त्र	20वी शताब्दी मे हुआ अत इसका बोधाक	XN

इसी प्रकार आयुर्वेद यूनानी, होम्योपैथी, प्राकृतिक औषध प्रणालिया क्रमश प्रथम शताब्दी से पूर्व, 18वी शताब्दी व 19 शताब्दी की देन मानी जाती है। अत मुख्य वर्ग के पश्चात् प्रणाली का उद्भव काल जोडने से प्रणाली का वर्गांक बन जाता है।

प्रत्येक प्रणाली अंक मे मुख्य वर्ग की भाति ही व्यक्तित्व, पदार्थ, ऊर्जा, देश व काल सभी पक्षो का समान रूप से प्रयोग होता है। प्रणाली अंक मे व्यक्तित्व पक्ष व्यक्त करने के लिए उसके सयोजक चिन्ह अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

समाजवादी अर्थशास्त्र मे लोकवित्त	XM2,7
व्यवहारात्मक मनोविज्ञान मे व्यक्तित्व	SN1,7
आयुर्वेद मे हृदय रोग का उपचार	LB,32 4 6
अपेन्डि-साईट का यूनानी इलाज	LD,27219 415 6
साम्यवादी अर्थशास्त्र मे ट्रेड यूनियन	XN 97D

जो पद्धति व प्रणाली जिस प्रदेश म अधिक प्रचलित व लोकप्रिय होती है उस प्रणाली को वहा मुख्य वर्ग मे स्थान प्राप्त होता है जैसे ऐलोपैथी अधिक प्रचलित व लोकप्रिय है अत इसे मुख्य वर्ग मे स्थान दिया गया। यदि किसी प्रदेश मे यूनानी चिकित्सा प्रणाली अधिक लोकप्रिय व प्रचलित हो तो वहा यूनानी चिकित्सा को औषध विज्ञान का स्थान प्राप्त होगा तथा यूनानी प्रणाली का बोधाक LD के स्थान पर केवल L ही प्रयोग होगा।

द्विबिन्दु वर्गीकरण मे इस प्रकार की प्रणालियो के विवरण मुख्य वर्ग की तालिकाओं के साथ अन्त मे दिये गये है।

विशिष्टाए

आधुनिक काल म अनेक विषयो के विभिन्न क्षेत्रो मे विशेष अध्ययन की प्रक्रियाए प्रचलित हैं। इससे प्रत्येक विषय मे विशिष्टीकरण होता जा रहा है। इस विशिष्टीकरण का उपयोग मानव की भलाई मे प्रयोग करना आवश्यक हो गया है। जैसे एक चिकित्सक बालरोग मे विशिष्टता प्राप्त किए हुए है तो वह बालको की चिकित्सा करने मे अधिक उपयोगी रहगा। अत इसी प्रकार औषध विज्ञान म— स्त्री-रोग विशेषज्ञ, प्लास्टिक शल्य विशेषज्ञ उसी प्रकार अर्थशास्त्र म लघु उद्योग, दीर्घ उद्योग, गैर सरकारी साहसिक कार्य तथा खेती विज्ञान म शुष्क खेती व भूमि रहित खेती आदि होते हैं।

इस प्रकार की सभी विशिष्टताओ को द्विबिन्दु वर्गीकरण म प्रणालियो की भाति ही समुचित स्थान प्रदान किया गया है। इसके लिए अक 9 का उपयोग, A स

Z तक के रोमन अक्षर, जोडकर के किया गया है। विशिष्टता किसी भी मुख्य वर्ग मे हो सकती है। अतः इनकी रचना निम्न प्रकार से की जाती है —

शुष्क खेती	J9D
भूमि रहित खेती	J9S
लघु उद्योग	X9B
दीर्घ उद्योग	X9D
सार्वजनिक उपयोगिता	X9V

जिस प्रकार विशिष्टता किसी भी विषय मे प्राप्त की जा सकती है उसी प्रकार वह किसी प्रणाली मे भी प्राप्त हो सकती है, जैसे समाजवादी अर्थ-व्यवस्था मे लघु उद्योग, आयुर्वेद मे स्त्री रोग विशेषज्ञ आदि। इस सबध के वर्गांको की रचना करने के लिए निम्न प्रकार के तथ्यो को ध्यान मे रखना आवश्यक है —

1. विशिष्टाक मुख्य वर्ग के साथ व्यक्तित्व के प्रथम स्तर के रूप मे प्रयोग होता है।

2. विशिष्टाक मुख्यवर्ग के पश्चात् व अन्य सभी पक्षो के पूर्व प्रयोग होता है।

3 विशिष्टाक प्रणाली अक के पश्चात् व सभी पक्षो के पूर्व प्रयोग होता है। जब किसी वर्गांक मे प्रणाली व विशिष्टाक की अभिव्यक्ति करनी हो तो दोनो अको के मध्य मे अल्पविराम का प्रयोग होता है। अर्थात् प्रणाली अक के पश्चात् अल्प-विराम का सयोजक चिन्ह लगा करके विशिष्टता लिखा जाता है। विशिष्टाक के पश्चात् ही यदि आवश्यक हो तो व्यक्तित्व, पदार्थ, ऊर्जा, देश व काल पक्ष अपने सयोजक चिन्हो के साथ प्रयोग होते है जैसे —

लघु उद्योग	X9B
समाजवादी अर्थव्यवस्था मे लघु उद्योग	XM2,9B
समाजवादी अर्थव्यवस्था मे लघु उद्योग की व्यवस्था	MX2,9B 8
आयुर्वेदिक औषध विज्ञान	LB
आयुर्वेद मे स्त्री चिकित्सा	LB,9F
आयुर्वेद मे प्रसूति चिकित्सा	LB,9F 31

प्रणाली की भाति ही सम्पूर्ण विषय सूची विशिष्टता के साथ भी प्रयोग होती है। क्योकि आयुर्वेद मे बाल रोग विशेषज्ञ के लिए औषध विज्ञान के सभी अगिक, निदान उपचार सबधी सूचियो की आवश्यकता होती है।

द्विबिन्दु वर्गीकरण मे इन विशिष्टाओ के लिए अलग से मुख्य वर्गो के साथ अन्त मे तालिका दी हुई है।

11

शास्त्रीय-विधि

ज्ञान जगत में प्रत्येक क्षेत्र म अनेक प्रकार के ग्रन्थो की रचना होती है। इन रचनाओं में से कुछ रचनाए साधारण तथा कुछ उत्तम रचनाएँ होती हैं। उत्तम रचनाओ में से भी कुछ रचनाए ही इस प्रकार की होती हैं जो शाश्वत् श्रेष्ठ रचनाएँ मानी जाती हैं तथा जो किसी देश, काल व भाषा के द्वारा सीमित नही होती है। इस प्रकार की रचनाओ व ग्रन्थो को जो हमेशा अभिनव तथा उत्कृष्ट श्रेणी के होते हैं, शास्त्रीय ग्रन्थो की सज्ञा दी जाती है। ये शास्त्रीय ग्रन्थ अपने आप मे इतने सशक्त होते हैं कि विभिन्न भाषाओ मे उनके अनुवाद व व्याख्याएं होने के साथ-साथ विभिन्न दृष्टियो से अलग अलग आलोचनाएँ, मूल्याकन व पुनर्मूल्याकन भी प्रकाशित होते रहते हैं। इस प्रकार के शास्त्रीय ग्रन्थो की सूचिया, अनुक्रमणिकाएँ तथा सन्दर्भित ग्रन्थ उस मूल ग्रन्थ का क्षेत्र विस्तृत करने मे सहयोग देत हैं। अत शास्त्रीय-ग्रथ किसी विषय विशेष की परिधि तक ही सीमित न रहकर अपना एक अलग वर्ग निर्माण करने मे सक्षम पाये जाते है।

प्रत्येक वर्गीकरण प्रणाली इस प्रकार के ग्रथो विशेषत धार्मिक व पवित्र पुस्तको के लिए अलग वर्गांको का निर्माण करती हैं। आधुनिक काल म विशेषत द्विबिन्दु वर्गीकरण काल मे इस प्रकार के ग्रन्थो की सीमा धार्मिक व साहित्यिक ग्रन्थो तक ही सीमित नहीं है। अपितु इन दोनो मुख्य वर्गों को साथ साथ अन्य विषयो के शास्त्रीय ग्रन्थो के लिए एक अलग शास्त्रीय विधि का उपयोग किया है। डा० रगनाथन महोदय के अनुसार शास्त्रीय ग्रन्थ की परिभाषा स्पष्ट की गई है कि जो ग्रन्थ अपने विषय सामग्री पर अन्य ग्रन्थो व साहित्य की रचना हेतु प्रेरणा प्रदान करने मे सक्षम हो उसे शास्त्रीय ग्रन्थ कहा जा सकता है। अत- [illegible] व्याख्या के आधार पर एक शास्त्रीय ग्रन्थ के अनेक [illegible] व [illegible] दृष्टियो से टीकाए, व्याख्याए, आलोचनाए, मूल्या[illegible] [illegible]याकन [illegible]।

द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली म [illegible] का प्रतिपादन किया गया है। उनमे से कुछ [illegible]

1 इस प्रकार की रचनाओ के तत्वो का स्थायी मूल्य होना चाहिए।

2 इस प्रकार की रचनाएँ रचनाकार के व्यक्तित्व से सतृप्त होनी चाहिए।

3 ये रचनाए सशक्त मननशील होनी चाहिए जो नवीन मत नवीन विचारधारा व नवीन परम्परा की सृष्टि करने मे समथ हो।

उक्त तत्वो के आधार पर तथा पुस्तकालय मे नियमो के अनुसार इस प्रकार के मूलग्रन्थ व उससे सम्बन्धित सभी ग्रथ पुस्तकालया म एक ही स्थान पर रहते हैं जिससे वहा के पाठको को सुविधा व उत्तम सेवा प्राप्त हो सके। इसके लिए द्विबिन्दु मे शास्त्रीय विधि का निर्माण हुआ तथा इस वग विशेष को पक्ष विश्लेषण के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। शास्त्रीय ग्रन्थो की अभिव्यक्ति के लिए रोमन लिपि के छोटे अक्षर x (एक्स) का उपयोग किया है। पद्धति से x बोधाक का उपयोग सामान्य एकलो मे सकलित रचनाओ के लिए भी किया गया है किन्तु उसका प्रयोग व प्रयोग विधान भिन्न है। साहित्य मुख्य वग म x की अभिव्यक्ति लेखक व जन्म-वर्ष के लिए कालक्रम द्वारा रोमन अक्षरो से प्रारम्भ होती है किन्तु शास्त्रीय ग्रन्थो मे अरबी अको द्वारा व्यक्त किया जाता है।

अत शास्त्रीय ग्रन्थो क वर्गाक निर्माण हेतु सूत्र x [व्य], [व्य2], [व्य3], [व्य4] की रचना की गई है।

इस बोधाक x का प्रयोग शास्त्रीय ग्रन्थ के मूलभूत विषय के साथ होता है। इस बोधाक के व्यक्तित्व पक्ष का प्रथम स्तर लेखको को व्यक्त करता है। किन्तु बोधाक x व लेखक के बीच मे व्यक्तित्व पक्ष के सयोजक चिन्ह अल्प विराम का प्रयोग आवश्यक नही है।

किसी भी रचना को शास्त्रीय रचना व्यक्त करने के लिए लेखक के साथ उसकी रचना व्यक्त करना आवश्यक है। सूत्र म व्यक्तित्व का द्वितीय स्तर रचनाका द्योतक है। अत रचनाकार व रचना के बीच मे अल्पविराम का प्रयोग आवश्यक है।

शास्त्रीय ग्रथो का व्यक्त करते समय रचनाकार को अरबी अको द्वारा अगोकृत रूप म प्रकट किया जाता है। शास्त्रीय ग्रथा म अगोकृत क्रम की सीमा 16 लेखका तक ही मानी जाती है। इसके पश्चात वाले उस विषय को अन्य रचनाकारो की अभिव्यक्ति कालक्रम द्वारा ही की जाती है। लेखक के साथ उस रचना को भी अगीकृत क्रम मे ही व्यक्त किया जाता है जो शास्त्रीय ग्रन्थ है जैसे —

R66 वेदान्त

R66x1,1 शंकर उपदेश-सहस्त्री (वेदान्त पर शंकर का पहला शास्त्रीय ग्रंथ)

R66x2,1 मंडनमिश्र ब्रह्मसिद्धि (दूसरे लेखक का शास्त्रीय ग्रंथ)

R66x3,1 सुरेश्वराचार्य नैष्कर्मसिद्धि (तीसरे लेखक का शास्त्रीय ग्रंथ)

R66x4,1 विमुक्तात्मन ईष्टसिद्धि (चौथे लेखक का शास्त्रीय ग्रंथ)

R66x5,1 सर्वज्ञात्मन संक्षेप सारिका (पाचवें लेखक का शास्त्रीय ग्रंथ)

इस प्रकार योजक x के पश्चात् 1, 2, 3, 4, 5, आदि लेखकों के वेदान्त विषय पर विभिन्न ग्रन्थ हैं।

इसी प्रकार एक लेखक के उस विषय पर एक से अधिक ग्रंथ भी शास्त्रीय ग्रंथों की श्रेणी प्राप्त कर सकते हैं। अत उन्हें भी अंगीकृत क्रम अथवा वर्णक्रम के अनुसार व्यक्त किये जा सकते हैं। जैसे —

R66xKoo,1 मधुसूदन सरस्वती अद्वैत रत्नरक्षणी (एक लेखक का पहला शास्त्रीय ग्रन्थ)

R66xKoo,2 मधुसूदन सरस्वती प्रस्थानभेद (उसी लेखक का दूसरा शास्त्रीय ग्रंथ)

R66xKoo,3 मधुसूदन सरस्वती वेदान्त कल्प लतिका (उसी लेखक का तीसरा शास्त्रीय ग्रंथ)

R66xKoo,4 मधुसूदन सरस्वती ईश्वर प्रतिपत्ति प्रकाश (उसी लेखक का चौथा शास्त्रीय ग्रंथ)

इस प्रकार 16 ग्रन्थों के पश्चात् उसी लेखक के ग्रंथों को वर्णक्रम में भी व्यक्त कर सकते है। वर्णक्रम द्वारा व्यक्त करने पर भी अल्पविराम का चिन्ह आवश्यक हैं।

इस वर्ग मे व्यक्तित्व के तृतीय स्तर मे शास्त्रीयग्रंथ की आलोचनाओं को व्यक्त किया गया है। इनकी अभिव्यक्ति भी अंगीकृत क्रम द्वारा ही की जाती है तथा अधिक आलाचनाओं को काल क्रम द्वारा भी प्रकट किया जा सकता है। इसको व्यक्त करने के लिए अल्प विराम का चिन्ह आवश्यक है।

शास्त्रीय वर्ग मे व्यक्तित्व के चतुर्थ स्तर द्वारा उक्त आलोचना व मूल्यांकनों के ऊपर पुनर्मुल्याकनों को भी उसी क्रम से प्रकट किया जाता है। उदाहरण के लिए —

R66,5	ब्रह्मसूत्र
R66,5x1,1	शकर ब्रह्मसूत्र-भाष्य । शास्त्रीय ग्रथ
R66,5x1,1,1	पद्मपाद पक-पादिका । उक्त ग्रन्थ पर पहला आलोचनात्मक ग्रन्थ
R66,5x1,1,1,1	प्रकाशात्मन पक पादिका विवरण ।उक्त आलोचना पर पुन आलोचनात्मक ग्रन्थ
R66,5x1,1,1,1,1	अखडानन्दमुख तत्वदीपन । उक्त पुनर्मूल्याकन पर टिप्पणी ।

इस प्रकार से एक मूल शास्त्रीय ग्रथ के विषय पर अनेक व्याख्याए व आलोचनाएँ व्यक्त की जा सकती है । अत यह शास्त्रीय विधि द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति की महत्वपूर्ण विधि है । इस विधि के कारण ही विभिन्न दृष्टियो से आलोचनाएँ होने पर भी सभी ग्रन्थ मूल विषयक ग्रन्थ के साथ ही व्यक्त किए जाते है ।

12

आव्हान–अंक

प्रत्येक वर्गीकरण प्रणाली का प्रमुख उद्देश्य सग्रहीत अध्ययन सामग्री को अधिक से अधिक उपयोगी बनाना है। जिससे किसी पाठक द्वारा किसी उपलब्ध पुस्तक व अन्य अध्ययन सामग्री की माग करने पर पाठक को शीघ्र ही वह सामग्री उपलब्ध कराई जा सके। पाठक द्वारा किसी पुस्तक की माग करना, जानकारी चाहना अथवा पूछना, वर्गीकरण जगत मे उस पुस्तक व सामग्री का आह्वान करना कहलाता है। विभिन्न वर्गीकरण प्रणालियों के अनुसार अध्ययन सामग्रिया पृथक् पृथक् बोधको द्वारा प्रकट की जाती हैं। अत किसी भी वर्गीकरण प्रणाली मे अन्तर्गत किसी पुस्तक को उसके निश्चित बोधाको द्वारा पुकारना या माग करना वर्गीकरण की भाषा मे उसे आह्वान अक (Call Number) कहा जाता है।

आह्वान अक की सहायता से ही विशाल व लघुकाय पुस्तकालयो के बन्द व उन्मुक्त पुस्तक कक्षो मे से इच्छित पुस्तकें शीघ्र प्राप्त की जा सकती हैं।

डा० रगनाथन महोदय ने अपने द्विविन्दु वर्गीकरण मे इस आह्वान अक को निम्नलिखित तीन विभागो मे विभक्त करके उनकी पृथक् पृथक् विस्तृत व्याख्याए की है—

1 वर्ग अक (Class Number)
2 पुस्तक अक (Book Number)
3 सग्रह अक (Collection Number)

वर्ग अंक

प्रत्येक वर्गीकरण प्रणाली मे ... ह ... से तात्पर्य
उन मुख्य विषयो के बोधाको से है। ... अध्ययन
सामग्री को उनके विषयो की विभिन्... माघ ... एकत्रित
किया जाता है। ग्रथो मे वर्णित ... वर्गीक

कहते है । वर्गांक का साधारण अर्थ उन अंको से है जो किसी पुस्तक अथवा अध्ययन सामग्री के विषय विशेष को, एक निश्चित कृत्रिम भाषा द्वारा, उसी विषय की अन्य पुस्तको मे स्थान प्रदान कराने मे समर्थ हो । एक विषय अथवा उसके किसी उपविषय विशेष का एक ही वर्गांक होता है । अत पुस्तकालयों म एक ही विषय सम्बन्धी अनेक पुस्तकें होने पर भी प्रत्येक पुस्तक को सूक्ष्म रूप से पृथक् पृथक् अंको द्वारा उनके निश्चित स्थान का बोध कराने वाले अंको को वर्गांक कहा जाता है ।

विभिन्न वर्गीकरण प्रणालियों मे मुख्य विषयो अथवा मुख्य वर्गों मे एक रुपता न होकर विभिन्नता पाई जाती है । द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली म मुख्य विषयो का वर्गीकरण तर्क सगत व वैज्ञानिक है । इसमे सभी विषयो को प्राकृतिक, मानविकी तथा सामाजिक क्षेत्रो मे विभक्त किया गया है । इस पद्धति म मुख्य वर्गों की सख्या अन्य पद्धतियो के मुख्य वर्गों से अधिक है तथा नव विकसित व मान्यता प्राप्त विषयो के लिए प्राविधान भी है ।

द्विबिन्दु वर्गीकरण मे वर्गांको की रचना करने हेतु अन्य प्रणालियों की भांति ही अंको, वर्णों तथा सांकेतिक चिन्हों का प्रयोग किया गया है अंको का प्रयोग विशेषत दो प्रकार से किया गया है—

1 सख्यात्मक———1, 2, 3 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11 12, 13, 14, 15, 16,————91, 92, 93———

2 क्रमात्मक ———1, 11, 111, 112, 113, 1131, 1131, 11321

सख्यात्मक अंको के मध्य कोई विस्तार अथवा आवश्यकतानुसार नवीन सख्या की रचना करने का कोई प्राविधान नही होता है । क्रमात्मक अंको मे इस प्रकार का पूर्ण प्राविधान है । पुस्तकालय सवर्द्धनशील सस्था होने के कारण विषयो व विषयांगो मे वृद्धि की पूर्ण सभावनाए रहती हैं । अत वर्गीकरण मे भी सवर्द्धन की पूर्ण व्यवस्था होनी चाहिए क्योंकि प्रतिदिन नवीन विषयो का प्रादुर्भाव व विकसित विषयो का विस्तार होते रहने के कारण उन विषयो के बोधाको की रचना हेतु आवश्यक अंको का प्राविधान होना चाहिए जैसे—

बीजगणित	B2
सांख्यिकी	B28
समाविता	B281
प्रसामान्य समीकरण	B2813
प्रतिचयन	B28:7

अत द्विबिन्दु वर्गीकरण मे सख्यात्मक व क्रमात्मक दोनो ही अंको का प्रयोग हुआ है। विशेषत क्रमात्मक अंको का। इस प्रणाली मे अंको की भाति ही वर्णों का प्रयोग भी निम्न प्रकार से किया गया है—

1 बडे रोमन वर्ण—A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z

2 छोटे रोमन वर्ण a b c d e f g h i j k l m n o p q r s t u v w x y z

3 ग्रीकवर्ण Δ

द्विबिन्दु प्रणाली मे वर्गांको की रचना करने मे अंको व वर्णों के समान सांकेतिक चिन्हो का प्रयोग करके प्रणाली को अधिक सूक्ष्म, गहन व स्पष्ट बनाया गया है। सांकेतिक चिन्हो का महत्व इस पद्धति मे अंको व वर्णों से भी अधिक महत्व पूर्ण है। वर्गांको की रचना सांकेतिक चिन्हो के माध्यम से ही की जाती है। अत द्विबिन्दु वर्गीकरण मे निम्नलिखित चिन्हो का प्रयोग किया गया है—

,	अल्प विराम	व्यक्तित्व पक्ष का द्योतक है।
;	अर्द्ध विराम	पदार्थ पक्ष का द्योतक है।
	द्विबिन्दु	ऊर्जा पक्ष का द्योतक है।
	बिन्दु	स्थान पक्ष का द्योतक है।
'	उद्धरण	काल पक्ष का द्योतक है।
o	शून्य	विषयगत सम्बन्ध का सूचक है।
( )	कोष्ठ	विषय विधि का सूचक है।
—	आडी रेखा	अध्यारोहण तथा अगीकृत का सूचक है।
←—	पराङ मुख बाण	दो निश्चित समय अवधि सूचक है।
—→	अभिमुख बाण	अनिश्चित भविष्य समय सूचक है।

उक्त सभी अंको, वर्णों व सांकेतिक चिन्हो के माध्यम से वर्गांको की रचना होती है।

पुस्तकांक

पुस्तकालय वर्गीकरण का मुख्य उद्देश्य सग्रहीत अध्ययन सामग्री को अलग अलग बोधांको द्वारा उपयोग हेतु प्रस्तुत करना है। एक ही बोधाक के माध्यम से दो या दो से अधिक ग्रथो की अभिव्यक्ति करने वाले वर्गीकरण को उत्तम वर्गीकरण नही कहा जा सकता है। डा० रगनाथन के अनुसार उत्तम पुस्तकालय वर्गीकरण को तीन विभिन्न क्षेत्रो मे विभक्त किया गया है।

1 ज्ञान वर्गीकरण (Knowledge = Class Classification)

2 पुस्तक वर्गीकरण (Book Class f cation)

3 अनुक्रम वर्गीकरण (Collection Classification)

1. ज्ञान वर्गीकरण के अन्तर्गत किसी भी ग्रन्थ मे वर्णित व उपस्थित ज्ञान को उपयुक्त विषयो मे विभक्त करके स्वीकृत कृत्रिम भाषा द्वारा वर्गाको की रचना की जाती है। वर्गांक मे उस ग्रन्थ मे वर्णित विषय सम्बन्धी विश्लेषण रहता है। अनेक ग्रन्थो मे एक ही प्रकार की विषय-सामग्री होने के कारण उन सबको एक ही वर्गाक प्रदान किया जाता है। अनेक अवसरो पर एक ही ग्रन्थ विभिन्न भाषाओ मे विभिन्न समय पर तथा विभिन्न खडो मे प्रकाशित होते रहते हैं। इन प्रकाशनो के अनेक मूल्यांकन भी समय-समय पर प्रकाशित होते रहते हैं। इन सभी प्रकाशनो को ग्रन्थ मे वर्णित विषय सामग्री के आधार पर वर्गांक द्वारा उचित स्थान प्रदान करना अथवा उन प्रकाशनो के अस्तित्वो को अलग अलग प्रकट करना वर्गाक के क्षेत्र मे सम्मिलित नही होता है।

2. पुस्तकांक—इस अभाव व वर्गाक के क्षेत्र को अधिक विस्तृत करने के लिए अनेक विद्वानो ने वर्गीकरण प्रणालियो मे पुस्तकाक की कल्पना करके इस कार्य को सफल बनाने का प्रयास किए है। द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली मे पुस्तकाक का आविष्कार वर्गांक की भांति ही वैज्ञानिक धरातल पर सूक्ष्म व स्पष्ट किया गया है।

डा० रगनाथन के अनुसार किसी ग्रथ के वर्गीकरण मे जहा ज्ञान वर्गीकरण आगे बढने मे असमर्थ हो जाता है वही से पुस्तक वर्गीकरण का प्रारम्भ होता है। पुस्तकाक की आवश्यकता की व्याख्या करते हुए उन्होंने लिखा है कि "ग्रथ वर्गीकरण की पद्धति मे ग्रथ सख्या की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे ज्ञान के समान वर्ग वाले ग्रंथो को व्यक्तित्व प्रदान किया जा सके।' पुस्तकाक का साधारण अर्थ भी, समान वर्गांक वाली पुस्तकों मे प्रत्येक पुस्तक को अलग-अलग स्थान प्रदान कराने वाले बोधाको को पुस्तकाक कहते हैं पुस्तकाक समान वर्गांक वाले सभी ग्रंथो मे किसी ग्रथ विशेष के निश्चित स्थान का निर्देश करने के लिए कृतिम भाषा का द्योतक है। अत. पुस्तकाक द्वारा ही किसी ग्रथ विशेष का उसके समान वर्ग वाले अन्य ग्रंथो मे एक निश्चित स्थान निर्धारित किया जा सकता है।

पुस्तकाक की रचना के लिए वर्गाक रचना की भांति ही अंकों, वर्णों तथा सयोजक चिन्हो का प्रयोग किया जाता है। द्विबिन्दु प्रणाली मे पुस्तक के आठ विशिष्ठ वाह्यागो को स्पष्ट करके पक्ष नियमो की रचना की जाती है। पुस्तकाक की रचना करते समय निम्नलिखित पक्षो का उपयोग किया गया

(L) (F) (Y) (A) , (V)—(S), (C) (G)
(भा) (रू) (व) (स) , (ख)—(पू), (प्र) (ग्रा)

1	भाषा अ क	(Language Number)	(भा)
2	रूप अ क	(Form Number)	(रू)
3	वर्ष अ क	(Year Number)	(व)
4	पुस्तक समावेश अ क	(Accession Part No	(स)
5	खड अ क	(Volume Number)	(ख)
6	पूरक अ क	(Supplement Number)	(पू)
7	प्रति अ क	(Copy Number)	(प्र)
4	आलोचना अ क	(Criticism Number)	(आ)

भाषा अ क—कोई पुस्तक अथवा ग्र थ जिस भाषा मे लिखा गया हो उस भाषा के कृत्रिम बोधाक को भाषा अ क कहते हैं। ये बोधाक द्विबिन्दु वर्गीकरण के अन्तर्गत भाषा एकलो द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं। पुस्तकालयो मे जिस भाषा मे लिखे हुए ग्र थ अधिक सख्या से होते हैं उस भाषा को वहा अ गीकृत भाषा कहते हैं। विभिन्न पुस्तकालयो मे अ गीकृत भाषाए एक भी हो सकती है अथवा अनेक भी। अत अ गीकृत भाषा का बोधाक नही दिया जाता है। केवल आडी रेखा '—' द्वारा ही व्यक्त किया जाता है।

साहित्य व भाषा सबधी ग्र थो मे पुस्तकाक देते समय भाषा अ क देने की आवश्यकता नही होती है क्योकि वर्गांक मे भाषा पक्ष का उल्लेख रहता है। यदि मूल ग्रथ किसी अन्य भाषा मे लिखा हो तो उस भाषा का अ क देना आवश्यक है। आर्ष ग्रथ, जीवनिया अनुवाद व आलोचना सबधी पुस्तको मे पुस्तकाक देना अत्यन्त आवश्यक है। अनेक ग्रथो म एक भाषा का प्रयोग न होकर दो अथवा दो से अधिक भाषाओ का प्रयोग हो तो मूल ग्रथ की भाषा अथवा अधिक सामग्री वाली भाषा का अ क देना अधिक उपयुक्त है जैसे —

तर्क शास्त्र का परिचय मूल लेखक इरविंग एम० कोपो प्रकाशन, 1972
R 1 152 L 2

महाभारत लेखक राजगोपालाचार्य अ ग्रेजी प्रकाशन—1954
O 15,1A2 111J4

कालीदास कृत मेघदूत अनुवादक सुधाकर मिश्र प्रकाशन—1972
O 15,2 D 44,5 152L2

रूप-अंक—ग्रंथ मे विषय सामग्री जिस रूप मे प्रस्तुत की गई हो जैसे चित्रावली, रेखाचित्र, मापण तालिका आदि रूपों मे हो तो उनके अनुसार ही अंक दिया जाता है। इससे पुस्तक की विषय सामग्री को प्रकट करने मे सहायता मिलती है जैसे —

द्विबिन्दु वर्गीकरण	डा० रगनाथन 1960	2 51N3 qKO
महात्मा गाधी चित्रावली	प्रकाशन विभाग 1965	zG fK5

साहित्य के वर्गांक मे रूप पक्ष का प्रयोग व्यक्तित्व पक्ष के रूप मे हो जाता है अत पुस्तकांक मे पुनरावृत्ति की आवश्यकता नही होती है। अपवाद स्वरूप साहित्यिक ग्रन्थ भी कभी-कभी मूल रूप से अन्य रूपो म प्रकाशित होते रहते हैं। अत उस स्थिति मे रूप अंक का प्रयोग आवश्यक है। रूप अंक की रचना करने के लिए तालिका खड के पुस्तांक अध्याय की सहायता ली जाती है।

वर्ष अंक—जो पुस्तक जिस वर्ष मे प्रकाशित होती है उस ग्रन्थ का प्रकाशन वर्ष ही वर्ष अंक कहलाता है। वर्गांक को कालपक्ष की तालिका वर्ष अंक मे प्रयोग की जा सकती है। विशेषता उन पुस्तकालयो मे जहा हस्तलिखित पाडुलिपिया अधिक हो, पुस्तकांक मे वर्ष अंक की रचना के लिए द्विबिन्दु मे निम्नलिखित तालिका का ही प्रयोग किया जाता है।

1880	से पूर्व			A
1880	से	1889	तक	B
1890	से	1899	तक	C
1900	से	1909	तक	D
1910	से	1919	तक	E
1920	से	1929	तक	F
1930	से	1939	तक	G
1940	से	1949	तक	H
1950	से	1959	तक	J
1960	से	1969	तक	K
1970	से	1979	तक	L
1980	से	1989	तक	M
1990	से	1999	तक	N
2000	से	2009	तक	P

2010	से	2019	तक	Q
2020	से	2029	तक	R
—	—	—	—	—
2100	से	2109	तक	ZA
2110	से	2119	तक	ZB
2120	से	2129	तक	ZC

इस तालिका द्वारा पुस्तकांक का प्रयोग करने से एक अंक की बचत होती है जैसे 1977 के लिए वर्गांक की तालिका से वर्ष अंक N 77 होता है जबकि ऊपर लिखित तालिका से L 7 ही बनता है।

सामयिक प्रकाशनों के सन्दर्भ में उन प्रकाशनों का प्रकाशित वर्ष ही वर्षांक होता है। यदि एक प्रकाशन के अन्य खण्डों व परिशिष्टों का प्रकाशन दो या दो से अधिक वर्षों में समाप्त होता है तो प्रथम खंड का प्रकाशन वर्ष ही अन्य खंडों का प्रकाशन वर्ष होता है। कभी कभी प्रथम खंड का प्रकाशन अन्य खंडों के पश्चात् भी होता है उस स्थिति में प्रथम प्रकाशित खंड का प्रकाशन वर्ष ही वर्ष अंक माना जाता है। चाहे वह खंड कोई भी हो। यदि किसी पुस्तक के समय समय पर नवीन संस्करण प्रकाशित होते हो तो प्रत्येक प्रकाशन वर्ष को भी प्रकट करना आवश्यक होता है। अतः प्रथम प्रकाशन वर्ष अंक के साथ ही अर्द्ध विराम ' , ' संयोजक चिन्ह का प्रयोग करके नवीन संस्करण का प्रकाशन वर्ष प्रकट किया जा सकता है। इससे उस पुस्तक के सभी संस्करण एक ही स्थान पर उपलब्ध हो सकते हैं अन्यथा सभी संस्करण इतस्ततः हो जावेंगे। जैसे :—

अर्थशास्त्र के सिद्धान्त का प्रथम प्रकाशन 1965 होने से इसका वर्ष अंक K5 हुआ अतः यदि इसी पुस्तक के अन्य संस्करण 1970 1972 व 1977 में हुए तो वर्ष अंक भी क्रम L0, L2, L7 हुए जो मूल ग्रन्थ से काफी दूर रखे जावेंगे।

अतः उक्त नियम के अनुसार सभी अंक इस प्रकार होंगे—K5 K5,L0 K5,L2 K5,L7 इससे पुस्तक के सभी संस्करण क्रमशः प्राप्त हो सकते हैं।

पुस्तक समावेश अंक— जब कभी एक वर्गांक के अन्तर्गत एक ही भाषा में तथा एक ही वर्ष में एक से अधिक ग्रन्थों का प्रकाशन होता है उस स्थिति में उन प्रकाशनों को पृथक-पृथक स्थान प्रदान करना असम्भव हो जाता है। अतः इस असुविधा के लिए एक के पश्चात् जो प्रकाशन प्राप्त होते हैं उन्हें पुस्तक समावेश के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। पुस्तक समावेश अंक सन्ध्यात्मक रूप से होता है तथा वर्ष अंक के पश्चात् बिना किसी संयोजक चिन्ह के प्रयोग किये जाते हैं। उदाहरणार्थ—

1. राजनीति शास्त्र के सिद्धान्त—राजेन्द्र वर्मा प्रकाशन 1975 W 152L5

2. राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धात—ले इकवाल नारायण 1975" W 152L5

अतः पुस्तकाक समान होने के कारण जो भ्राति उत्पन्न होती है उसके लिए दूसरी पुस्तक का पुस्तकाक 152L51 हो सकता है।

अतः इसी वर्गांक की 1975 मे प्रकाशित अन्य पुस्तको मे पुस्तकाको मे से पुस्तकाक इस प्रकार होगा—उसी वर्गाको मे 1975 की दूसरी पुस्तक का 152L51 तथा—

तीसरी पुस्तक का पुस्तकाक 152L52 होगा।

खंड अंक—पुस्तको का विषय विस्तृत होने के कारण उसे अनेक भागो मे विभक्त करके प्रकाशित किया जाता हैं। इन सभी पुस्तको को एक ही स्थान पर साथ साथ रखने की व्यवस्था सुविधाजनक होती है। यह व्यवस्था जब ही समव है जब कि उन सबका वर्गांक एक हो।

इन पुस्तको को अधिक व्यवस्थित रखने के लिए आवश्यक है कि इन प्रकाशनो का प्रकाशन किसी क्रम व व्यवस्थानुसार हो। प्रकाशित खडो को सख्यात्मक क्रम में रखा जा सकता है। किन्तु खण्ड रचना के पूर्व कतिपय निम्नलिखित तथ्यो को ध्यान मे रखना आवश्यक हैं :—

1. पुस्तक विषय अनेक खण्डो मे होने पर भी उन सबकी अनुक्रमाणिका एक ही हो।
2. प्रत्येक खड की पृष्ठ सख्या क्रमानुसार हो।
3. विषय सामग्री खडो मे इस प्रकार विभक्त हो कि उन्हे एक अलग पुस्तक *का स्थान नही दिया जा सके।*

इस अक का प्रयोग वर्ग अक तथा पुस्तक समावेश अ क के पश्चात् सयोजक चिन्ह् बिन्दु ' . ' लगा करके व्यक्त किया जाता है जैसे—

वृहद् अंग्रेजी हिन्दी कोष भाग 1 प्रकाशन वर्ष		1966	152K9.1
" " "	2 "	1972	152K9.2

बाल्मिकी रामायण अनुवादक हरिप्रसाद शास्त्री खड 2 प्रकाशन वर्ष 1976 152L6.2

पूरक अंक—अनेक अवसरो पर किसी ग्रंथ अथवा उसके किसी खंड के प्रकाशित हो जाने पर उसका पूरक या परिशिष्ट प्रकाशित करना आवश्यक हो जाता हैं। उस पूरक प्रकाशन को उसके मूल ग्रंथ मे जोडना भी सभव नही होता है। कभी कभी तो परिशिष्ट अंक का प्रकाशन मूल ग्रन्थ से भी वृहत हो जाता है। उन परिस्थितियो म परिशिष्ट को मूल प्रकाशन के साथ रखना ही आवश्यक है अत पूरक अथवा परिशिष्ट प्रकाशन को भी वही वर्गांक दिया जाता है जो मूल ग्रन्थ का हो तथा वर्गांक व खंड के पश्चात् सयोजक चिन्ह सीधी रेखा —— का प्रयोग करके सख्यात्मक अंको द्वारा पूरक अंक की रचना की जाती है। उदाहरणार्थ एक पुस्तक का प्रकाशन 1960 मे हुआ अत उसका वर्ष अंक K0 होना है। इसी प्रकार पुस्तक का कोई परिशिष्ट 1975 मे प्रकाशित हुआ तो इसे L5 वर्षांक देना उचित नही बल्कि मूल ग्रन्थ के वर्षांक K0 के साथ पूरक अंक K0–1 देना उपयुक्त होता है।

प्रति अंक—अनेक ग्रन्थालयो मे किसी पुस्तक विशेष की एक से अधिक प्रतिया भी रखी जाती है। अत इन अधिक प्रतियो की सख्या अभिव्यक्त करने वाले बोधाक को प्रति अंक कहते हैं। प्रति अंक को प्रदर्शित करने के लिए सयोजक चिन्ह अर्द्धविराम , का प्रयोग किया जाता है। अत वर्गांक, खण्डाक अथवा उसके पूरक अंको के पश्चात् सयोजक चिन्ह द्वारा सख्यात्मक रूप से प्रति अंक का प्रयोग होता है। पुस्तक की प्रथम प्रति के लिए इस अंक की आवश्यकता नहीं होती है किन्तु एक से अधिक प्रतियो होने पर ही प्रति अंक को व्यक्त किया जाता है जैसे —

पुस्तक की दूसरी प्रति के लिए	K5,1
पुस्तक की तीसरी प्रति के लिए	K5,2
पुस्तक की चौथी प्रति के लिए	K5,3
पुस्तक की पाचवी प्रति के लिए	K5,4

आलोचना अंक—साहित्य सम्बन्धी पुस्तको की आलोचना के लिए वर्गांक मे व्यवस्था है। शास्त्रीय ग्रन्थो के लिए भी अलग व्यवस्था की गई है। किन्तु किसी अन्य ग्रन्थ, जो साहित्य विषय के क्षेत्र मे नही आता तथा शास्त्रीय ग्रन्थ भी नही है, का आलोचना व मूल्याकन होता है तो उसके लिए द्विबिन्दु वर्गीकरण म पुस्ताक अंक के अन्तर्गत पूर्ण व्यवस्था है। पुस्तकाक मे आलोचना हेतु द्विबिन्दु के साथ छोट रोमन अक्षर 'g' का प्रयोग कहा गया है। इसके द्वारा प्रत्येक पुस्तक की आलोचना सबधी तत्व को प्रकट करने की क्षमता रहती हैं। आलोचना किसी पुस्तक, उसके खड, पूरक आदि की हो सकती है अत 'g' का चिन्ह लगा करके पुस्तकाक मे कही भी प्रयोग किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त विभिन्न स्थानो पर संग्रहीत पुस्तको के लिए भी संग्रहांक की रचना की जाती है। पुस्तक के प्राप्तांक के ऊपर काष्ठो मे उन स्थानो व विभागो को निम्न प्रकार से प्रकट किया जाता है जैसे :—

पाठ्य पुस्तकें	(पा० पु०)	(TB)
सदर्भ पुस्तक	(स० पु०)	(RB)
मनोविज्ञान विभाग	(एम० वी०)	(SD)
इतिहास विभाग	(वी० वी०)	(VD)
रसायन विभाग	(ई० वी०)	(ED)

द्विबिन्दु वर्गीकरण मे उक्त तीनो अंक ही अपने अलग अलग अस्तित्व रखने के कारण महत्वपूर्ण माने गये हैं। अतः इनका उल्लेख तथा उसका काम भी निश्चित कर दिया गया है जैसे सर्वप्रथम वर्ग अंक प्रकट किया जाता है, द्वितीय पुस्तक अंक तथा तृतीय संग्रह अंक को महत्व प्रदान किया है।

इन सभी अंको को प्रकट करने के लिए द्विबिन्दु वर्गीकरण में स्पष्ट उल्लेख है कि ये अंक दो प्रकार से प्रकट किये जा सकते हैं। पहले प्रकार से एक सीधी रेखा मे लिखा जा सकता है तथा प्रत्येक अंक मे कुछ जगह रिक्त छोड़ दी जाती हैं जैसे—B43 F6

दूसरे प्रकार से पुस्तक के बाहर तथा अन्दर एक अंक दूसरे अंक के नीचे लिखा जाता है जैसे—

B 43
F7

संग्रह अंक पुस्तक अंक का ही पूरक अंक है अतः पुस्तक अंक के साथ अथवा नीचे लिखा जाना चाहिए किन्तु व्यवहारिक रूप से अनावश्यक भ्रम उत्पन्न न हो अतः इसे सुविधानुसार वर्गांक के निकट भी प्रकट किया जाता है।

B 43 (RB)
F6

13
z सामान्य-मुख्य-वर्ग

सामान्य मुख्य वर्ग से तात्पर्य उस मुख्य वर्ग से होता हैं जिसमे अनेक विषयो से सबधित अध्ययन सामग्री हो तथा वह समग्र अध्ययन सामग्री किसी एक मुख्य वर्ग के क्षेत्र के अन्तर्गत नही आती हो। इस प्रकार के सामान्य मुख्य वर्ग द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली मे महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। तथा इनकी अभिव्यक्ति छोटे रोमन अक्षर के द्वारा की गई है। जैसे—प्राच्यविद्या, भारतीय वाडमय, पाश्चात्य विद्या, गाधी-साहित्य, विवेकानन्द-साहित्य, अरविन्द-साहित्य, इस्लामी विद्या, बौद्ध विद्या, वैष्णवी वाडमय आदि। ये सभी विद्याएँ व वाडमय अनेकानेक विषयो का सम्मिश्रण होते हैं जैसे गाधी साहित्य के अन्तर्गत महात्मा गाधी के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक व दार्शनिक विचारो का सामूहिक सकलन है। भारतीय वाडमय मे विभिन्न विषयो की भारतीय दृष्टि से अध्ययन सामग्री उपलब्ध है जो किसी एक मुख्य वर्ग मे यथार्थ रूप से नही रखी जा सकती है। अत. इस प्रकार के विकास शील वर्ग को भलिभाति समझने के लिए निम्न लिखित विधियो का आश्रय लेना पडता है—

1 भौगोलिक विधि
2 वर्णक्रम विधि
3 विषय विधि

भौगोलिक विधि—इस विधि के माध्यम से सामान्य मुख्य वर्ग को भौगोलिक आधार पर प्रकट किया जाता है जैसे भारतीय विद्या से तात्पर्य भारत से सम्बन्धित, पाश्चात्य विद्या से पश्चिमी देशो से सम्बन्धित, अमेरिकी विद्या से अमेरिका से सबन्धित विद्याओ से माना गया है। इस प्रकार सामान्य मुख्यवर्ग को सूचकांक z के साथ अभिष्ट देश के भौगोलिक एकल को बिना किसी सयोजक चिन्ह् के जोडकर के वर्गांक की रचना की जाती है। जैस —

z44 भारतीय विद्या
z 5 पाश्चात्य विद्या
z51 ग्रीक विद्या
z73 अमेरिकी विद्या

वर्णक्रम विधि—इस विधि द्वारा भी सामान्य मुख्य वर्गांको की रचना होती है जैसे—गाधी-साहित्य, विवेकानन्द-साहित्य, अरविन्द-साहित्य, नेहरू साहित्य, इस विधि का प्रयोग केवल अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महापुरुषो के लिए ही किया

है। जिनके साहित्य मे ज्ञान की विविध शाखाओ का सर्वाधिकार वर्णन हो। इस प्रकार के साहित्यो का एक अलग सामान्य वर्ग बनता जा रहा है। अत इन वाङ्मयो को विशिष्ट स्थान प्रदान करने हेतु सामान्य मुख्य वर्ग z के साथ सबंधित पुरुषो के प्रथम अक्षर लगा करके वर्गांको की रचना की जाती है। जैसे—

zG	गाधी साहित्य
zV	विवेकानन्द साहित्य
zA	अरविन्द साहित्य
zN	नेहरू साहित्य

3. विषय विधि—इस विधि के माध्यम से उन सामान्य मुख्य वर्गों की अभिव्यक्ति होती है। जो किसी यथार्थ मुख्य वर्ग के अन्तर्गत नही आते किन्तु उनका विश्लेषण उन यथार्थ मुख्य वर्गों की सहायता से ही किया जाता है जैसे–ईसाई विद्या, इस्लामी विद्या, वैष्णवी विद्या आदि। इस साहित्य मे उक्त यथार्थ वर्ग से सम्बन्धित रहन-सहन, आचार-विचार, नियम, विधि आदि समस्त विषयो की अध्ययन सामग्री का समावेश रहता है। इसी प्रकार के सामान्य विषयो का यथार्थ मुख्य वर्ग व उसके विभागो द्वारा प्रकट किया जाता है। यथार्थ विषय के बोधाको को कोष्ठो की सहायता से अभिव्यक्त किया जाता है जैसे —

z (Q22)	वैष्णवी विद्या
z (Q 6)	ईसाई विद्या
z (Q 7)	इस्लामी विद्या
z (Q42)	महायान विद्या

जब कभी सामान्य मुख्य वर्ग की अभिव्यक्ति पूर्ववर्ती सामान्य एकलो के साथ की जाती है उस समय पूर्ववर्ती सामान्य एकलो के पूर्व z की आवश्यकता नही होती है। क्योकि पूर्ववर्ती सामान्य एकल स्वय मे ही सामान्य होते हैं जैसे—ग्रथसूची, विश्वकोष पत्रिका, वार्षिकी आदि।

जैसे —

ब्रिटेनिका विश्वकोष	k56,L68
दिनमान	m44,N
स्टेट्समेन वार्षिकी	n56,M
भारत वार्षिकी	r44,N54

इस प्रकार उक्त सामान्य ग्रन्थो के वर्गांको के पूर्व z बोधाक का प्रयोग आवश्यक नहीं है।

2. पुस्तकालय विज्ञान

पुस्तकालय विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकों का वर्गांक बनाने के लिए सूत्र 2[व्य]; [प] : [ऊ] [2व्य] का प्रयोग किया जाता है।

इस विज्ञान में व्यक्तित्व पक्ष पुस्तकालय के परम्परागत विभागों का द्योतक है जैसे:—

211	विश्व पुस्तकालय
213	राष्ट्रीय पुस्तकालय
215	राज्य पुस्तकालय
221	जिला स्तरीय पुस्तकालय
23	शैक्षणिक पुस्तकालय
24	व्यवसायिक पुस्तकालय
24(Q)	धार्मिक पुस्तकालय
24(X81)	बीमा पुस्तकालय
261	बाल पुस्तकालय
263	जेल पुस्तकालय
297	निजी पुस्तकालय

पुस्तकालयों में सामान्य ग्रन्थ-सूचियां, पाण्डुलिपियां पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएं, पुस्तिकाएं आदि अनेक वस्तुएं रहती हैं। अतः इनके लिए सामान्य ग्रंथ-सूचियों की तालिका ही काम में ली जाती है। साथ ही इन्हें अर्द्धविराम के ';' संयोजक चिन्ह से व्यक्त किया जाता है जैसे.—

213;12	राष्ट्रीय पुस्तकालय में पांडुलिपियां
233;46	कालेज पुस्तकालय में पत्र-पत्रिकाएँ
234;47	विश्वविद्यालय में सन्दर्भ ग्रन्थ

पुस्तकालय विज्ञान में उर्जा पक्ष के माध्यम से पुस्तकालय की क्रियाकलापों तथा समस्याओं को ':' द्विबिन्दु के संयोजक चिन्ह द्वारा प्रकट किया जाता है। जैसे.—

2 1 पुस्तक चयन प्रक्रिया
2 2 पुस्तकालय संगठन
2 51 पुस्तकालय वर्गीकरण प्रक्रिया
2 52 पुस्तकालय सूचीकरण
2 6 पुस्तकालय मे आदान-प्रदान
2 7 पुस्तकालय मे सन्दर्भ सेवा
2 8 पुस्तकालय व्यवस्था

इस प्रक्रिया मे यदि किसी विशिष्ट प्रणाली को व्यक्त करना हो तो उसके उद्भव काल को काल-क्रम द्वारा प्रकट कर सकते हैं जैसे—2 51 पुस्तकालय वर्गीकरण प्रणालियो मे दशमलव, विषय, विस्तारशील, काग्रेस द्विविन्दु वर्गीकरण आदि। सूचीकरण मे भी कटर प्रणाली, आग्लो-अमेरिकन कोड तथा वर्गीकृत सूचीकरण कोड आदि। आदान प्रदान प्रणाली मे ब्राउन प्रणाली न्यूयार्क प्रणाली।

दशमलव वर्गीकरण प्रणाली	2 51M76
विस्तारशील वर्गीकरण प्रणाली	2 51M91
काग्रेस वर्गीकरण प्रणाली	2 51N04
द्विविन्दु वर्गीकरण प्रणाली	2 51N33

इसी प्रकार से सूचीकरण प्रणालियो मे भी कटर प्रणाली, आग्लो अमेरिकन प्रणाली आदि तथा आदान प्रदान प्रणालियो भी इसी प्रकार व्यक्त की जा सकती है। स्थान व काल पक्ष आवश्यकतानुसार प्रयोग किए जा सकते हैं।

B गणित विज्ञान

गणित-विज्ञान सम्बन्धी साहित्य के वर्गांकों की रचना किसी विशेषताओं की श्रृंखला मे आधार पर आश्रित नही है। अत सर्वप्रथम गणित-विज्ञान को प्रचलित व मान्य मुख्य भागो मे ही विभाजित किया गया है। जैसे —

B1 अकगणित	B5 त्रिकोणमिति
B2 बीज गणित	B6 रेखागणित
B3 विश्लेषण	B7 यत्रिक गणित
B4 अन्य प्रक्रिया कलन	B8 भौतिकी गणित
	B9 ज्योतिष गणित

गणित विज्ञान के उक्त प्रचलित भागो मे से अनेक भाग पूर्णत पुन प्रचलित मान्यताओ के आधार पर ही विभक्त किये गये है जैसे —

B4 अन्य कलन	B5 त्रिकोणमिति
B41 परिमित अन्तर	B52 समतल त्रिकोणमिति
B42 विचरण	B53 वृत त्रिकोणमिति
B43 फलनात्मक विश्लेषण	B8 भौतिकी गणित
B44 रेखाचित्रिय विश्लेषण	B83 विभवफलन आकर्षण
	B85 लहर फलन

अनेक प्रचलित भाग कुछ अशो मे अपने प्रचलित विभागो मे विभक्त है तथा उन भागो मे से कुछ विशेषताओ की श्रृंखलाओ के कारण सूत्रों द्वारा व्यक्त किए जाते हैं। जैसे—B1 अकगणित के B13 सख्या का सिद्धान्त मे सूत्र B13 [व्य], [व्य2] [ऊ] [2व्य] द्वारा वर्गाको की रचना होती है। इसमे व्यक्तित्व पक्ष का प्रथम स्तर सख्याओ की प्रकृति, द्वितीय स्तर विभिन्न सिद्धान्तो का प्रतिपादन करता है। जैसे—

B1321,2 उच्च सयुक्त सख्या का विभाजन

B13,3K सख्याओ का पैल समीकरण

उर्जा पक्ष के अन्तर्गत क्रिया व प्रणाली को व्यक्त किया गया है जैसे—

B131:2 प्रारम्भिक सख्याओ की बीज गणितीय प्रणाली

इस प्रकार ही विभिन्न भागो मे कुछ विभाग प्रचलित रूढीगत आधार पर विभक्त है तथा उन विभागो में से कुछ सूत्रो द्वारा अभिव्यक्त किये गये हैं जैसे:—

B2 बीज गणित मे B23 समीकरण के सिद्धान्त को सूत्र B23[व्य] [ऊ]। B25 उच्च बीज-गणित को सूत्र B25[व्य][व्य2] [ऊ][2व्य] द्वारा व्यक्त किया गया है। समीकरण के सिद्धान्त मे व्यक्तित्वपक्ष द्वारा विभिन्न समीकरणो को तथा उच्च बीज गणित मे व्यक्तित्व पक्ष द्वारा उनके रूप व मात्राओ को व्यक्त किया गया है। ऊर्जा पक्ष मे क्रियाएँ तथा रूपान्तरो को व्यक्त किया गया है।

B3 विश्लेषण मे अनेक प्रचलित विभागो को सूत्रो द्वारा विश्लेषण किया गया है जैसे:—

B33 अवकलन व समाकलन समीकरण को सूत्र B33[व्य], [व्य2], [व्य3] :[ऊ] [2व्य]

B37 वास्तविक चर को सूत्र B37[व्य]:[ऊ][2व्य] तथा

B38 मिश्रितचर को सूत्र B38[व्य]:[ऊ][2व्य] द्वारा व्यक्त किया है।

B33 मे व्यक्तित्व पक्ष का प्रथम स्तर समीकरण को व्यक्त करता है। जैसे.—

B331 साधारण समीकरण; B334 आंशिक समीकरण।

B33 मे व्यक्तित्व पक्ष का द्वितीय स्तर समीकरण की मात्रा को व्यक्त करता है जैसे:—

B331,1 रेखीय साधारण समीकरण;

B32,3 युगपत् समीकरण मे घनत्व

B33 मे व्यक्तित्व पक्ष का तृतीय स्तर उनके क्रम को व्यक्त करता है जैसे—

B331,1,1 रेखीय समीकरण का प्रथम क्रम।

B334,2,4 द्विघाती आंशिक समीकरण का चतुर्थ क्रम।

उर्जा पक्ष के अन्तर्गत क्रियाओ व समस्याओ को सम्मिलित किया गया है। जिसकी अभिव्यक्ति द्विविन्दु सयोजक चिन्ह द्वारा की गई है।

B6 रेखा गणित के वर्गांको की रचना हेतु सूत्र B6[व्य]:[ऊ][2व्य] द्वारा की जाती हैं। व्यक्तित्व पक्ष उसके प्रकारो का द्योतक है जैसे:—

B61 रेखीय गणित
B62 समतल रेखा गणित
B63 त्रिविमितीय रेखा गणित
B64 चतुर्विमितीय रेखा गणित

ऊर्जा पक्ष क्रिया व समस्याओं का सूचक है जैसे:—

B62:3 समतल रेखा का अवकलन
B6 : 4 रेखा गणित मे प्रयोगात्मक गणन

इसी प्रकार B7 यन्त्रिकी-गणित में भी व्यक्तित्व पक्ष द्वारा द्रव्य की अभिव्यक्ति की गई है जैसे:—

B71 ठोस द्रव्य यान्त्रिकी
B713 दृढ द्रव्य यांन्त्रिकी
B75 तरल द्रव्य यान्त्रिकी

तथा ऊर्जा पक्ष द्वारा क्रिया व समस्याओं को प्रकट किया है। जैसे—

B713:112 दृढ पदार्थ मे घूर्णता
B75:3 तरल पदार्थ मे गति

B9 ज्योतिष गणित मे भी सूत्र B9[व्य]·[ऊ][2व्य] द्वारा वर्गांको की रचना की गई है। ज्योतिष गणित मे व्यक्तित्व पक्ष ज्योतिष के अगो का द्योतक है जैसे:—

B91 पृथ्वी	B95 उल्का व धूमकेतु
B92 चन्द्रमा	B96 तारे
B94 ग्रह	B97 ग्रहीय प्रणाली

ये सभी गणनात्मक रूप से व्यक्त किये गये हैं इन भागो के भी विभाग किए जा सकते हैं। जैसे:—B94 ग्रह

B941 बुध ग्रह	B944 शुक्र ग्रह
B942 शुक्र ग्रह	B945 वृहस्पति ग्रह
B943 मगल ग्रह	B946 शनि ग्रह
	B947 वरुण
	B948 नेप्चून

ज्योतिष गणित मे ऊर्जा पक्ष के अन्तर्गत ज्योतिष सम्बन्धी क्रिया कलापो व समस्याओ को व्यक्त किया गया है जैसे:—

B9:1	काल विज्ञान	B92:57	पूर्ण चन्द्र ग्रहण
B9:113	सौर वर्ष	B942:611	शुक्र ग्रह की गति
B92:72	चन्द्र कक्ष	B946:652	शनिग्रह मे चमक

C भौतिक विज्ञान

भौतिक शास्त्र ऊर्जा विषयक विज्ञान है। जिसमे ऊर्जा के रूपान्तरण तथा उसके द्रव्य सम्बन्धो की विवेचना की जाती है। इसमे प्राकृत जगत और उसके भीतरी क्रियाओ का अध्ययन किया जाता है।

भौतिक-शास्त्र मे विभागो का विभाजन किन्ही विशेषताओ की शृंखला के आधार पर नही किया गया है अपितु प्रचलित आधारा पर ही किया गया है। भौतिक शास्त्र को सर्व प्रथम आठ भागो म व्यक्त किया गया है जैसे —

C1	भौतिक सिद्धान्त	C5	प्रकाश विकिरण
C2	द्रव्य गुणधर्म	C6	विद्युत
C3	ध्वनि विज्ञान	C7	चुम्बकत्व
C4	उष्णता	C8	ब्रह्माण्ड

उक्त विभागो मे से अधिकाश विभाग अपनी अलग अलग विशेषताओ की शृंखलाओ के आधार पर पुन विभक्त किये जा सकते हैं। इन विभागो के विभाजन के अलग अलग सूत्र है। जैसे —

द्रव्य के गुणधर्म के लिए	C2[व्य],[व्य2]
ध्वनि विज्ञान के लिए	C3[व्य] [ऊ][2व्य]
उष्णता के लिए	C4[ऊ][2व्य]
प्रकाश विकिरण के लिए	C5[व्य] [ऊ][2व्य]
विद्युत के लिए	C6[व्य] [ऊ][2व्य]
चुम्बकत्व के लिए	C7[व्य] [ऊ]

इन सूत्रो के आधार पर व्यक्तित्व पक्ष द्वारा विभिन्न विभागो के लिए अलग अलग अर्थो मे अभिव्यक्ति है जैसे द्रव्य के गुणधर्म तथा उष्णता मे व्यक्तित्व पक्ष अवस्था का द्योतक है। उसी प्रकार ध्वनि तथा प्रकाश विकिरण मे तरगो की लम्बाई को अभिव्यक्ति करता है। विद्युत व चुम्बकत्व मे व्यक्तित्व पक्ष इनके विभागो को व्यक्त करता है। उदाहरण के लिए —

C3	ध्वनि	C6	विद्युत
C31	श्रव्य	C62	विद्युत धारा
C32	अश्रव्य ध्वनि	C63	स्थैतिक
C35	पराश्रव्य ध्वनि	C642	दाब विद्युत

इस प्रकार भौतिक विज्ञान की सभी श्रेणियों मे व्यक्तित्व पक्ष की अभिव्यक्ति की गई है।

भौतिक विज्ञान के ऊर्जा पक्ष के अन्तर्गत प्रत्येक श्रेणी के लिए क्रियाएँ व समस्याएँ व्यक्त की गई है। इन क्रियाओ व समस्याओ का प्रयोग द्विविन्दु के सयोजक चिन्ह द्वारा किया गया है जैसे :—

C31:2	श्रव्य ध्वनि का प्रवेग
C31:3	श्रव्य ध्वनि की आवृति
C4:4	उष्णता का प्रसार
C4:5	उष्णता की दशा परिवर्तन
C512:22	रक्त प्रकाश का परिवर्तन
C54:38	गामा प्रकाश का प्रभाव
C62:2	विद्युत धारा का सचारण
C6248:25	बहुसगत विद्युत धारा की विकिरण
C7:2	चुम्बकत्व की तीव्रता
C74:8	लोह चुम्बकत्व की प्रकृति

भौतिक विज्ञान मे अनेक प्रकार के विशिष्ट अध्ययन हो चुके हैं जैसे:—

C9B2	एटम
C9B4	एक्सरे
C9B5	इलक्ट्रोन

इसी प्रकार अनेक प्रकार की भौतिक प्रणालिया भी प्रचलित हो चुकी है—

CK	गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त
CM	गति सिद्धान्त
CN	अपेक्षिकता सिद्धान्त

D यंत्र विज्ञान

"यंत्र विज्ञान वह विज्ञान है जो द्रव्य के गुणो तथा प्रकृति के शक्ति स्रोतो को मानव के लिए उपयोगी बनाता है"।

यंत्र विज्ञान सबंधी साहित्य के वर्गांक बनाने के लिए सूत्र D [व्य], [व्य2] [ऊ] [2व्य] का प्रयोग किया जाता है। व्यक्तित्व पक्ष के अन्तर्गत यंत्र विज्ञान को विभिन्न प्रकृति के अनुसार 8 श्रेणियो मे विभक्त किया गया है जैसे—

D1 नागरिक इंजीनियरिंग
D2 सिंचाई व जल निकास इंजीनियरिंग
D3 भवन इंजीनियरिंग
D4 यातायात (रास्ता) इंजीनियरिंग
D5 यातायात (सवारी)
D6 यन्त्रिय इंजीनियरिंग
D7 नाभिकीय यंत्र विज्ञान
D8 नगरपालिका इंजीनियरिंग

नागरिक इंजीनियरिंग के अन्तर्गत सिंचाई व जलनिकास, भवन, यातायात तथा किसी सीमा तक नगरपालिका यंत्र विज्ञान भी सम्मिलित किए जा सकते हैं। अत इन विभागो के उपविभाग सभी नागरिक यंत्र विज्ञान के अंश हो सकते है। शेष सभी श्रेणियो मे यंत्रविज्ञान के विभाग व उपविभाग अलग अलग तालिकाओ द्वारा व्यक्त किए गये हैं। जैसे D4 यातायात—(रास्ता सबंधी) इंजिनियरिंग मे—

D41 भूमि यातायात	D42 जल मार्ग
D411 सडक यातायात	D43 वायु मार्ग
D415 रेल मार्ग	D44 रस्सा मार्ग
D416 सेतु माग	

इस प्रकार उक्त विभागो को सूक्ष्म करने के लिए भी इनके उपविभागो को मे व्यक्त किया गया है। जैसे

D415 रेल मार्ग	D41532 मीटर लाइन
D4151 गली रेल मार्ग	D41533 मानक लाइन
D4152 रेल मार्ग म प्रकाश	

D4153	साधारण रेल मार्ग	D41534	बड़ी लाइन
D41531	छोटी लाइन	D4154	भूमिगत रेल लाइन
		D4156	पर्वत पर रेल लाइन

यत्र विज्ञान मे केवल D6 यान्त्रिक इजीनियरिंग मे कार्य करने के क्षेत्र की अभिव्यक्ति व्यक्तित्व पक्ष के द्वितीय स्तर द्वारा की गई है शेष सभी श्रेणियो को द्वितीय स्तर के माध्यम से उनके भागो व अशो को व्यक्त किया गया है तथा इसकी अभिव्यक्ति के लिए अल्प विराम का सयोजक चिन्ह आवश्यक है। जैसे रेल यातायात (रास्ता सम्बन्धी) इजीनियरिंग—

D415	रेल यातायात	D415,4	रेल यातायात मे चढाई
D415,1	जमीन कार्य	D415,5	रेल यातायात मे वक्रता
D415,2	नीव कार्य	D415,6	रेल यातायात मे कटाव
D415,3	जमीन का ऊपरी भाग	D415,7	पटरी बीथी
D415,31	रेल यातायात मे गिट्टिया	D415,8	स्टेशन यार्ड
D415,33	रेल यातायात मे सल्ते	D415,87	प्लेटफार्म
D415,35	रेल यातायात मे लोह-पटरी	D415,94	सकेत प्रणाली

इसी प्रकार प्रत्येक श्रेणी के यत्र विज्ञान मे उसके अश व भागो को अल्प विराम की सहायता से व्यक्त किया गया है। यदा कदा यदि आवश्यक हो तो व्यक्तित्व पक्ष के तृतीय स्तर का प्रयोग D6 यान्त्रिक इजीनियरिंग के भाग व अश के लिए किया जा सकता है।

यत्र विज्ञान मे यदा कदा आवश्यकता होने पर पदार्थ पक्ष का भी प्रयोग किया जाता है।

ऊर्जा पक्ष का प्रयोग यत्र विज्ञान मे सामान्यत सभी श्रेणियो मे हुआ है। जैसे —

D 1	प्रायुक्त यान्त्रिकी	D 6	अनुमान
D 2	सर्वेक्षण	D 7	रचना (परिपालन)
D 32	वस्तु की शक्ति	D 8	कार्य करना आदि
D 4	अभिकल्प रेखाचित्र	D 81	आच
D 5	विशिष्ट विवरण	D 82	अनुरक्षण

इन क्रियाओ व समस्याओ का उपयोग प्रत्येक जगह सामान्य ही है जैसे—

D415.2	रेल मार्ग का सर्वेक्षण
D415,35 4	रेल यातायात मे लोह पटरी का रेखा चित्र
D415,87 82	रेल मार्ग के प्लेट फार्म का अनुरक्षण

E रसायन विज्ञान

रसायन विज्ञान सम्बन्धी ग्रंथो के वर्गाको के निर्माण हेतु सूत्र E [व्य] : [ऊ] [2व्य] का प्रयोग किया जाता है। रसायन विज्ञान में व्यक्तित्व पक्ष के अन्तर्गत रसायनिक नौ तत्वो को व्यक्त किया गया है जैसे—

E1	अकार्वनिक पदार्थ	E5	कार्वनिक पदार्थ
E2	हाईड्रोक्सिल व मूल आक्साईड	E6	ऐलिफैटिक योगिक
E3	अम्ल, अम्लीय आक्साईड	E7	सौरभ योगिक
E4	क्षार	E8	विषम चक्रीय योगिक
		F9	जीव तत्व

अकार्वनिक पदार्थों का विशिष्ट तत्वो मे उनकी विशेषता के कारण अलग अलग आठ समूहो मे व्यक्त किया गया है। नवे समूह मे उक्त समूहो मे से दो या दो से अधिक तत्वो का सम्मिश्रण है। जैसे—

E191 धातु; E1911 उत्तम धातु; E1917 विघटनात्मिक धातु, E292 दुर्लभ धातु; E193 मिश्र धातु E195 अधातु E1 8 गैस E1981 वायु आदि।

अन्य भाग E2, E3 को उनके सारभूत तथा सयुक्तता के अनुसार विभक्त किया गया है।

शेष E5 से E9 तक मे तत्वो को उनके उप विभागो मे विभक्त किया गया है। जैसे—जीव पदार्थ—

E92	वनस्पतियो का मूल तत्व	E97	विटामिन
E94	चरबी	E981	पर्णहरिमा
E95	वर्णक	E982	प्रकिण्व
E96	लाइपिन	E986	हारमोन

इस प्रकार इन विभागो के भी आवश्यक्तानुसार उपविभाग किए जाते हैं जैसे विटामिन A, B, C, D, E आदि।

रसायन शास्त्र मे व्यक्तित्व पक्ष का द्वितीय स्तर केवल E5, E6, E7 व E8 व्यक्तित्व पक्ष के लिए ही प्रयोग होता है जैसे—

E68,8	अन्य मूल द्रव्यो मे मिश्रित कार्बोहाइड्रेट
E711,281	बेंजीन मे ईथर
E6893,57	गोद मे नाइट्रो योगिक

रसायनिक विज्ञान मे ऊर्जा पक्ष के अन्तर्गत रसायनिक क्रियाएं व समस्याओ को व्यक्त किया जाता है जैसे—

E:1	साधारण रासायनिक क्रिया	E:33	गुणात्मक विश्लेषण
E:14	अणुभार	E:34	सख्यात्मक विश्लेषण
E:2	भौतिक रसायन क्रिया	E:35	आयतना मिति विश्लेषण
E:3	विश्लेषणात्मक क्रिया	E:4	सश्लेषण
		E:5	निष्कर्षण

केवल विश्लेषणात्मक रसायनिक क्रियाओ मे व्यक्तित्व पक्ष के द्वितीय स्तर मे आवर्तन का भी प्रयोग होता है जिसे अल्प विराम द्वारा व्यक्त किया जाता है।

E182:3,G	लोह का चुम्बकत्व की दृष्टि से विश्लेषण
E1879.3,J	प्लेटिनम का रसायनिक विश्लेषण

रसायन विज्ञान मे जीव रसायन नाम का विशिष्ट अध्ययन भी है। अतः जीव रसायन विज्ञान के लिए रसायन विज्ञान का पूरा सूत्र प्रयोग किया जाता है।

F प्रायोग विज्ञान

प्रायाग विज्ञान विषय सबधी ग्रथो का वर्गाक द्विबिन्दु वर्गीकरण मे सूत्र F [व्य] [ऊ] [2व्य] के अनुसार किया जाता है ।

प्रायोग विज्ञान मे व्यक्तित्व पक्ष प्रयोग के पदार्थो व तत्वो का सूचक है। प्रायोग विज्ञान के पदार्थों के लिए रसायन विज्ञान की तालिकाम्रो मे से 1, 2, 3, व 4, भागो का उपयोग किया जाता है । तथा शेष भाग इस प्रकार होते हैं । जैसे—

F52	प्लास्टिक प्रायोग	F94	चिकनाई व तेल प्रायोग
F53	भोजन प्रायोग	F943	खाने योग्य तेल प्रायोग
F54	मद्यसार प्रायोग	F9495	मोमबत्ती प्रायोग
F55	ईधन प्रायोग	F9496	साबुन प्रायोग
F56	औषध प्रायोग	F94972	सुगंधित प्रायोग
F57	वपन विषयक प्रायोग	F95	सौन्दर्य वर्धक प्रायोग
F58	रगाई प्रायोग		

इस प्रकार यदि प्रायाग के एक तत्व व पदार्थ से दो या दो से अधिक प्रकार के प्रायोग हो तो उन्हे अ गीकृत श्रेणी से सिद्धान्तो द्वारा व्यक्त किया जाता है जैसे— F52 प्लास्टिक प्रायोग के चार प्रकार के प्रायोग हो तो उन्हे क्रमश 1, 2, 3, व 4 अको के साथ व्यक्त किया जा सकता है ।

प्रायोग विज्ञान में ऊर्जा पक्ष के अन्तर्गत प्रायोग की प्रक्रियाए व समस्याए व्यक्त की जाती है । प्रक्रिया पदार्थ की प्रकृति के अनुसार होती है । इन्हे अक्षरक्रम द्वारा ही प्रकट किया जाता है । प्रक्रियाए भी अपने प्रकृति के अनुसार उपविभाजित की जाती है ।

यदि किसी विशेष तत्व अथवा विशेष प्रक्रिया का उल्लेख न हो तथा सामान्य प्रायोगिक क्रिया का ही उल्लेख हो तो वहा E रसायन विज्ञान के ऊर्जा पक्ष मे E 8 क्रिया के सूत्र द्वारा ही व्यक्त किया जाता है । जैसे—84 तापमान, 86 विद्युत प्रणाली, 87 किण्वन, अन्य प्रणाली आदि के प्रयोग के समय 8 का प्रयोग नही किया जाता है ।

यदि किसी पुस्तक मे प्रक्रिया व समस्या दोनो ही व्यक्त करने हो तो पहले प्रक्रिया तथा द्विबिन्दु की सहायता से पश्चात् समस्या व्यक्त की जाती ।

G जीव विज्ञान

जीव विज्ञान संबधी ग्रंथो के वर्गांक निर्माण हेतु सूत्र G [व्य] · [ऊ] [2व्य] का प्रयोग किया जाता है। जीव विज्ञान के अन्तर्गत व्यक्तित्व पक्ष मे जीव के प्रमुख अगो का समावेश किया गया है जैसे :—

G1	जीवन सम्बन्धी मूलभूत अग	G11	कोशिका
G112	कोशिका द्रव्य	G113	केन्द्रक
G116	जीन	G12	ऊतक

अन्य अग सबधी तालिका L चिकित्सा शास्त्र तथा I वनस्पति शास्त्र की तरह ही प्रयोग की जा सकती है।

जीव विज्ञान मे ऊर्जा पक्ष के द्वारा जीव विज्ञान सम्बन्धी समस्याएँ, क्रिया कलापो को प्रचलित भागो मे विभक्त किया गया है जैसे—

G·1	प्रारम्भिक	G:11	वर्गीकरण
G:2	प्राकृति विज्ञान	G:3	क्रिया विज्ञान
		G:4	रोग विज्ञान
G:5	परिस्थिति विज्ञान	G:6	जनन
G:7	विकास	G·8	क्रिया कौशल

इन सभी क्रियाम्रो व समस्याम्रो को भी उपविभाजित किया जा सकता है जैसे :—

G:1	प्रारम्भिक	G:3	क्रिया विज्ञान
G:11	वर्गीकरण	G:32	अवशोषण
G:12	प्राकृतिक इतिहास	G.33	उपाय चयन
G:13	प्रचलित वर्णन	G:33C	भौतिक क्रिया
G:14	चित्र	G:33E	रसायन क्रिया
G:18	तालिका	G·346	उपवास
G:19	सूक्ष्म दर्शिकी	G:35	उत्सर्जन
		G:36	वाष्पोत्सर्जन

इन क्रियाओ मे G:1 तथा उसके उपविभागो तथा G:5 व उसके उप विभागो के साथ स्थान पक्ष का प्रयोग करना चाहिए ।

G·12 44	भारत के प्राणियो का प्राकृतिक इतिहास
G·18 56	इंगलैण्ड के जीवो की तालिका
G.55 4	एशिया के प्राणियो का वातावरण
G.56 44	भारत के प्राणियो का सामाजिक जीवन

जीव संबधी विभिन्न विशिष्ट अध्ययनो का भी इस वर्ग मे विश्लेपण है जैसे :—

G9B	भ्रूण जीव
G9C	शिशु अवस्था
G9D	किशोरावस्था
G9E	वृद्धावस्था

उक्त अग सम्बन्धी सभी विभाग इन विशिष्ट अध्ययनो के साथ अल्प विराम की सहायता से प्रयोग होते है तथा ऊर्जा पक्ष भी सामान्य रूप से प्रयोग होता है। जैसे :—

G9C,12·7	शिशु के ऊतको का विकास
G9E,11:4	वृद्धो के कोशिकाओ का रोग

H भूगर्भ–विज्ञान

भूगर्भ–विज्ञान भी गणितशास्त्र व भौतिकशास्त्र की भांति ही सर्व प्रथम प्रचलित भागों में व्यक्त किया गया है जैसे :—

H1 खनिज विज्ञान	H5 स्तर भूविज्ञान
H2 शैल विज्ञान	H6 जीवाश्म भू-विज्ञान
H3 तलछटी भू-विज्ञान	H7 आर्थिक भू-विज्ञान
H4 गतिशील भू-विज्ञान	H8 भौद्योम परिकल्पना

इन सभी प्रचलित विभागों में से केवल H1 खनिज विज्ञान, H2 शैल विज्ञान तथा H7 आर्थिक भू विज्ञान का पक्ष विश्लेषण किया गया है शेष सभी विभागों को प्रचलित भागों में ही विभक्त किया है :—

खनिज, शैल व आर्थिक भू-विज्ञान को व्यक्तित्व पक्ष व ऊर्जा पक्ष में विभाजन करके व्यक्तित्व पक्ष के अन्तर्गत द्रव्यों का तथा ऊर्जा पक्ष द्वारा उनकी क्रियाओं व समस्याओं का प्रतिपादन किया है ।

खनिज विज्ञान में व्यक्तित्व पक्ष द्वारा सभी द्रव्य रसायन वर्ग से प्राप्त किए जाते हैं । जैसे—H113 तांबा खनिज, H115 चांदी; H118 सोना ।

अन्य कीमती पत्थरों को अलग से व्यक्त किया है जैसे :—

H19	कीमती पत्थर	H195	पुखराज
H191	हीरा	H196	स्पिनेल
H1921	माणक	H198	मुक्ता
H1922	नीलम	H19944	गोमेद
H1931	दूधिया पत्थर		

ऊर्जा पक्ष में भी प्रारम्भिक क्रियाएँ में जैसे—

H1:15 खोज करना, H1:16 उत्पत्ति विशेष जोड़ करके शेष सभी जीव विज्ञान की क्रियाएं काम में लिए गये हैं । H1:8 स्फाट-विज्ञान को वर्गीकृत करने हेतु खनिज की क्रियाओं व समस्याओं को सम्मिलित किया गया है ।

शैल–भू-विज्ञान विभाग के वर्गांक हेतु सूत्र H2 [व्य] : [ऊ] [2व्य] का प्रयोग किया गया है व्यक्तित्व पक्ष के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की चट्टानों को सम्मिलित किया गया है जैसे :—

H21	मग्मज	H23	तलछटी चट्टान
H211	ज्वालामुखी चट्टान	H232	बालूमय चट्टान
H22	कायान्तरित चट्टान	H233	मृण्मय चट्टान
		H234	रसायनिक उद्‌भव चट्टान
		H235	जैवोद्‌भव चट्टान
		H25	उल्कापिण्ड चट्टान

ऊर्जा पक्ष के अन्तर्गत खनिज की भांति ही क्रियाओं को सम्मिलित किया गया है। जैसे :—

ज्वालामुखी चट्टानों का वर्णन	H211:13
कायान्तरित चट्टानों की रचना	H22:3

शेष H3 तलछटी भू-विज्ञान, H4 गतिशील भू-विज्ञान तथा H5 स्तर-भू-विज्ञान को उनके उप-विभागों में ही विभक्त किया गया है।

H6 जीवाश्म–भूविज्ञान मे भूगर्भ सबधी पुस्तकें ही सम्मिलित की जाती हैं। वनस्पति से सबधित जीवाश्म प्रकृति की सभी पुस्तकें वनस्पति विज्ञान मे ही रखी जावेगी।

इसी प्रकार H7 आर्थिक भूगर्भ–विज्ञान के अन्तर्गत कच्चे धातु, जल, अभौतिक व रसायन जो भूगर्भ मे है वे सभी H7 के विषय है तथा आर्थिक भूगर्भ विज्ञान के अन्तर्गत ही रखे जाते है।

HZ खनिज कर्म

HZ खनिज कर्म सम्बन्धी ग्रंथो के वर्गांक के लिए सूत्र HZ [व्य], [व्य 2] : [ऊ] [2व्य], का प्रयोग किया जाता है ।

खनिज कर्म के व्यक्तित्व पक्ष में रसायन शास्त्र के द्रव्यों को व्यक्त किया जाता है । अतः रसायन शास्त्र की द्रव्य संबधी तालिका का प्रयोग करना चाहिए जैसे :—

HZ113	तांबा खनिज कार्य
HZ182	लोहा खनिज कार्य
HZ118	स्वर्ण खनिज कार्य

इसमे केवल उन तत्वो को नही लिया जाता है जो सयोजकता से सम्बन्धित होते है ।

खनीज कर्म के व्यक्तित्व पक्ष के द्वितीय स्तर के अन्तर्गत खनीज कार्यो मे से गर्त–कार्य, सुरग–कार्य आदि अल्प विराम की सहायता से व्यक्त किए जाते है जैसे :—

HZ113,3	तावे की खान मे सुरग
HZ118,4	स्वर्ण खान का भूमिगत रास्ता

खनिज कर्म मे ऊर्जा पक्ष द्वारा खनिज कर्म की समस्याए व क्रियाकलापो को ऊर्जा पक्ष के सयोजक चिन्ह द्विविन्दु द्वारा प्रकट किए जाते है जैसे :—

HZ:1	प्रारम्भिक क्रियाए	HZ:4	खतरा व दुर्घटना
HZ:11	उत्खनन	HZ:42	खान-अग्नि
HZ:13	छेद करना	HZ:43	कुचलना
HZ:2	कच्ची पट्टी करना	HZ:5	स्वास्थ्य माप

इन क्रियाओ का प्रयोग व्यक्तित्व पक्ष के प्रथम व द्वितीय स्तर के साथ भी होता है तथा स्वतन्त्रत रूप मे भी होता है ।

HZ·55	खनिज कर्म मे प्रकाश
HZ182:55	लोहा की खानों मे प्रकाश व्यवस्था
HZ182,3:55	लोहे की खानो की सुरगो में प्रकाश

I वनस्पति विज्ञान

वनस्पति विज्ञान के ग्रथो का वर्गाक बनाने हेतु सूत्र I [व्य], [व्य2] [ऊ] [2 व्य] का प्रयोग करना आवश्यक है।

वनस्पति मे व्यक्तित्व पक्ष प्राकृतिक समूहो तथा वनस्पति के अगो को व्यक्त करता है। व्यक्तित्व पक्ष के प्रथम स्तर मे वनस्पति के प्राकृतिक समूहों को प्रकट किया गया है जैसे —

I 1	पुष्पहीन वनस्पति	I 5	पुष्पयुक्त वनस्पति
I 2	स्थाणु वनस्पति	I 6	विवृतबीज वनस्पति
I 3	शैवाल वनस्पति	I 7	एकबीज वनस्पति
I 4	पर्णागाद्भव वनस्पति	I 8	द्विदल वनस्पति

वनस्पति के उक्त प्राकृतिक समूहो को अलग अलग विभागो मे विभक्त किया गया है जो मूल द्विबिन्दु पुस्तक की तालिकाओ म प्रस्तुत है।

वनस्पति विज्ञान मे व्यक्तित्व पक्ष के द्वितीय स्तर मे वनस्पति के अगो का विश्लेषण किया गया है जैसे —

I,11	वनस्पति कोशिका	I,14	वनस्पति का तना
I,12	वनस्पति उतक	I,15	वनस्पति का पत्ते
I,13	वनस्पति की जड	I,16	वनस्पति का पुष्प
I,131	वनस्पति की जड के रोए	I,17	वनस्पति का फल
I,132	द्वितीय जड	I,178	वनस्पति के बीज
I,133	प्राथमिक जड		

वनस्पति विज्ञान मे व्यक्तित्व पक्ष का द्वितीय स्तर प्रथम स्तर के साथ भी प्रयोग होता है तथा स्वतन्त्र रूप मे भी, दोनो ही स्थिति मे सयोजक चिन्ह अल्प विराम का प्रयोग आवश्यक है जैसे —

I8,178	द्विदल वनस्पति का बीज	I223,11	हरितशैवाल की कोशिकाए
I75,14	पामी का तना	I75,133	पामी की प्राथमिक जड

वनस्पति मे ऊर्जा पक्ष द्वारा वनस्पति की क्रियाए व समस्याए जीव विज्ञान के भाति ही व्यक्त की जाती है जैसे —

I1,15 4 पुष्पहीन वनस्पति के पत्तों की बीमारी

I75,15 3 पामी के पत्तों की रचना

J कृषि विज्ञान

कृषि विज्ञान सम्बन्धी ग्रंथो का वर्गांक निर्माण हेतु J [व्य] : [ऊ] [2 व्य] : [2ऊ] का प्रयोग किया जाता है।

कृषि विज्ञान के अन्तर्गत व्यक्तित्व पक्ष दो विभागो का सूचक है।

1. कृषि वस्तुओ की उपयोगिता की दृष्टि से।

2. कृषि वस्तु के अंश व भाग की दृष्टि से।

उपयोगिता की दृष्टि से तात्पर्य, उस वस्तु की कृषि से क्या उपयोगिता हो सकती है, से माना जाता है जैसे :—

J1	सजावट	J2	चराई
J3	भोजन	J4	उत्तेजक
J5	तेल	J6	औषध
J7	रेशा	J8	रंगाई
J9	अन्य	J92	खाद

उसी प्रकार कृषि पदार्थ के अंश व भाग से तात्पर्य उस पदार्थ के हिस्से से है जैसे —

1 कंद	5 पत्ते
2 जड का अंतिम भाग	6 पुष्प
3 जड	7 फल
4 तना	8 बीज
	97 संपूर्ण पौधा

इस प्रकार कृषि विज्ञान के वर्गांको की रचना मे सर्व प्रथम उपयोगिता का उल्लेख होता है तथा इसके पश्चात् अंश का। इनके मध्य मे किसी प्रकार का सयोजक चिन्ह का प्रयोग नही होता है जैसे :—

J2	चराई (पशुओ के लिए)
J25	पत्तो की चराई हेतु कृषि
J251	घास की चराई हेतु कृषि

कृषि विज्ञान में व्यक्तित्व पक्ष के प्रयोग मे चार पाच अ कों तक किया जाता है क्योंकि —

प्रथम अ क	कृषि पदार्थ की उपयोगिता ।
द्वितीय अ क	कृषि पदार्थ का अ श ।
तृतीय अ क	सामान्य वश व जाति के लिए ।
चतुर्थ अ क	उस वश म विशेष के लिए ।

उदाहरण के लिए — J3513 बद गोभी की खेती

J	कृषि	
J3	भोजन सम्बन्धी कृषि	(उपयोगिता)
J35	भोजन मे पत्ते वाली कृषि	(अ श)
J351	सामान्य पत्ते वाली कृषि	(सामान्य)
J3513	बद गोबी की कृषि	(विशेष)

इसी प्रकार J3751 आम, J3752 अन्नास, J3755 खजूर ।

इसके अतिरिक्त यदि किसी विशेष कृषि मे भी अधिक विशिष्टता प्रकट करनी हो तो उसे वण क्रम से व्यक्त किया जा सकता है जैसे — J3751 आम मे —

J3751K कलमी आम, J3751D दशहरी आम,
J3751H हापुड आम,

कृषि विज्ञान म ऊर्जा पक्ष दो आवर्तनो मे व्यक्त किया गया है ।

पहले आवर्तन मे कृषि के भूमि काय से कटाई तक सभी प्रकार की क्रियाओ व समस्याओ को सम्मिलित किया गया है जैसे —

J 1	कृषि योग्य भूमि	J 6	पोषण
J 2	कृषि योग्य खाद	J 7	कटाई
J 3	प्रचारण	J 915	वर्गीकरण (उपज का)
J 4	रोग	J 92	सुधार
J 5	विकास	J 95	वातावरण

उदाहरण के लिए

J3513 2	बद गोबी के लिए खाद
J3/51D 4	दशहरी आम की खती मे बिमारी
J382 7	गेहू की कटाई

प्रथम आवर्तन सम्बन्धी प्रत्येक क्रियाओं को विभाजित व सूक्ष्म भी किया गया है जैसे :—

J:2 कृषि खाद
J:21 हरा खाद
J:23 निगम कूडा
J:243 पोटेशियम्
J:29 अन्य खाद

कृषि विज्ञान में ऊर्जा पक्ष के द्वितीय आवर्तन के अन्तर्गत कृषि उपज को उपयोग व सुरक्षित रखने की क्रियाओं को व्यक्त किया गया है। जैसे पुवाल करना, सफाई करना, बचाव करना, भण्डार करना, शीत भण्डार मे रखना आदि। इसका प्रयोग भी ऊर्जा पक्ष के संयोजक चिन्ह द्विबिन्दु की सहायता से ही किया जाता है।

अन्य विषयो की भांति ही कृषि विज्ञान मे भी अनेक प्रकार की प्रणालियां तथा विशिष्ट अध्ययन है।

K प्राणी शास्त्र

प्राणी विज्ञान के ग्रथो के वर्गाक बनाने के लिए सूत्र K [व्य]]ऊ[[2व्य] का प्रयोग किया जाता है।

प्राणी शास्त्र को सर्वप्रथम व्यक्तित्व पक्ष के अन्तर्गत नो विभागो म विभक्त किया गया है। ये सभी भाग प्राणी–शास्त्र के प्राकृतिक समूहो के अनुसार किये गये है। जैसे—

K1 अपृष्ठवशी प्राणी
K2 एक कोष्ठीय प्राणी
K3 लोमरध्री प्राणी
K4 उदरहीन प्राणी
K5 काटेदार चमडी वाले
K6 कृमि प्राणी
K7 कोमल त्वचा वाले
K8 साधिपादीय प्राणी
K9 पृष्ठवशी प्राणी

उक्त श्रेणियो मे K2 एककोष्ठीय प्राणी से लेकर K8 साधिपादी प्राणी तक सभी K1 अपृष्ठवशी के ही उपविभाग हैं तथा K9 पृष्ठवशी एक अलग श्रेणी है। इन सभी विभागो को उपविभागो मे भी विभक्त किया गया है जैसे —

K9 पृष्ठवशी प्राणी
K92 मत्स्य
K94 सरीसृप
K97 स्तनधारीप्राणी
K9958 जगली पशु
K91 आदिपृष्ठवशी प्राणी
K93 उभयचर प्राणी
K96 पक्षी
K9954 परिस्थितिक समूह

ऊर्जा पक्ष के अन्तर्गत जीव विज्ञान की सभी क्रिया-कलापो का उल्लेख होता है जैसे आकृति विज्ञान, रचना विज्ञान, विकार, परिस्थिति व वातावरण, जाति इतिहास आदि। जैसे—

K1 4 पृष्ठवशी प्राणियो मे रोग
K2 2 एककोष्ठीय प्राणियो का इन्द्रिय विज्ञान
K3 3 लोमरध्री प्राणियो की शरीर रचना
K6 55 कृमि प्राणियो का वातावरण

जब उक्त क्रियाओ मे उपापचयन अथवा अवसन्नता या उपवास का प्रयोग हो तो पदार्थ पक्ष के द्वितीय आवर्तन पक्ष का प्रयोग करना चाहिए तथा यह प्रयोग विषय विधि के अनुसार होता है। जो रसायन विज्ञान के द्वारा प्राप्त किये जा सकते है। जैसे—

K, 94 33C4 प्राणियो मे चरबी से उष्णता का निर्माण

जब कभी ऊर्जा पक्ष 1 के उपविभाग 12 तथा 18 तथा 5 विभागो का प्रयोग किया जावे तो वहा देश पक्ष का प्रयोग आवश्यक है जैसे —

K1 12 44 भारत म पृष्ठवशी प्राणी का प्राकृतिक इतिहास
K3 13 44 भारत के लोमरघ्रो प्राणी का वर्णन

KZ पशु पालन

पशुपालन सम्बन्धी पुस्तको के वर्गाको की रचना के लिए सूत्र KZ [व्य] [ऊ] [2व्य] · [2ऊ] [3व्य] का पालन करना पडता है ।

पशुपालन मे व्यक्तित्व पक्ष उपयोगिता एव उनके अगो का द्योतक है। पशुपालन मे पशु की श्रेणियो का विभाजन करने के पूर्व उन्हे कृषि विज्ञान की तरह उपयोगिता तथा उनके शरीर के भागो के अनुसार दो पक्तियो मे विभक्त किया गया है। पशुपालन मे भी उपयोगिता की पक्ति मे कृषि-विज्ञान के सभी नियमो का पालन होता है किन्तु निम्नलिखित तीन विभागो मे परिवर्तन किया गया है जैसे —

KZ2 पशु
KZ4 बोझ ढोने वाले पशु
KZ5 पालतू पशु

द्वितीय पक्ति भाग की अलग से सूची दी गई है जैसे—

2 हड्डी	3 मास
5 अडा	4 पूर्ण पशु
8 केश आदि	7 चमडी

उक्त पक्तियो के आधार पर ही आगे व्यक्तित्व पक्ष का निर्माण किया गया है जैसे —

KZ5 पालतू पशु
KZ54 पूर्ण पालतू पशु
KZ541 कुत्ता
KZ542 बिल्ली
KZ546 तोता

उक्त 2, 4, 5 विभागो के अतिरिक्त सभी पशु की उपयोगिता के आधार पर उपविभाग किए जाते हैं जैसे :—

KZ पशुपालन
KZ3 खाद्य पशु
KZ33 मास वाले खाद्य पशु
KZ332 मछली

KZ333 भेड बकरा
KZ334 सूग्रर
KZ3392 मृग

ऊर्जा पक्ष के ग्रन्तगत पशुपालन की समस्याए व क्रियाग्रो को व्यक्त किया गया है जैसे —

KZ 1 भोजन
KZ 2 ग्राकृति विज्ञान
KZ 3 शरीर रचना
KZ 4 विकार
KZ 5 उपचार
KZ 6 प्रजनन
HZ 7 उत्पत्ति
KZ 8 प्रशिक्षण

इन सभी क्रियाग्रो समस्याग्रो को ग्रलग रूप मे भी विभक्त किया जैसे —

KZ 7 उत्पत्ति
KZ 71 दूध
KZ 73 मक्खन
KZ 74 घी
KZ 75 दूध का मक्खन
KZ 78 पनीर

जैसे—

KZ पशुपालन
KZ3 भोजन वाले पशु
KZ31 दूध देने वाले पशु
KZ311 गाय
KZ311 7 गाय से उत्पन
KZ311 74 गाय का घी

इस प्रकार ऊर्जा पक्ष मे द्वितीय ग्रावर्तन भी कृषि विज्ञान की भाति ही प्रयोग किया जाता है ग्रत ऊर्जा पक्ष के द्वितीय ग्रावर्तन के प्रयोग के पूर्व द्विबिन्दु का चिन्ह लगाना ग्रावश्यक है। जैसे—

KZ311 71 84 गाय के दूध के लिए शीत भण्डार

———

L चिकित्सा विज्ञान

चिकित्सा विज्ञान के अंगो का वर्गांक बनाने के लिए सूत्र L [व्य] [ऊ] [2व्य] का प्रयोग होता है चिकित्सा विज्ञान म व्यक्तित्व पक्ष शरीर के विभिन्न अंगो तथा सहायक अंगो का सूचक है जैसे —

L1 प्रमुख अंग
L2 पाचन प्रणाली के अंग
L3 रक्त सचार के अंग
L4 श्वास प्रणाली के अंग
L5 जनन मूत्रांग प्रणाली
L6 अन्त स्रावी ग्रथी
L7 तंतु अंग प्रणाली
L8 अन्य प्रणाली के अंग

इन सभी प्रमुख अंगो की अलग अलग सूचिया मूल पुस्तक द्विबिन्दु वर्गीकरण मे दी हुई है। जैसे पाचन व परिसचरण प्रणालियो के मुख्य 2 अंग इस प्रकार है —

L2 पाचन प्रणाली के अंग
L21 मुह
L211 होठ
L212 मुह का गुहा
L213 जिह्वा
L214 दन्त
L215 गल तोरणिका
L216 लार ग्रथी
L22 ग्रसनी
L23 ग्रासनली
L24 आमाशय
L25 आन्त्र
L26 लघु आन्त्र
L27 दीर्घ आन्त्र
L291 यकृत

L3 परिसंचरण के अंग
L31 हृदयावरण
L32 हृदय
L33 महाशिरा
L331 श्रेष्ठ महाशिरा
C332 निकृष्ट महाशिरा
L34 महाधमनी
L35 रक्त
L358 रक्त वर्णिका
L36 शिराए
L37 रक्त वाहिनी
L38 केशिका
L39 लसीका वाहिनी
L396 लसीका वाहिनी ग्रथी

इन सभी विभागो के आवश्यकतानुसार उपविभाग भी है इस विज्ञान मे अनेक अगो तथा उनके विभाग व उपविभागो का पारस्परिक सम्बन्ध रहता है। अत: इन सम्बन्धो को अध्यारोपण विधि के अनुसार प्रकट किया जाता है। जैसे प्रमुख व प्रादेशिक मे कोषाणु व कोषाणुजाल का सम्बन्ध किसी भी शारीरिक इन्द्रियो से हो सकता है अत: इन्हे प्रकट करने के लिए अध्यारोपण विधि का आश्रय लेना पडता है जैसे जिव्हा मे कोषाणु जाल यहा जिह्वा प्रधान है तथा कोषाणुजाल गौण है अत L213 (जिह्वा) पर कोषाणु जाल L12 का अध्यारोपण किया गया है। अत. जिह्वा मे कोषाणु जाल का वर्गाक L213-12 हुआ।

इस प्रकार :—

गले की हड्डिया	L117–82
बाहु की मासल	L163–83
अगुली के नाखून	L168–883
आख के बाल	L185–881

इस प्रकार व्यक्तित्व पक्ष मे प्रत्येक आवश्यक अगो के लिए उक्त अध्यारोपण विधि द्वारा वर्गांक की रचना की जाती है। ऊर्जा पक्ष के अन्तर्गत शारीरिक अगो के क्रिया कलाप व समस्याओ के लिए जीव विज्ञान के ऊर्जा पक्ष के विभागो का प्रयोग किया जाता है जैसे :—

L18-82:3	मस्तक की हड्डियो की रचना
L214.4	दत रोग
L32:4	हृदय रोग

द्विबिन्दु वर्गीकरण पुस्तक मे सामान्य व विशिष्ट रोगो की एक सूची दी गई है। ऊर्जा पक्ष के द्वितीय आवर्तन मे व्यक्तित्व के तृतीय स्तर का प्रयोग निदान व उपचार हेतु आवश्यक विभागो मे विभक्त किया गया है जैसे :—

1 उपचर्या
3 हेतु विज्ञान
3 निदान प्रणाली
4 रोग विज्ञान
5 निवारक कदम
6 चिकित्सा
7 शल्य चिकित्सा
8 आहार नियम

इनका प्रयोग करते समय ऊर्जा पक्ष के संयोजक चिन्ह द्विविन्दु का प्रयोग आवश्यक है जैसे :—

L177 4:7 गले का आपरेशन
L134-83 4:3 टाग के मासल दर्द का निदान
L26 417 3253 छोटी आत के दर्द का अवसरे निदान

चिकित्सा विज्ञान के अनेक विशिष्ट अध्ययन है जैसे :—

L9B बाल चिकित्सा
L9F स्त्री चिकित्सा
L9V युद्ध चिकित्सा
L9X व्यवसायिक चिकित्सा

इसी प्रकार चिकित्सा शास्त्र मे अनेक चिकित्सा प्रणालिया भी प्रचलित है। जो उनकी उत्पत्ति क्रम मे कालक्रम द्वारा प्रकट की जाती है—

LB आयुर्वेदिक चिकित्सा
LD युनानी चिकित्सा
LL होम्योपैथी
LM प्राकृतिक चिकित्सा

यदि किसी स्थान पर प्रणालिया व विशिष्ट अध्ययन दोनो का प्रयोग आवश्यक हो तो पहले प्रणालिया तथा अल्प विराम के संयोजक चिन्ह पश्चात् विशिष्ट अध्ययन का प्रयोग होता है जैसे :—

LB,9F आयुर्वेदिक मे स्त्री चिकित्सा
LM,9B प्राकृतिक बाल चिकित्सा

चिकित्सा के सभी अग प्रत्यग तथा समस्याए व क्रियाए सामान्य रूप से इनमें प्रयोग होता है। व्यक्तित्व पक्ष अल्प विराम की सहायता से प्रयोग किया जाता है। जैसे—

LM,134-83 4:3 प्राकृतिक चिकित्सा मे टाग के मांसल दर्द का निदान

M उपयोगी कलाएं

इस विषय का क्षेत्रफल इतना विस्तृत है कि इसमें वे सभी उपयोगी कलाऐं सम्मिलित है जिन्हे द्विबिन्दु वर्गीकरण मे मुख्य विषयो के अन्तर्गत स्थान प्राप्त नही हुआ है। इसके साथ ही वे अन्य विषय भी इसमे सम्मिलित है जो अन्यत्र प्रकट नही किए जा सके। जैसे—युद्ध-विज्ञान, सैनिक विज्ञान, हवाई युद्ध आदि। अत यह मुख्य वर्ग अनेक प्रमुख वर्गों के समिश्रण से बना है। उपयोगी कलाओ को सर्वप्रथम गणनात्मक रूप मे विभक्त किया गया है जैसे—

M1	पुस्तक निर्माण वर्णन	M8	सिलाई व्यवसाय
M2	बढईगिरी	M9	राजगीरी
M3	लुहारगीरी	M95	छाया चित्रकला
M5	काच व्यवसाय	M97	चर्म व्यवसाय
M7	वस्त्र व्यवसाय	M98	पैकिंग बनाना

इसके अतिरिक्त अन्य जो उपयोगी कलाएं व शिल्प हो सकती है उन सबको विषम क्रम विधि द्वारा विभक्त किया गया है। जैसे—

MA	गृह व होटल प्रबन्ध	MB1	गणनायत्र
MC5	दृष्टि उपकरण बनाना	MD12	खिलौने व्यवसाय
MJ7	रस्सा बटाई	MNR	सगीत यत्र बनाना
MV	युद्ध विज्ञान	MY	शारीरिक प्रशिक्षण व अन्य

उक्त उपयोगी कलाओ के मुख्य वर्ग को आवश्यकतानुसार विस्तृत किया जा सकता है जैसे —

MY1	शारीरिक प्रशिक्षण	MY2	व्यायाम
MY3	अन्त विनोद	MY4	मानसिक विनोद
MY5	पशुदौड	MY6	शिकार
MY7	स्काउटिंग	MY8	गोष्ठीगृहजीवन
MY95	सरकश		

इनका प्रयोग करते समय ऊर्जा पक्ष के संयोजक चिन्ह द्विबिन्दु का प्रयोग आवश्यक है जैसे —

L177 4 7 गले का आपरेशन
L134 83 4 3 टाग के मासल दर्द का निदान
L26 417 3253 छोटी आत के दद का अवसरे निदान

चिकित्सा विज्ञान के अनेक विशिष्ट अध्ययन है जैसे —

L9B बाल चिकित्सा
L9F स्त्री चिकित्सा
L9V युद्ध चिकित्सा
L9X व्यवसायिक चिकित्सा

इसी प्रकार चिकित्सा शास्त्र मे अनेक चिकित्सा प्रणालिया भी प्रचलित है। जो उनकी उत्पति क्रम मे कालक्रम द्वारा प्रकट की जाती है—

LB आयुर्वेदिक चिकित्सा
LD यूनानी चिकित्सा
LL होम्योपेथी
LM प्राकृतिक चिकित्सा

यदि किसी स्थान पर प्रणालिया व विशिष्ट अध्ययन दोनो का प्रयोग आवश्यक हो तो पहले प्रणालिया तथा अल्प विराम के संयोजक चिन्ह पश्चात् विशिष्ट अध्ययन का प्रयोग होता है जैसे —

LB 9F आयुर्वेदिक मे स्त्री चिकित्सा
LM,9B प्राकृतिक बाल चिकित्सा

चिकित्सा के सभी अग प्रत्यग तथा समस्याए व क्रियाए सामान्य रूप से इनमे प्रयोग होता है। व्यक्तित्व पक्ष अल्प विराम की सहायता स प्रयाग किया जाता है। जैसे—

LM,134 83 4 3 प्राकृतिक चिकित्सा मे टाग के मासल दर्द का निदान

M उपयोगी कलाएं

इस विषय का क्षेत्रफल इतना विस्तृत है कि इसम वे सभी उपयोगी कलाएँ सम्मिलित है जिन्हे द्विबिन्दु वर्गीकरण मे मुख्य विषयो के अन्तगत स्थान प्राप्त नही हुआ है। इसके साथ ही वे अन्य विषय भी इसमे सम्मिलित है जो अन्यत्र प्रकट नही किए जा सके। जैसे—युद्ध विज्ञान, सैनिक विज्ञान, हवाई युद्ध आदि। अत यह मुख्य वग अनेक प्रमुख वर्गों के समिश्रण स बना है। उपयोगी कलाओ को सवप्रथम गणनात्मक रूप म विभक्त किया गया है जैसे—

M1	पुस्तक निमाण वणन	M8	शिलाई व्यवसाय
M2	बढ़ईगिरी	M9	राजगीरी
M3	लुहारगीरी	M95	छाया चित्रकला
M5	काच व्यवसाय	M97	चम व्यवसाय
M7	वस्त्र व्यवसाय	M98	पैंकिंग बनाना

इसके अतिरिक्त अन्य जो उपयागी कलाएं व शिल्प हो सकती है उन सबको विषम क्रम विधि द्वारा विभक्त किया गया है। जैसे—

MA	गृह व होटल प्रबन्ध	MB1	गणनायत्र
MC5	दृष्टि उपकरण बनाना	MD12	खिलौने व्यवसाय
MJ7	रस्सा बटाई	MNR	सगीत यत्र बनाना
MV	युद्ध विज्ञान	MY	शारीरिक प्रशिक्षण व अन्य

उक्त उपयोगी कलाओ के मुख्य वर्ग को आवश्यकतानुसार विस्तृत किया जा सकता है जैसे —

MY1	शारीरिक प्रशिक्षण	MY2	व्यायाम
MY3	अन्त विनोद	MY4	मानसिक विनोद
MY5	पशुदौड़	MY6	शिकार
MY7	स्काउटिंग	MY8	गोष्ठीगृहजीवन
MY95	सरकश		

इनका प्रयोग करते समय ऊर्जा पक्ष के संयोजक चिन्ह द्विबिन्दु का प्रयोग आवश्यक है जैसे —

L177 4 7 गले का आपरेशन
L134 83 4 3 टाग के मासल दर्द का निदान
L26 417 3253 छोटी आन के दर्द का अक्सरे निदान

चिकित्सा विज्ञान के अनेक विशिष्ट अध्ययन है जैसे —

L9B बाल चिकित्सा
L9F स्त्री चिकित्सा
L9V युद्ध चिकित्सा
L9X व्यवसायिक चिकित्सा

इसी प्रकार चिकित्सा शास्त्र मे अनेक चिकित्सा प्रणालिया भी प्रचलित है। जो उनकी उत्पति क्रम मे कालक्रम द्वारा प्रकट की जाती है—

LB आयुर्वेदिक चिकित्सा
LD युनानी चिकित्सा
LL होम्योपेथी
LM प्राकृतिक चिकित्सा

यदि किसी स्थान पर प्रणालिया व विशिष्ट अध्ययन दोनों का प्रयोग आवश्यक हो तो पहले प्रणालिया तथा अल्प विराम के सयोजक चिन्ह पश्चात् विशिष्ट अध्ययन का प्रयोग होता है जैसे —

LB,9F आयुर्वेदिक मे स्त्री चिकित्सा
LM,9B प्राकृतिक बाल चिकित्सा

चिकित्सा के सभी अग प्रत्यग तथा समस्याए व क्रियाए सामान्य रूप से इनमें प्रयोग होता है। व्यक्तित्व पक्ष अल्प विराम की सहायता से प्रयाग किया जाता है। जैसे—

LM,134 83 4 3 प्राकृतिक चिकित्सा मे टाग के मासल दर्द का निदान

M उपयोगी कलाएं

इस विषय का क्षेत्रफल इतना विस्तृत है कि इसमे वे सभी उपयोगी कलाएँ सम्मिलित है जिन्हे द्विबिन्दु वर्गीकरण मे मुख्य विषयो के अन्तर्गत स्थान प्राप्त नही हुआ है। इसके साथ ही वे अन्य विषय भी इसमे सम्मिलित है जो अन्यत्र प्रकट नहीं किए जा सके। जैसे—युद्ध-विज्ञान, सैनिक विज्ञान, हवाई युद्ध आदि। अत यह मुख्य वर्ग अनेक प्रमुख वर्गों के समिश्रण से बना है। उपयोगी कलाओ को सर्वप्रथम गणनात्मक रूप मे विभक्त किया गया है जैसे—

M1	पुस्तक निर्माण वर्णन	M8	सिलाई व्यवसाय
M2	बढ़ईगिरी	M9	राजगीरी
M3	लुहारगीरी	M95	छाया चित्रकला
M5	काच व्यवसाय	M97	चर्म व्यवसाय
M7	वस्त्र व्यवसाय	M98	पैकिंग बनाना

इसके अतिरिक्त अन्य जो उपयोगी कलाएँ व शिल्प हो सकती है उन सबको विषम क्रम विधि द्वारा विभक्त किया गया है। जैसे—

MA	गृह व होटल प्रबन्ध	MB1	गणनायत्र
MC5	दृष्टि उपकरण बनाना	MD12	खिलौने व्यवसाय
MJ7	रस्सा बटाई	MNR	सगीत यत्र बनाना
MV	युद्ध विज्ञान	MY	शारीरिक प्रशिक्षण व अन्य

उक्त उपयोगी कलाओ के मुख्य वर्ग को आवश्यकतानुसार विस्तृत किया जा सकता है जैसे:—

MY1	शारीरिक प्रशिक्षण	MY2	व्यायाम
MY3	मस्त विनोद	MY4	मानसिक विनोद
MY5	पशुदौड़	MY6	शिकार
MY7	स्काउटिंग	MY8	गोष्ठीगृहजीवन
MY95	सरकश		

इस तरह प्रत्येक विभाग व उपविभाग को विस्तृत किया गया है। इस मुख्य वर्ग के सभी भागो का विश्लेषण करते समय पक्षो का प्रयोग किया है किन्तु वर्तमान स्थिति मे केवल

M7 वस्त्र व्यवसाय ; MJ7 रस्सा बाटई ; तथा MA

गृह होटल प्रबन्ध मे आवश्यकतानुसार व्यक्तित्व पदार्थ, ऊर्जा पक्षो का प्रयोग किया गया है जैसे—M7 वस्त्र व्यवसाय मे व्यक्तित्व के अन्तर्गत

M71 सूत	M72 रस्सा
M73 कपडा	M74 बुनाई धागे
M75 कालीन	

इन सभी द्रव्यो के लिए पदार्थ व वस्तुओ की आवश्यकता होती है। जैसे—सूत, ऊन, रेशम, जूट आदि ये सभी पदार्थ के रूप मे अर्द्ध विराम के सयोजक चिन्ह साथ प्रयोग किए गये हैं—

M73;1 सूती कपडा
M73,2 ऊनी कपडा
M74,2 बुनाई के ऊनी धागे

इन सभी वस्तुओ की जो क्रियाएं व समस्याएं है उनकी एक विस्तृत सूची पुस्तक मे उपलब्ध है जिससे पूर्ण वर्गांक बन जाता है।

M73;1·8 सूती कपडो की रगाई
M75,3 3 रेशमी कालीन की बुनाई
M73.7 कपडो की धुलाई

इसी प्रकार MJ7 रस्सा बुनाई को भी पूर्ववत् द्रव्यो, पदार्थ व क्रियाओ M7 सूती व्यवसाय की भाति ही विभक्त किया गया है।

घरेलू व होटल प्रबन्ध को केवल निम्नलिखित व्यक्तित्व पक्ष मे विभक्त किया गया है :—

MA2 व्यवसाय
MA3 रसोई
MA4 सुश्रूषा
MA7 सुन्दरता सस्कृति

△ आध्यात्मिक अनुभूति व ब्रह्मविद्या

यह मुख्य वर्ग प्रचलित अन्य किसी भी वर्गीकरण प्रणालियो मे नही मिलता है। अतः यह द्विबिन्दु वर्गीकरण मे एक विशेष विषय रचना है। इसका बोधाक △ भी अपने आप मे ब्रह्मविद्या का सूचक है। इसी प्रकार इसका स्थान भी द्विबिन्दु वर्गीकरण मे एक ओर प्राकृतिक विषयो तथा दूसरी ओर मानविकी व सामाजिक विषयो के मध्य मे स्थिर किया गया है। आध्यात्मिक अनुभूति व ब्रह्मविद्या सम्बन्धी ग्रथो के वर्गांक बनाने के लिए सूत्र △[व्य], [व्य2].[ऊ] [2व्य] का प्रयोग होता है।

इस विषय के अन्तर्गत मुख्य तत्व धार्मिक हैं। जब किसी पुस्तक का विषय गूढ व रहस्यात्मक होने के कारण प्रचलित विषयो मे स्थान प्राप्त नही कर सकता तब गूढात्मक व रहस्यात्मक विषयो की पुस्तको को इस वर्ग मे स्थान दिया गया है। जैसे—

△1 पूर्ण आध्यात्मिक अनुभूति
△2 हिन्दू ब्रह्म विद्या
△3 जैन ब्रह्म विद्या
△4 बौद्ध ब्रह्म विद्या
△5 यहूदी आध्यात्मिक अनुभूति
△6 ईसाई आध्यात्मिक अनुभूति
△7 इस्लामी आध्यात्मिक अनुभूति

ललित कला, साहित्य तथा धर्म विषयक पुस्तको के अतिरिक्त सभी विषयो की पुस्तको को आध्यात्मिक अनुभूति व ब्रह्मविद्या के अन्तर्गत विषय-क्रम-विधि द्वारा प्रकट किया जा सकता है। जैसे—

△(E118) सोने का रहस्यमय रसायन।
△ (J : 6) पौध जनन की गुह्यता।

इन सभी भागो को आवश्यकतानुसार विभाजित भी किया गया है जैसे—

△2 हिन्दू आध्यात्मवाद	△22 हठयोग
△23 ज्ञान योग	△24 कर्मयोग
△25 भक्ति योग	△26 राजयोग

अत इस वर्ग के प्रमुख भागो व विभागो के अतिरिक्त भी आवश्यकता होने पर व्यक्तित्व पक्ष के द्वितीय स्तर मे अन्य अस्तित्वो का उल्लेख किया गया है जैसे —

△,11	ईश्वर	△,12	देवदूत
△,14	मनुष्य	△,15	परिया
△,16	मृतात्मा	△,6	स्थान
△,6	समय		

इनका उल्लेख करने के पूर्व व्यक्तित्व पक्ष का सयोजक चिन्ह अल्प विराम आवश्यक होता है जैसे—

△,11 ईश्वरवाद
△22,16 हठयोग मे मृतात्माएँ
△7,12 इस्लाम मे शैतान की कल्पना
△25,11 भक्ति योग मे ईश्वर का स्थान
△,16 प्रेतात्माए

इन सभी तत्वो के वर्गो की समस्याएँ व क्रियाकलापो के लिए उर्जा पक्ष का प्रयोग किया गया है जैसे—

△·1	प्रतिकवाद	△:3	प्रक्रिया
△.34	प्राणायाम	△:36	भक्ति क्रिया
△:5	अन्तः दृष्टि	△:8	गुह्य विद्या
△:864	फलीत ज्योतिष	△:8627	हस्तरेखा विज्ञान
△:87	जादू		

इनका प्रयोग स्वतन्त्र रूप से भी होता है तथा आध्यात्मिक अनुभूति के सभी भागो व विभागो के साथ भी होता है ।

—

N ललित कलाएं

उपयोगी कलाओं की भांति ही यह वर्ग भी अनेक ललित कलाओं का सम्मिश्रण वर्ग कहा जा सकता है। अतः सर्व प्रथम इस वर्ग को प्रचलित् ललित-कलाओं जैसे—वास्तुकला, नगर-नियोजन कला, शिल्प-कला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीतकला, नृत्य कला आदि अनेक प्रमुख कलाओं में विभक्त किया है। इस वर्ग में यह विभाजन अरबी अंकों के स्थान पर रोमन के बड़े अक्षरों द्वारा किया गया है जैसे–

NA	वास्तु कला	NP	रेखा चित्रकला
NB	नगर नियोजन	NQ	चित्रकला
NC	प्लास्टिक कला	NR	संगीत कला
ND	शिल्प कला	MS	नृत्य कला
NM	लेखा चित्रकला	NT	रंगमंच कला

इन विषयों में अलग अलग पद्धतियां व शैलियां प्रचलित हैं। ललित कलाएं मुख्यतः शैली के आधार पर ही व्यक्त की जा सकती है। शैली को व्यक्त करने के लिए सर्व श्रेष्ठ साधन देश व काल ही माने जाते हैं क्योंकि किसी भी शैली का सम्बन्ध देश व समय से होता है।

भारतीय ललित कला, ग्रीक ललितकला, ब्रिटिश ललितकला, बौद्धकालीन ललित कला, मुगलकालीन ललित कला, ट्यूडरवंशी ललितकला आदि। इन दोनों शैलियों को ललित कलाओं में सर्वप्रथम व्यक्त किया गया है तथा दोनों पक्षों को एक ही व्यक्तित्व पक्ष के अन्तर्गत विभक्त किया गया है। दोनों प्रकार की शैलियों को विभक्त करने के लिए व्यक्तित्व पक्ष के संयोजक चिन्ह अल्प विराम का प्रयोग हुआ है। किन्तु पहले शैलियों को देश द्वारा व्यक्त किया गया है। पश्चात् समय द्वारा। जैसे —

N44	भारतीय ललित कला
N51	ग्रीक ललित कला
N42	जापानी ललितकला
N44,C	बौद्धकालीन भारतीय ललित कला
N44,J	मुगलकालीन भारतीय ललित कला
N561,E	नार्मन ललित कला
N561,J	ट्यूडर ललित कला

अतः अलग-अलग ललित कलाओं के वर्गांक बनाने के लिए अलग अलग सूत्रों का प्रयोग किया गया है। जैसे—वास्तुकला के लिए सूत्र NA[व्य[,[व्य2],[व्य3] [व्य4] . [ऊ][2व्य] है।

वास्तुकला मे व्यक्तित्व पक्ष के प्रथम व द्वितीय स्तर वास्तु कला की शैली के सम्बन्ध मे देश व काल के द्योतक है। द्वितीय स्तर अल्प विराम द्वारा प्रकट किया गया है। अतः वस्तु कला में—

व्यक्तित्व पक्ष का प्रथम स्तर देश सम्बन्धी शैली का द्योतक है।

व्यक्तित्व पक्ष का द्वितीय स्तर समय सम्बन्धी शैली का द्योतक है।

व्यक्तित्व पक्ष का तृतीय स्तर उपयोगिता का द्योतक है।

व्यक्तित्व पक्ष का चतुर्थ स्तर उसके भाग व हिस्सो का द्योतक है।

ऊर्जा पक्ष वास्तुकला सम्बन्धी क्रियाओ समस्याओ का द्योतक है।

उदाहरण के लिए—

NA44,J6,65:8	मुगलकालीन सग्रहालयो के गुम्बदो का नमूना—
NA	वास्तुकला
NA44	भारतीय वास्तुकला
NA44,J	मुगलकालीन वास्तुकला
NA44,J6	मुगजकालीन सग्रहालयो की वास्तुकला
NA44,J6,65	मुगलकालीन सग्रहालयो की गुम्बदो की वास्तु कला
NA44,J6,65.8	मुगलकालीन सग्रहलयो के दुम्बन्दो की वास्तुकला का नमूना

वास्तुकला की भांति ही NB नगर नियोजन का भी वही सूत्र NB[व्य], [व्य2],[व्य3],[व्य4]·[ऊ] है। इन सभी पक्षो की अभिव्यक्ति भी पूर्ववत् ही की गई है।

ND शिल्प कला सम्बन्धी ग्रथों के वर्गांक निर्माण हेतु सूत्र ND[व्य], [व्य2][व्य3]ः[व्य4]:[ऊ][2व्य] है।

ND शिल्पकला मे भी व्यक्तित्व पक्ष के प्रथम व द्वितीय स्तर क्रमश. देश व समय की अभिव्यक्ति करते हैं। शिल्प कला के तृतीय स्तरीय व्यक्तित्व पक्ष मे आकृतियो को अभिव्यक्ति किया गया है। जैसे—

1 मानव आकृति, 18 आवक्ष आकृति; 2 प्रकृति;
216 पर्वत; 254 झील; 28 आकाश आदि।

इनका प्रयोग द्वितीय स्तर के साथ बिना किसी सयोजक चिन्ह के होता है। जैसे—

मुगलकालीन आवक्ष आकृति की शिल्पकला ND44,J18

शिल्पकला मे पदार्थ का प्रयोग आवश्यक है। अतः अर्द्धविराम ',' के सयोजक चिन्ह के साथ पदार्थ जैसे—लकडी, पत्थर, कासा, ताबा हाथीदात की अभिव्यक्ति की जाती है। शिल्प कला मे ऊर्जा पक्ष के अन्तर्गत शिल्प कला की क्रियाओ को व्यक्त किया जाता है। जैसे नमूना बनाना, आदर्शीकरण सुरक्षित रखना उदाहरण के लिए—

ND44,J18;4:4 मुगल कालीन शिल्पकला मे कास की अर्द्ध आकृति का नमूना।

इसी प्रकार चित्रकला आदि ललित कलाओ मे भी सूत्रो द्वारा ही वर्गांको की रचना होती है।

O साहित्य

साहित्य के क्षेत्र मे गद्य पद्य चम्पू आदि रचनाएँ प्रमुख है किन्तु पद्यात्मक या गद्यात्मक सभी रचनाओ को साहित्य का स्थान प्राप्त नही हो सकता। क्योकि प्राचीन भारतीय गणितशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, अर्थशास्त्र व राजनीति सम्बन्धी ग्रन्थ पद्यात्मक रूप मे ही प्राप्त होते हैं। इन सभी शास्त्रो को साहित्य की श्रेणी मे नहीं रखा जा सकता है। अत हिन्दी शब्दसागर के अनुसार "साहित्य समस्त ज्ञान भण्डार का वह विशिष्ट अग है जो मनुष्य को ऐसी अतर्द ष्टि प्रदान करता है जिससे रचनाकार किसी कला सृष्टि की रचना करके आत्मोपलब्धि करता है तथा अन्य लोग उसका रसास्वाद करके लोकोत्तर आनन्द अनुभव करते हैं।"

अत साहित्य सम्बन्धी पुस्तको का वर्गीकरण करने के लिए सूत्र O[व्य], [व्य2][व्य3],[व्य4] का प्रयोग किया जाता है।

साहित्य मे सर्वप्रथम व्यक्तित्व पक्ष भाषा की अभिव्यक्ति करता है। ग्रन्थ किस भाषा मे लिखा गया है अथवा मूल साहित्य की किस भाषा मे रचना हुई। अनेक ग्रन्थो की भाषा उसके मूल ग्रथ की भाषा से भिन्न भी हो सकती है तथा एक भी। साहित्य के वर्गांक मे भाषा से तात्पर्य मूलकृति की भाषा से ही होना है।

जैसे कालिदास कृत ऋतुसहारम् सस्कृत भाषा की रचना है किन्तु इस रचना को श्री आर० एस० पण्डित ने इगलिश भाषा मे लिखा है। इसी प्रकार वेनिस का सौदागर शेक्सपीयर की रचना है किन्तु रागेय राघव ने इस वेनिस का सौदागर को हिन्दी मे रूपान्तरित किया है। अत साहित्य के वर्गांक म हमेशा मूल कृति की भाषा ही ग्रहण की जाती है। यह भाषा अक द्विबिन्दु वर्गीकरण के द्वितीय खण्ड म भाषा एकल तालिका से उपलब्ध किए जा सकते हैं।

उदाहरण के लिए जैसे—

O111 अग्रेजी साहित्य
O12 लेटिन साहित्य
O13 ग्रीक साहित्य
O142 रूसी साहित्य
O15 सस्कृत साहित्य
O151 प्राकृत साहित्य
O152 हिन्दी साहित्य
O157 बगाली साहित्य
O168 उर्दू साहित्य

यदि कहीं कोई भाषा अंगीकृत भाषा के रूप में स्वीकार की गई हो तो वहां अंक की जगह एक आड़ी '—' रेखा प्रयोग की जाती है। जैसे—

O111 के स्थान पर O— लिखा जाता है।

साहित्य के व्यक्तित्व पक्ष के द्वितीय स्तर के अन्तर्गत साहित्य के विभिन्न रूपों को व्यक्त किया जाता है। जैसे—कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी पत्र-साहित्य, गद्य, चम्पू आदि। रूपों को व्यक्त करने के लिए समाषा अंक के पश्चात् व रूप अंक के पूर्व अल्पविराम ',' का संयोजक चिन्ह प्रयोग करना आवश्यक है। जैसे —

O111,1	अंग्रेजी कविता	O152,4	हिन्दी पत्र साहित्य
O152,1	हिन्दी कविता	O156,4	गुजराती पत्र-साहित्य
O15,2	संस्कृत नाटक	O73,6	अमेरिकी गद्य साहित्य
O13,2	ग्रीक नाटक	O44,6	भारतीय गद्य साहित्य
O142,3	रूसी कहानियां	O15,7	संस्कृत चम्पू साहित्य
O157,3	बंगला उपन्यास	O1511,7	पाली चम्पू साहित्य

साहित्य में व्यक्तित्व पक्ष के तृतीय स्तर द्वारा लेखक व रचनाकार की अभिव्यक्ति होती है। लेखकों व रचनाकारों की अभिव्यक्ति के लिए काल क्रम विधि का प्रयोग किया जाता है। इस संबन्ध काल क्रम प्रकरण में विस्तृत वर्णन हो चुका है अतः लेखक की अभिव्यक्ति के लिए जन्म वर्ष अथवा शताब्दी का अंक तथा लेखक नाम के प्रारम्भिक दो अक्षरों का प्रयोग करना पड़ता है।

जैसे—O15,2D40 कालीदास के नाटक
O152,3M90 जयशंकर प्रसाद की कहानियां
O157,3M61 रविन्द्रनाथ टैगोर की कहानियां
O157,NRA द्विजेन्द्र नाथ राय के नाटक
O152,1NVA बैरागी की कविता

साहित्य में व्यक्तित्व पक्ष के चतुर्थ स्तर पर लेखक व रचनाकार की कृतियों को प्रकट किया जाता है। इन कृतियों को प्रकट करने के लिए एक विशेष क्रम का प्रयोग किया गया है। द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली से इसके लिए निम्नलिखित क्रम दिया है —

1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, यदि 8 से ज्यादा कृतियां हों तो आगे—

1 (पहला) समूह 11, 12, 13, 14, 15 16, 17, 18
2 (दूसरा) समूह 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28

3. (तीसरा) समूह 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38
4. (चौथा) समूह 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 48
5. (पाचवा) समूह 51, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58
6. (छठा) समूह 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67, 68
7. (सातवा) समूह 71, 72, 73, 74, 75, 76, 77, 78
8. (आठवा) समूह 81, 82, 83, 84, 85, 86, 87, 88

यह क्रम आगे तक चालू रहता है। (सामान्य रूप मे यदि कृतियां 1 से लेकर 99 तक प्रकट करनी हो तो केवल दो ही अको का प्रयोग होगा किन्तु इस क्रम से तीन अको का प्रयोग होता है।) द्विविन्दु वर्गीकरण पद्धति से वैज्ञानिक पद्धति होने से अनेक कारण उक्त क्रम मे अधिक सफल हुई है अतः इसी क्रम का प्रयोग किया जाता है। यदि कृतिया 10 हैं तो उसे दूसरे समूह मे दूसरे क्रम पर होने के कारण 10 वी कृति को 22 अक प्रदान किया जावेगा। सामान्य पाठक को कुछ समय के लिए यह 22 अक भ्रम उत्पन्न करेगा किन्तु वर्गीकरण से अभ्यस्त होने पर सहज हो जाता है। अत. जैसे—पुस्तकालय मे लेखक की कृतिया आती जावे उसी क्रम मे उन्हे कृति अक प्रदान करते रहना चाहिए। यदि एक कृति की दो या दो से अधिक प्रतियाँ आती है तो कृति अक एक ही होना चाहिए। कृति अक को प्रकट करने के लिए अल्पविराम ' , ' का सयोजक चिन्ह आवश्यक है।

P भाषाशास्त्र

भाषा शास्त्र सम्बन्धी वर्गांको की रचना के लिए सूत्र P [व्य], [व्य 2] [3व्य] [ऊ] : [2व्य] का प्रयोग किया जाता है। भाषा शास्त्र मे व्यक्तित्व पक्ष को तीन स्तरो तक विभिन्न प्रयोजनो हेतु व्यक्त किया गया है।

भाषाशास्त्र मे व्यक्तित्व के प्रथम स्तर मे भाषा परिवार के प्रचलित अंगो की अभिव्यक्ति की गई है जैसे :—

P 111	अंग्रेजी भाषा	P 15	संस्कृत भाषा
P 12	लैटिन भाषा	P 151	प्राकृत भाषा
P 13	ग्रीक भाषा	P 152	हिन्दी भाषा
P 142	रूसी भाषा	P 41	चीनी भाषा

भाषा शास्त्र मे व्यक्तित्व पक्ष के द्वितीय स्तर से भाषा के रूपान्तरो को अभिव्यक्त किया गया है। रूपान्तर से तात्पर्य किसी विभिन्नता विशेष से है जैसे—

9 A	विभिन्नता	9 D	स्थानीय भाषा
9 B	अश्लील भाषा	9 J	निरर्थक भाषा

इसका प्रयोग प्रथम स्तर के पश्चात् अल्प विराम के सयोग से होता है। द्वितीय स्तर के द्वारा ही भाषा के विशिष्ट काल की अभिव्यक्ति भी काल-क्रम द्वारा की जाती है जैसे प्राचीन काल, मध्यकाल, आधुनिक काल आदि। उदाहरणार्थ :—

P 111,D	प्राचीन अंग्रेजी भाषा
P 111,D,9J	प्राचीन निरर्थक अंग्रेजी भाषा
P 111,E	मध्यकालीन अंग्रेजी भाषा
P 111,J	आधुनिक अंग्रेजी भाषा
P 15,A	वैदिक भाषा
P 15,B	महाकाव्य-कालीन संस्कृत भाषा
P 15,C	आधुनिक संस्कृत भाषा
P 151,9B	अश्लील प्राकृत भाषा
P 152,9D	प्रान्तीय हिन्दी भाषा

भाषा शास्त्र के वर्गांक सूत्र के अनुसार द्वितीय स्तर की अभिव्यक्ति अल्प-विराम के सयोग से होती है। द्वितीय स्तर के क्षेत्र मे भाषा की विभिन्नता तथा

विशिष्ट काल की अभिव्यक्ति है। अत दोनो स्थानो पर ही अल्प विराम का चिन्ह आवश्यक है। यदि किसी वर्गांक म दोनो ही तत्वो को व्यक्त करना हो तो पहले विशिष्टकाल तथा बाद म भाषा की विभिन्नताओ को प्रकट किया जाता है।

यदि किसी विशिष्ट स्थान की भाषा की विभिन्नता का व्यक्त करना हो तो उस स्थान विशेष का अ क बिना किसी संयोजक चिन्ह के विभिन्नता के साथ प्रयोग किया जाता है। जैसे —

P 152,N,9D4437 20 वी शताब्दी म राजस्थान की प्रातीय भाषा का स्वरूप

व्यक्तित्व पक्ष के तृतीय स्तर म भाषा के तत्वो को व्यक्त किया जाता हैं। भाषा के तत्व जैसे ध्वनि, अक्षर, शब्द, संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम क्रिया विशेषण समुच्चय, वाक्य आदि तथा इनके उपविभाग। इनका प्रयोग द्वितीय स्तर के पश्चात् प्रथम स्तर के पश्चात् अल्प विराम का चिन्ह', 'आवश्यक हैं। भी किया जाता है। प्रथम स्तर के पश्चात् अल्प विराम का चिन्ह', 'आवश्यक हैं।

भाषा के विशिष्ट काल सूचक अ का के अतिरिक्त तृतीय स्तर का प्रयोग अल्पविराम द्वारा किया जाता है—

P 152,31	हिन्दी भाषा मे संज्ञा का स्वरूप
P 111,J31	आधुनिक अंग्रेजी भाषा मे संज्ञा का स्वरूप
P 13,E,9J,31	मध्यकालीन जर्मन भाषा मे निरर्थक संज्ञाए

भाषा शास्त्र की समस्याओ व क्रिया कलापो का प्रयोग ऊर्जा पक्ष के अन्तर्गत किया गया है जैसे —

P 1	भाषा का उच्चारण	P 2	भाषा के कार्य
P 3	वाक्य रचना	P 4	अर्थ

यदि ऊर्जा पक्ष के 4 मुहावरे 5 कहावतो से सबंधित हो तथा तृतीय स्तर के तत्वो मे से '3' 'शब्द से सबंधित हो तो शब्द अथवा उसके उपविभागो को व्यक्त करना आवश्यक नही है।

Q धर्म शास्त्र

धर्म शास्त्र सम्बन्धी ग्रंथो का वर्गांक बनाने के लिए सर्व प्रथम उन प्रमुख धर्मों को व्यक्त किया गया है जो धर्म अपनी शाखा-प्रशाखाओं मे विभक्त हो तथा जो अपने धर्म के अनुसार विशिष्ट मान्यताए व कार्य-प्रणाली रखते है जैसे —

Q 1	वैदिक धर्म	Q 5	यहूदी धर्म
Q 2	हिन्दू धर्म	Q 6	ईसाई धर्म
Q 3	जैन धर्म	Q 7	मुसलमान धर्म
Q 4	बौद्ध धर्म	Q 8	अन्य धर्म

इन सभी धर्मों की अपनी अलग-अलग मान्यताए है तथा सभी धर्मों की पृथक् पृथक् शाखा-प्रशाखाए हैं उदाहरण के लिए वैदिक धर्म :—

Q 1	वैदिक धर्म	Q 13	सामवैदिक धर्म
Q 11	ऋग्वेदिक धर्म	Q 14	अथर्व वैदिक धर्म
Q 12	यजुर्वेदिक धर्म		

इन वैदिक धर्मों की शाखाओं की भी अपनी अलग-अलग प्रशाखाए होती हैं जैसे यजुर्वेदिक धर्म मे :—

Q 121	कृष्ण यजुर्वेद शाखा
Q 122	काय का यजुर्वेद शाखा
Q 123	कपिस्थला शाखा
Q 124	मैत्रीय शाखा
Q 125	श्वेत्रिय शाखा
Q 126	शुक्ल यजुर्वेद शाखा
Q 127	माध्यन्दिनी शाखा
O 128	कान्व शाखा

इन सभी शाखा-प्रशाखाओं का अलग अलग विधि विधान है । इसी प्रकार उक्त सभी विभिन्न धर्मों की भी शाखाए व विभिन्न विधि विधान है ।

इन (Q 1 से Q 7 तक) सभी धर्मों की शाखा, प्रशाखाओं के यदि ग्रन्थ विभाग करने की आवश्यकता हो तो उन्हें उनकी उत्पत्ति के काल क्रम के अनुसार व्यक्त किया जा सकता है जैसे —

Q 29M2	ब्रह्म समाज	(उत्पत्ति काल 1802 ई९)
Q 29M8	प्रार्थना समाज	(उत्पत्ति काल 1808 ई९)
Q 6 L4	न्यूचर्च	(उत्पत्ति काल 1704 ई०)
Q 7M9	ग्रहमदिया धर्म	(उत्पत्ति काल 1809 ई०)

इसी प्रकार यदि कोई धर्म उक्त Q 1 से Q 7 के अन्तर्गत नहीं आते हो तथा धर्म के नाम से प्रचलित हो तथा अपनी मान्यताए व विधि विधान बनाये हुए हो तो उन्हे अन्य धर्मों के अन्तर्गत भौगोलिक क्रम तथा अंगीकृत क्रम के अनुसार व्यक्त किया जाता है। भौगोलिक क्रम से तात्पर्य जिस भौगोलिक खंड मे उसकाउद्भव हुआ हो तथा अंगीकृत क्रम से तात्पर्य उस भूखण्ड मे उस धर्म की क्रम संख्या से है। उदाहरण के लिए सिक्ख-धर्म ।

Q 8	अन्य धर्म
Q 844	भारतीय अन्य धर्म
Q 8441	सिक्ख धर्म (अन्य धर्मों के प्रथम क्रम)
Q 8413	ताऊ धर्म (चीन का धर्म)

अन्य सार्वभौमिक धर्म कालक्रम द्वारा प्रकट किए जाते है जैसे—

QA विश्व धर्म, QM ब्रह्मवाद

धर्म शास्त्र मे ऊर्जा पक्ष के अन्तर्गत उन सभी क्रियाकलापो विधि-विधानों तथा समस्याओ को व्यक्त किया जाता है जो धार्मिक मान्यताओ से सम्बन्धित हो'

जैसे —

Q 1	पुराण शास्त्र
Q 2	धार्मिक ग्रंथ
Q 3	आध्यात्मक विधि
Q 4	धार्मिक क्रियाए
Q:5	धार्मिक उपदेश
Q 6	धार्मिक संस्थाए
Q 7	धार्मिक अन्य सम्प्रदाय
Q 25	धार्मिक कहावतें

R दर्शन शास्त्र

दर्शन शास्त्र के प्रमुख अंगो का विभाजन किसी तार्किक आधार पर न होकर रूढिगत अथवा प्रचलित आधार पर ही किया गया है जैसे :—

R 1	तर्क शास्त्र	R 2	प्रमाणशास्त्र
R 3	आत्मतत्व शास्त्र	R 4	नीतिशास्त्र
R 5	सौन्दर्य शास्त्र	R 6	भारतीय दर्शन शास्त्र
R 7	अंगीकृत दर्शन शास्त्र		
K 8	अन्य दार्शनिक पद्धतियाँ		

तर्क शास्त्र व प्रमाण शास्त्र केवल अपने मूल विभागो मे ही विभक्त है। आत्मतत्व व नीति शास्त्र केवल व्यक्तित्व के द्वितीयस्तर तक ही वर्णित है। व्यक्तित्व के सभी प्रथम स्तरो मे विषय के तत्वो की अभिव्यक्ति है तथा सभी द्वितीय स्तर विषय विधि द्वारा व्यक्त किए जाते है जैसे :—

नीतिशास्त्र R 4 को प्रथम स्तर पर इस प्रकार विभक्त किया गया है।

R 41	व्यक्तिगत आचरण
R 42	पारिवारिक आचरण
R 43	सामाजिक आचरण
R 44	व्यवसायिक आचरण आदि

इन अंगो का भी विस्तार किया गया है जैसे :—

R 42	पारिवारिक आचरण
R 421	पति पत्नि के आचरण
R 422	माता पिता व बच्चो के आचरण
R 423	सरक्षित व संरक्षक के आचरण
R 424	आश्रित संबंधियो के प्रति आचरण आदि

द्वितीय स्तर का प्रयोग विषय विधि द्वारा ही किया जाता है जैसे परिवार में धार्मिक आचरण R42 (Q)।

R 4 (V)	युद्ध नीतिशास्त्र
R 4 (Q6)	ईसाई नीति शास्त्र

भारतीय दर्शन R6 के प्रथम व्यक्तित्व स्तर को विभिन्न पद्धतियो के आधार पर विभक्त किया गया हैं जैसे —

R61	हिन्दू दर्शन	R62	न्याय दर्शन
R63	साख्य दर्शन	R64	पूर्वमीमासा
R65	वेदान्त दर्शन	R66	अद्वैत दर्शन
R67	विशिष्ट द्वैत दर्शन		
R68	द्वैत दर्शन		
R69	अन्य भारतीय दर्शन R693		जैन दर्शन

व्यक्तित्व के द्वितीय स्तर को R6 मे दो भागो मे विभक्त किया गया है जैसे R61 हिन्दू दर्शन से लेकर R64 पूर्वमीमांसा तक के प्रथम भाग को मूल दर्शन शास्त्र के अनुकूल प्रकट किया जाता है जैसे हिन्दू दर्शन मे प्रकृतिज्ञान है इस के लिए R61 तथा प्रकृतिज्ञान के लिए R22 लिया जाता है अत हिन्दू दर्शन मे प्रकृतिबोध R61,22 उसी प्रकार साख्यदर्शन मे भौतिकवाद के लिए R631,3

द्वितीय व्यक्तित्व स्तर मे द्वितीय भाग के अन्तर्गत R65 वेदान्त से R6893 शुद्धाद्वैत तक के सभी विभागो को उपनिषद, वेद व उनके अन्य विभाग जैसे ब्रह्मसूत्र भगवद्गीता आदि मे विभक्त किया गया है। इन सभी को मूल दर्शन शास्त्र के अग व विभागो द्वारा विस्तृत किया जा सकता है। द्वितीय स्तर का प्रयोग करने के पूर्व अल्प विराम का चिन्ह आवश्यक है जैसे :—

R65,5	ब्रह्म सूत्र
R66,914	अद्वैत मे प्रतिकात्मक तर्क

———

S मनोविज्ञान

मनोविज्ञान के वर्गांको की रचना हेतु सूत्र S [व्य] : [ऊ] [2 व्य] के अनुसार व्यक्तित्व पक्ष में मनोविज्ञान के वास्तविक तत्वों को सम्मिलित किया गया है जैसे :—

S1	बाल मनोविज्ञान
S2	युवक मनोविज्ञान
S6	वयस्क मनोविज्ञान
S4	व्यवसायिक मनोविज्ञान
S5	लैंगिक मनोविज्ञान
S6	असाधारण मनोविज्ञान
S7	जातिवश मनोविज्ञान
S8	सामाजिक मनोविज्ञान
S9	पशु मनोविज्ञान

आवश्यकतानुसार S1 बाल मनोविज्ञान से लेकर के S6 असामान्य मनोविज्ञान तक के सभी भागो को उनके उपविभागो मे विभक्त किया गया है। जैसे S6 असामान्य मनोविज्ञान के उपविभाग।

S61	प्रतिभा शाली	S65	अपराधी
S62	मूर्ख	S67	गूंगा व बहरा
S63	विक्षिप्त	S68	अंधे
S64	रुग्ण		

S7 जातिवश-मनोविज्ञान का विभाजन भौगोलिक विधि से तथा S8 सामाजिक मनोविज्ञान को समाजशास्त्र के अनुसार विभक्त किया गया है .—

जातिवंश मनोविज्ञान

S738	नीग्रो जाति का मनोविज्ञान
S73 (P3)	द्रविड़ जाति का मनोविज्ञान
S73 (Q7)	मुस्लिम जाति का मनोविज्ञान

सामाजिक मनोविज्ञान

S811	नवजात शिशु मनोविज्ञान
S813	अवयस्क मनोविज्ञान
S831	ग्रामीण मनोविज्ञान

मनोविज्ञान से ऊर्जा पक्ष के अन्तर्गत मनोवैज्ञानिक समस्याओं व क्रियाओं को व्यक्त किया गया है जैसे :—

S.1 नाडी तन्त्र प्रक्रिया
S:2 इन्द्रिय ज्ञान प्रक्रिया
S·3 चेतनता के लक्षण
S:4 अनुभूति व धारणा
S 5 मनः संवेग
S 6 भावनाएं
S.7 मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व
S 8 भौतिक

इन ऊर्जा तत्वों का भी आवश्यकतानुसार विस्तार किया गया है। ऊर्जा पक्ष द्वितीय आवर्तन केवल S.2 इन्द्रिय ज्ञान प्रक्रिया व S 3 चेतनता के लक्षणों के लिए ही प्रयोग किया गया है जैसे :—

S 24.2 घ्राणेन्द्रियों की रचना
S 25:4 दर्शनेन्द्रिय विकृति

अन्य विषयों की भांति मनोविज्ञान में भी अनेक प्रणालियां प्रचलित हैं जिन्हें कालक्रम द्वारा व्यक्त किया जाता है।

SM प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
SN1 व्यावहारिक मनोविज्ञान पद्धति
SN17 प्रतिक्रियावादी मनोविज्ञान पद्धति

T शिक्षा-शास्त्र

"शिक्षा शास्त्र ज्ञान जगत की वह शाखा है जो अध्ययन अध्यापन के ऐतिहासिक व सम सामयिक सिद्धान्तो व व्यवहारो को प्रकट करती है"।

शिक्षा शास्त्र सम्बन्धी वर्गांक रचना के लिए सूत्र T [व्य] [ऊ[[2व्य] [2व्य 2] को कार्य मे लिया जाता है।

शिक्षाशास्त्र मे व्यक्तित्व पक्ष शिक्षमान का सूचक है शिक्षमान व शिक्षाग्रहण-कर्ता के एकलो का निर्माण मनोविज्ञान के तत्वो के अनुरूप ही किया गया है जैसे —

T1	प्रारम्भिक शिक्षा	T2	माध्यमिक शिक्षा
T3	प्रौढ शिक्षा	T4	विश्वविद्यालय व उच्च शिक्षा
T5	लैंगिक शिक्षा	T6	असामान्य शिक्षा
T6	पिछड़े वर्ग के लिए शिक्षा	T9	अन्य वर्ग के लिए शिक्षा

अन्य वर्गों के लिए शिक्षा का विस्तार विषयानुसार किया जाता है जैसे—

T9(Y31) ग्रामीण समुदाय की शिक्षा
T9(Y54) सैनिक वर्ग की शिक्षा

शिक्षाशास्त्र की त्रिया प्रक्रियाओ व समस्याओ आदि को ऊर्जा मुख के अन्तर्गत व्यक्त किया गया है जैसे —

T 2 शिक्षा का पाठ्यक्रम
T·3 शिक्षा मे अध्यापन प्रक्रिया
T 4 विद्यार्थियो के कार्य
T 5 शिक्षा का मापन
T 6 शारीरिक शिक्षा
T 7 विद्यार्थी जीवन
Γ 8 शिक्षा मे व्यवस्था आदि

उक्त प्रक्रियाओ व समस्याओ मे से T.3, T.4 व T,5 को दूसरे खण्डो में विभक्त किया गया है तथा दोनो खडो को व्यक्त करने के लिए अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है जैसे —

T 3,13 श्रव्य अध्यापन प्रक्रिया
T 3,133 ग्रामोफोन अध्यापन प्रक्रिया
T 3,3 निर्देशात्मक अध्यापन प्रक्रिया

T 4 में —
T 4,1 गृह कार्य
T 4,2 पुस्तकालय कार्य
T 4,4 कार्यस्थल के कार्य

तथा T 5 में —
T 5,1 बुद्धि जांच
T 5 2 उपलब्धि जांच
T 5,5 परीक्षा
T 5,7 साक्षात्कार

जैसे —
T4 5,5 विश्वविद्यालयों में परीक्षा पद्धति
T58 8,98 प्रौढ़ कार्यों के लिए विचार विमर्श पद्धति

शिक्षाशास्त्र में ऊर्जा पक्ष के अन्तगत प्रथम खण्ड में विषय क्रम द्वारा भी विश्लेषण किया जा सकता है। भाषा सम्बन्धी विश्लेषण करते समय निरूप भेद के स्थान पर निम्न प्रकार से व्यक्त करना चाहिए।

(P1) मातृ भाषा
(F5) विदेशी भाषा
(P8) शास्त्रीय भाषा

जैसे —
T4 5(2),5 विश्वविद्यालय में पुस्तकालय विज्ञान की परीक्षा पद्धति
T2 4(P1),8 स्कूलों की मातृभाषा द्वारा पत्राचार शिक्षा

शिक्षा शास्त्र में यदि किसी विशेष शिक्षण प्रणाली का वर्गांक बनाना हो तो शिक्षण प्रणाली के पश्चात् शिक्षा शास्त्र के सभी पक्षों का उसी प्रकार प्रयोग किया जाता है।

TN3 5,5 वर्धा पद्धति में परीक्षा प्रणाली
TN1 3,93 बालवाड़ी में कहानी प्रणाली द्वारा शिक्षा

———

U भूगोलशास्त्र

"भूगोलशास्त्र मे पृथ्वीतल के विभिन्न क्षेत्रो की विशेषताओ और सम्बन्धो का वैज्ञानिक अध्ययन मानवीय ससार के रूप मे किया जाता है"।

भूगोलशास्त्र मे सूत्र U [व्य]. [स्था] '[स] के अनुसार विषय को व्यक्तित्व पक्ष के अन्तर्गत प्रचलित विभागो मे विभक्त किया गया है जैसे:—

U1	गरिणतीय भूगोल	U2	भौतिक भूगोल
U3	जैविक भूगोल	U4	मानव भूगोल
U5	राजनैतिक भूगोल	U6	आर्थिक भूगाल
U8	यात्राए, खोज आदि		

इन सभी विभागो को आगे भी उपविभागो मे विभाजन किया गया है जैसे—

U2	भौतिक भूगोल	U25	समुद्र विज्ञान
U21	भू-आकृति विज्ञान	U28	मारमान पद्धति
U27	घूसरित बवण्डर		

भूगोल मे सभी स्थान एकलो का प्रयोग किया जा सकता है किन्तु सैद्धान्तिक विषयो मे इसकी आवश्यकता नहीं होती है जैसे:—

U6	आर्थिक भूगोल के सिद्धान्त
U6.44	भारत का आर्थिक भूगोल
U6.58	रूस का आर्थिक भूगोल

समय एकल का प्रयोग भी सभी जगह आवश्यक नही है किन्तु जहां समय की अभिव्यक्ति आवश्यक ही हो वही पर समय का संयोजक चिन्ह् उद्धरण का प्रयोग करना चाहिए।



V इतिहास

इतिहास विषय सम्बन्धी वर्गांक बनाने के लिए सूत्र V [व्य], [व्य2] : [अ] [2व्य] '[स] का प्रयोग किया जाता है।

इतिहास मे व्यक्तित्व समुदाय के रूप मे व्यक्त किया जाता है। समुदाय किसी भी भौगोलिक स्थान से सम्बन्धित हो सकता है। अतः इतिहास मे समुदाय को व्यक्त करने के लिए भौगोलिक स्थान एकलो का प्रयोग किया जाता है जैसे V44 भारत का इतिहास; V5 यूरोप का इतिहास; V73 अमेरिका का इतिहास; V4437 राजस्थान का इतिहास।

इसी प्रकार इतिहास मे समुदाय का द्वितीय स्तर उस समुदाय के किसी भाग व अंश का द्योतक होता है। तथा इसकी अभिव्यक्ति अल्प विराम के चिन्ह से की जाती है जैसे :—

V,1 देश का प्रधान
V,2 देश की कार्य कारिणी
V,3 देश की व्यवस्थापिका
V,6 स्थानीय संस्था।

इसी संदर्भ मे यदि कोई स्थानीय संस्था किसी विशेष विषय हेतु बनाई जाती है तो उसके लिए समुदाय के अंश के आगे विषय विधि द्वारा उसे प्रकट किया जाता है।

इतिहास मे ऊर्जा पक्ष के माध्यम से किसी समुदाय तथा उसके अंशो के कार्य कलापो, समस्याओ का विश्लेपण किया जाता है। इसके लिए उर्जा पक्ष का चिन्ह द्विबिन्दु : का प्रयोग आवश्यक है। जैसे—

V:1 नीतिया
V:11 गृहनीति
V:19 विदेश नीति
V 2 विधान
V.3 समुदाय के कार्य
V:5 नागरिक अधिकार व कर्तव्य
V:6 इतिहास के स्त्रोत
तिलेखादि

द्विबिन्दु के 1967 के संस्करण में विदेश नीति V:19 को अधिक विस्तृत व उपयुक्त बनाने के लिए व्यक्तित्व तथा द्वितीय आवर्तन व्यक्तित्व पक्ष का प्रयोग किया गया है। जैसे व्यक्तित्व इतिहास में समुदाय का द्योतक है अतः V:19 के साथ बिना किसी संयोजक चिन्ह के उन समुदाय का स्थान एकल लगाया जाता है जिसके साथ विदेशी नीति व्यक्त की गई हो जैसे :—

भारत की रूस के साथ विदेश नीति	V44:1958
अमेरिका की पाकिस्तान के लिए विदेश नीति	V44:1927
ब्रिटेन की चीन के साथ विदेश नीति	V56-1941

इस प्रकार स्पष्ट है कि जिस भूखण्ड के लिए विदेश नीति हो उस भूखण्ड के अंक को बिना किसी संयोजक चिन्ह : 19 के साथ जोड़ कर प्रकट किया जा सकता है द्वितीय आवर्तन व्यक्तित्व में विदेश नीति को स्पष्ट करने के लिए विषयक्रम विधि का प्रयोग किया जाता है जैसे :—

भारत की पाकिस्तान के साथ आर्थिक नितियां	V44:19Q7,(X)
भारत की चीन के साथ सास्कृतिक नितियां	V44:1941,(Y)
रूस की भारत के साथ प्राद्योगिक नितियां	V58:1944,(F)

इस द्वितीय आवर्तन में ही विजय विधि के अतिरिक्त भी विदेश नीति को निम्न प्रकार से अधिक सूक्ष्म बनाया गया है जैसे :—

(ZD)	गुप्तचर्या	(ZB)	कूटनीति
(ZF)	सघर्ष	(ZE)	शीतयुद्ध
(ZL)	युद्ध और शान्ति	(ZK)	गुट निरपेक्षता
(ZN)	हमला	(ZM)	युद्ध
(ZQ)	शान्ति	(ZP)	प्रतिरक्षा
(ZT)	नि:शास्त्रीकरण	(ZS)	शास्त्रीकरण

जैसे :—

भारत की कूटनीति	V44:19,(ZB)
भारत की एशिया में गुटनिरपेक्ष नीति	V44:194,(ZK)
भारत की निशस्त्रीकरण नीति	V44:19(ZT)
भारत की पाकिस्तान के साथ प्रतिरक्षा की नीति	V44:19Q7,(ZP)

जैसे :—

इस वर्ग में समय की अभिव्यक्ति ही प्रधान होती है क्योंकि किसी भी समुदाय (देश) का इतिहास किसी समय विशेष की अभिव्यक्ति करता है। जैसे भारत का

प्राचीन इतिहास, भारत का मध्यकालीन इतिहास, भारत का आधुनिक इतिहास, इ गलैण्ड का ट्यूडर कालिन इतिहास, फ्रास की रक्तहीन क्रान्ति का इतिहास, गुप्त कालीन इतिहास आदि।

इस सम्बन्ध मे द्विविन्दु मे बहुत स्पष्ट निर्देश है कि इतिहास मे समय को तीन प्रकार से प्रकट किया जाता है जैसे —

1 प्राचीन काल से किसी निश्चित समय तक (भारत का सम्पूर्ण इतिहास)
2 किसी निश्चित से निश्चित समय तक (गुप्त कालीन इतिहास)
3 किसी, निश्चित से अनिश्चितकाल तक, (भारत का इतिहास मुगल से आगे)

इन्हे समय एकलो की सहायता तथा उनके सयोजक चिन्हो से बनाये जाते है। जैसे यदि किसी पुस्तक मे दो समय एकल प्रकट करने हो तो पहले जहा समाप्ति हो तथा ← चिन्ह के पश्चात् जहा से प्रारम्भ हो। जैसे

भारत का इतिहास 1701 1857 तक	V44'M57 ←L01
भारत की विदेश नीति 1947 से 1972 तक	V44 19'N72 ←N47

किसी भी राजनैतिक व ऐतिहासिक प्रसिद्ध व्यक्ति जैसे राजा, अध्यक्ष, मत्री, राजनैतिक दल के नेता आदि की जीवनी को उस देश (समुदाय) व अश के साथ y7 का प्रयोग करके प्रकट की जाती है।

W राजनीति शास्त्र

"राजनीतिशास्त्र का प्रारम्भ व अन्त राज्य के साथ होता है।"

राजनीतिशास्त्र के वर्गांकों की रचना के लिए सूत्र W[व्य],[व्य2]·[ऊ] [2व्य] का प्रयोग किया जाता है।

राजनीति शास्त्र को सर्वप्रथम प्रमाणिक राज्य के स्वरूपो मे विभक्त किया गया है। जैसे—

W1 अराजकता	W2 आदिम
W3 सामन्ती	W4 राजतन्त्र
W5 कुलीन तन्त्र	W6 प्रजातन्त्र
W7 आदर्श	W9 विश्व राज्य

शेष सूत्र के सभी अंक इतिहास के अनुरूप ही प्रयोग किए जाते है जैसे प्रजातन्त्र मे (समुदाय के भाग) प्रधान, कार्य कारिणी, व्यवस्थापिका, न्यायपालिका, स्थानीय सस्थाएं आदि। इस प्रकार राजनीति के भाग व क्रियाकलाप सभी इतिहास के अनुरूप होते हैं। अनेक अवसरो पर दोनो विषयो को अलग अलग से समझना स्वय एक समस्या हो जाती है जैसे कार्यपालिका, सविधान अथवा नागरिक अधिकार इतिहास के विषय भी होते हैं तथा राजनीति के भी। अतः जहा इन सभी विषयो पर ऐतिहासिक विवरण व सामान्य सिद्धान्तो का वर्णन हो वह इतिहास का विषय होता है तथा जहा पूर्णतः निश्चयात्मक व प्रयोगात्मक सिद्धान्तो का उल्लेख होता है वहा राजनीति का विषय होता है।

X अर्थशास्त्र

"अर्थ शास्त्र वह विज्ञान है जो लक्ष्यो व विभिन्न उपयोग वाले दुर्लभ साधनो के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध के रूप मे मानव व्यवहार का अध्ययन करता है।"

अर्थशास्त्र सम्बन्धी साहित्य के वर्गांको की रचना करने के लिए सूत्र X[व्य] [ऊ][2व्य] का पालन करना पडता है। अर्थशास्त्र मे व्यक्तित्व पक्ष व्यवसाय का सूचक है तथा इसे प्रचलित भागो मे विभक्त किया जाता है जैसे—

X3 सचरण
X4 परिवहन
X5 वाणिज्य
X6 साख
X7 सार्वजनिक वित्त
X8 प्रबन्ध

इन सभी प्रचलित भागो को उनके उपविभागो मे भी विभक्त किया गया है। जैसे—

X61 द्रव्य
X62 बैंक
X621 केन्द्रिय बैंक
X622 औद्योगिक बैंक
X627 बचत बैंक
X64 द्रव्य बाजार
X65 लागत
X6529 औद्योगिक लागत

उक्त प्रचलित भागो मे X4 परिवहन व्यक्तित्व पक्ष के रूप मे प्रयोग हुआ है तथा उर्जा पक्ष मे भी X:4 परिवहन का प्रयोग हुआ है अतः जब व्यवसाय सम्बन्धी परिवहन का प्रयोग करना हो तो व्यक्तित्व पक्ष की तालिका का प्रयोग होता है। जैसे—

X415 रेलवे परिवहन व्यवसाय; X425 सामुद्रिक परिवहन व्यवसाय

परिवहन का प्रयोग उर्जा पक्ष में वस्तु के लेजाने व लाने संबधी क्रियाओ के लिए उपयोग होता है। जैसे—

X:446 परिवहन किराया

X:484 परिवहन प्रबन्ध

अर्थशास्त्र मे पदार्थ पक्ष का भी प्रयोग हुआ है जैसे मुद्रा के लिए—

X61;1 स्वर्ण मुद्रा X61;2 रजत मुद्रा

X61;4 कागजी मुद्रा

अर्थशास्त्र मे उर्जा पक्ष का प्रयोग अधिक विस्तार तथा पृथक पृथक स्थानो पर विभिन्न सूत्रो द्वारा प्रकट किया गया है । मूल रूप मे अर्थशास्त्र सम्बन्धी सामान्य क्रियाकलाप व समस्याओ जैसे उपयोग, उत्पत्ति, वितरण, परिवहन् व मूल्य आदि सभी प्रचलित भागो व उपविभागो के रूप से हुआ है ।

X 8 प्रबन्ध तथा X:9 व्यक्तिगत प्रबन्ध मे समस्याओ का प्रयोग विभिन्न मूर्तो मे हुआ है । जैसे—X:9 व्यक्तिगत प्रबन्ध की तालिकाओ मे X:9 से लेकर X 97 तक 9 का सबसे कममूर्त खण्ड है ।

X:97 से लेकर 978 तक 97 का सबसे कम मूर्त खण्ड है । इसी प्रकार X·97B से लेकर 9915 तक अधिकतर मूर्त खण्ड माने गये हे ।

पुनः X:9 के 9९A से लेकर 99W तक अधिक मूर्तखण्ड तथा 9A से लेकर 90 तक अधिकतर मूर्त खड की तालिकाए है । इस प्रकार मूर्त खड तीन भागो मे विभक्त किया है ।

1. कम मूर्त खण्ड (Least Conevet Sector)
2. अधिक मूर्त खण्ड (Move Concrete Sectors)
3. अधिकतर मूर्त खण्ड (Still more Concrete Sector)

इन खण्डो मे दो या दो से अधिक खण्डो से सम्बन्धित पुस्तक के वर्गांक खण्ड उर्जा पक्ष के स्तरो के रूप मे प्रयोग होते है । इन खण्डो की अभिव्यक्ति अल्प-विराम के सयोजक चिन्ह से की जाती है। इन खण्डो के प्रयोग करने के लिए अधिक मूर्त खड का प्रयोग पहले तथा कम मूर्त खड का प्रयोग बाद मे होता है । जैसे—

X:99T,36 प्रशिक्षित वर्ग मे लाभ का वितरण

X:9 व्यक्तिगत प्रबन्ध

X.936 लाभ का वितरण

X 99T प्रशिक्षित वर्ग

X 99T,36 प्रशिक्षित वर्ग म नाम का वितरण

उक्त वर्गांक म 99T अधिक मूर्त खण्ड तथा 936 कम मूर्त खड है। अत अधिक मूर्त खड का प्रयोग पहले हुआ तथा कम मूर्त का पश्चात्।

द्विबिन्दु वर्गीकरण की तालिका खड X62 बैंक की समस्याएं व क्रियाओ के लिए भी अलग से तालिका दी गई है अत उसके अनुसार ही प्रयोग होता है जैसे —

X62 11 बैंको की ब्याज की दर

2 सुरक्षित

3 छूट

5 धनादेश

इसी प्रकार X72 कर प्रणाली के लिए भी विशेष प्रकार की क्रिया एव समस्याएं होती है। अर्थशास्त्र मे कतिपय प्रणालिया तथा विशिष्ट अध्ययनो का भी प्रयोग हुआ है। प्रणालियो व विशिष्ट अध्ययनो के साथ अर्थशास्त्र की सम्पूर्ण तालिकाए सामान्य रूप से काम मे ली जा सकती है।

Y समाज शास्त्र

"समाज शास्त्र मनुष्यो की अतः क्रियाओ और अत. सम्बन्धो, उनके कारणो व फलो का अध्ययन है।"

—जिन्सवर्ग

समाज शास्त्र सम्बन्धी साहित्य के वर्गांको की रचना करने के लिए सूत्र Y [व्य]:]ऊ] [2व्य]:[2ऊ] [3व्य] का प्रयोग किया जाता है।

मुख्य विषय समाज शास्त्र को सर्वप्रथम समाजशास्त्रीय प्रचलित 9 समूहो मे विभक्त किया जाता हैं। जैसे—

Y1 आयु व लिंग सम्बन्धित समूह
Y2 पारिवारिक समूह
Y3 निवास सम्बन्धी समूह
Y4 व्यवसायिक समूह
Y5 सामाजिक प्रतिष्ठा
Y6 असामान्य
Y7 जाति समूह
Y8 सामाजिक संस्थाओ का समूह
Y9 अन्य समूह

इन सभी समूहो के उपविभाग भी अनेक प्रकार से बनाये गये हैं। कुछ समूहों के सीधे प्रचलित उपविभाग होते हैं। जैसे—

Y1 आयु सम्बन्धी
Y11 बालक
Y12 युवा
Y13 वृद्ध
Y15 स्त्री
Y16 पुरुष

उसी प्रकार निवास सम्बन्धी समूहों मे—ग्रामीण, नगरीय, शहर, राष्ट्र, शरणार्थी पर्वतवासी आदि, कुछ समूहो के उपविभाग-एकल बनाने के लिए विषय-क्रम विधि, भौगोलिक विधि तथा अन्य विषयो की सहायता लेनी पड़ती है जैसे—

विषयक्रम विधि		भौगोलिक विधि	
Y7	जाति समूह	Y74	एशिया की जातिया
Y73(P1)	आर्य प्रजाति	Y744	भारत की जातिया
Y73(P2)	सेमेटिक प्रजाति	Y75	यूरोप की प्रजातिया
Y73(Q2)	हिन्दू जाति	Y78	आस्ट्रेलिया की प्रजातिया
Y73(Q7)	मुसलमान जाति		

अन्य समूह

Y2	पारिवारिक
Y217	विवाह
Y221	माता पिता
Y24	सम्बन्धी

इस प्रकार प्रत्येक समूह व उसके विभागो की तालिकाओ द्वारा वर्गांक की रचना होती है। इन तालिकाओ के अतिरिक्त भी आवश्यकता होने पर इन तालिकाओ द्वारा एक मिश्रित एकल की रचना प्रभावात्मक विधि द्वारा की जाती है।

जैसे—ग्रामीण-युवा वर्ग Y12–31, अफ्रीका के दास वर्ग Y492–76 आदि।

समाज शास्त्र के समूहो तथा उनके उपविभागो की समस्याओ तथा क्रिया कलापो को व्यक्त करने के लिए ऊर्जा पक्ष का प्रयोग किया जाता है। इस मुख्य विषय मे ऊर्जा पक्ष का प्रयोग द्वितीय आवर्तन तक किया गया है। प्रत्येक उर्जा पक्ष का प्रयोग उसके सयोजक चिन्ह द्विबिन्दु द्वारा ही किया गया है। इस उर्जा के प्रथम आवर्तन मे प्रचलित क्रिया कलापो व समस्याओ को व्यक्त किया गया है जैसे—

संस्कृति	Y 1
भौतिक विशेषताए	Y 2
सामाजिक कार्य कलाप	Y 3
सामाजिक व्याधिया	Y 4
जनांकिकी समाजशास्त्र	Y 5
सामाजिक व्यक्तित्व	Y 7
सामाजिक उपकरण	Y 8

यह सभी समस्याएँ व क्रिया कलाप समाज शास्त्र के प्रत्येक समूह व उनके विभागो के साथ समान रूप से प्रयोग होते है किन्तु उर्जा द्वितीय आवर्तन वाली क्रियाविधि व समस्याएं प्रथम उर्जा के निश्चित भागो के साथ ही प्रयोग की जा सकती है। जैसे कुछ क्रिया विधिया केवल सस्कृति व सभ्यता, कार्य कलाप, व्यक्तित्व तथा सामाजिक उपकरणो के साथ ही प्रयोग हो सकती हैं तथा कुछ तालिका सामाजिक बुराइयो के साथ ही प्रयोग हो सकती है अत मूलरूप से उर्जा पक्ष के द्वितीय आवर्तन का प्रयोग प्रथम आवर्तन के अभाव मे समव नही होता है।

समय व स्थान पक्ष आवश्यकता होने पर सभी जगह प्रयोग किया जा सकता है।

Z विधि शास्त्र

"कानून के अन्तर्गत वे सभी नियम अधिनियम व धाराए सम्मिलित है जो राज्य की नियामक शक्ति द्वारा प्रचलित किए जाते है तथा मानव के अधिकारो की रक्षा हेतु अदालतो मे प्रयोग किए जाते हैं।"

विधिशास्त्र सबधी वर्गांक बनाने के लिए सूत्र Z[व्य], [व्य2],[व्य3], [व्य4] का प लन करना चाहिए।

विधि शास्त्र मे केवल व्यक्तित्व पक्ष के चार स्तरो का प्रयोग किया गया है इस विषय मे व्यक्तित्व पक्ष का प्रथम स्तर समुदाय का द्योतक है। इसमे समुदाय को भौगोलिक क्रम तथा विषय क्रम विधि द्वारा व्यक्त किया गया है जैसे —

Z44	भारतीय कानून
Z56	इंगलिश कानून
Z7	अमेरिकन कानून
Z58	रूसी कानून
Z(Q2)	हिन्दू कानून
Z(Q5)	यहूदी कानून
Z(Q7)	मुस्लिम कानून
Z(Q6)	ईसाई कानून

अन्तर्राष्ट्रीय कानून सदैव Z1 द्वारा व्यक्त किया जाता है। किन्तु यदि किसी समुदाय विशेष का कानून भी ससार के अन्य देशो की स्थिति को प्रभावित करता हो तो उस देश विशेष के अक के साथ आडी रेखा की सहायता से अन्तर्राष्ट्रीय अक व्यक्त किया जा सकता है जैसे —

Z7–1	अमेरिकन अन्तर्राष्ट्रीय कानून
Z5–1	यूरोप का अन्तर्राष्ट्रीय कानून

व्यक्तित्व पक्ष के द्वितीय स्तर मे परम्परागत विभागो को व्यक्त किया गया है जैसे —

Z,1	वैधानिक व्यक्ति कानून
Z,13	निवास स्थान द्वारा
Z,14	व्यवसाय द्वारा
Z,15	प्रतिष्ठा द्वारा
Z,2	सपत्ति कानून
Z,3	सविदा व सधि कानून
Z,4	हानि विधि
Z,5	अपराध कानून
Z,7	कार्य की रुची कानून
Z,8	न्यायालय कानून
Z,91	न्याय शास्त्र

इन सभी विभागो के उप विभाग भी तालिका खड मे दिये गये हैं इसी स्तर मे कुछ विशेष स्थिति सम्बन्धी विभाग हैं जैसे :—

A	युद्ध	B	भूमि
C	समुद्र	D	वायु

इनका प्रयोग यदि आवश्यक हो तो उक्त विभागो के पूर्व अल्प विराम की सहायता से किया जाता है जैसे :—

Z44,B211	भारत मे भूमि सिलिंग कानून
Z44,A2	युद्ध कालीन भारतीय सपत्ति कानून
Z44,C265	जहाजरानी कानून

विधिशास्त्र के तृतीय स्तर व्यक्तित्व पक्ष मे द्वितीय स्तर के कुछ विभागो को अधिक सूक्ष्म करने हेतु तालिकाए दी गई हैं। अत इस स्तर की तालिकाओ का प्रयोग केवल निर्देशित विभागो के लिए ही अल्प विराम की सहायता से करना चाहिए जैसे Z,2 सपत्ति कानून के लिए।

Z,2,1	अचल सपति का स्वामीत्व कानून
Z44,2,1	सपति के स्वामित्व का भारतीय कानून
Z44,2,2	सपत्ति के अधिपत्य का भारतीय कानून
Z(Q2),2,41	सपत्ति की वसीयत का हिन्दू कानून

इसी प्रकार प्रत्येक विभाग के लिए अलग अलग तालिकाए हैं जो अल्प विराम के सयोजन द्वारा प्रकट की जानी है विधि शास्त्र मे व्यक्तित्व के चतुर्थ स्तर का

: केवल तृतीय स्तर के 'फैसला व राजाज्ञा' के विभागो को सूक्ष्म बनाने हेतु
[गया है जैसे —

Z44,71,73,564   अदालती मुकदमे मे एक पक्षीय राजाज्ञा के लिए अस्थायी निर्देश संबंधी भारतीय कानून ।

विधि शास्त्र मे व्यक्तित्व पक्ष के द्वितीय स्तर के '98' लिखित दस्तावेज तथा उसके उप विभागो के संबंध म उर्जा पक्ष द्वारा क्रिया कलापो तथा समस्याओ को उसके संयोजक चिन्ह द्विबिन्दु द्वारा व्यक्त किया जाता है जैसे —

Z,98 1   दस्तावेज का मसोदा बनाने संबंधी कानून
Z,98·2   दस्तावेज को क्रियान्वित करने का कानून
Z,98 3   दस्तावेज को पंजीकरण संबंधी कानून
Z,98 5   दस्तावेज को रद्द कराने संबंधी कानून

परिशिष्ट

पुस्तक मे द्विबिन्दु-वर्गीकरण के घोषाकों को रोमन लिपि के छोटे व बड़े वर्णों, ग्रीक वर्णों, अरबी अंक तथा संयोजक चिन्हों द्वारा प्रकट किए गये हैं, जो सहज ही ग्राह्य हैं। देवनागरी लिपि स्वयं मे इतनी अधिक समृद्ध है कि रोमन वर्णों का स्थान सहज मे ही ग्रहण कर लेती है। अत. यदि द्विबिन्दु वर्गीकरण मे भी रोमन वर्णों के स्थान पर देवनागरी के वर्णों का प्रयोग किया जावे तो अधिक सुगम, स्पष्ट व ग्राह्य होगा। जैसे—

A	क	N	द
AZ	क ह	NZ	द ह
B	ग	O	ध
BZ	ग ह	P	न
C	घ	Q	प
D	च	R	फ
E	छ	S	ब
F	ज	SZ	ब ह
G	झ	T	भ
H	ट	U	म
HZ	ट ह	V	य
I	ठ	W	र
J	ड	X	ल
K	ढ	Y	स
KZ	ढ ह	YZ	स ह
L	त	Z	ह
LZ	त ह	(g)	(झ्)
M	थ	(p)	(न्)
MZ	थ ह	(r)	(फ्)
MZA	थ ह क	(P)	(न)
		(X)	(ल)

उक्त वर्णों मे देवनागरी के रा, ङ, ञ ण, व, श, ष वर्णों का प्रयोग व उच्चारण स्पष्ट न होने के कारण भ्रामक है। क्योंकि 'रा' लिखने पर ख से र तथा व का भ्रम उत्पन्न होता है, इसी प्रकार व तथा ब भी भ्रम उत्पन्न करता है। ङ ञ ण का सामान्य उच्चारण न का बोध कराता है तथा श ष भी उच्चारण दोष के कारण भ्रामक हो जाता है। अत इन वर्णों का त्याग करना ही उत्तम है तथा रोमन वर्णों की सख्या से देवनागरी अधिक विस्तृत होने के कारण उक्त वर्णों की आवश्यकता ही नही पडती है।

रोमन के छोटे वर्णों के स्थान पर भी सहज मे ही उक्त वर्ण हलन्त करके प्रयोग किए जा सकते हैं जैसे—

a	b	c	d	e	f	g	h	i	j	k	l	m
क्	ग्	घ्	च्	छ्	ज्	झ्	ट्	ठ्	ड्	ढ्	त्	थ्

n	o	p	q	r	s	t	u	v	w	x	y	z
द्	ध्	न्	प्	फ्	ब्	भ्	म्	य्	र्	ल्		ह्

शेष ग्रीक वर्ण △, अरबी अक 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, तथा सयोजक चिन्हो — , , ' ॰ ( ) ← → की सहायता से उक्त वर्णों के आधार पर वर्गाको की रचना करने, लिखने, पढने अथवा टकन करने मे किसी भी प्रकार का भ्रम अथवा असुविधा नही होती है।

Bibliography

संदर्भित ग्रन्थ

1	Colon Classification	S R Ranganathan Asia,	1976
2	Theory of Knowledge Classification in Libraries	A P Srivastava Laxmi	1973
3	ग्रन्थालय वर्गीकरण	जी डी भागव म हि ग्र ए	1971
4	द्विबिन्दु वर्गीकरण	द ब माडीवाले आत्माराम	1965
5	Colon Classification (Theory & Practice)	M S Sachdeva, Sterling	1975
6	Colon Classification (Theory & Practice)	Bhargwa & Sood Vijay	1975
7	Library Science Today Vol I	ed P N Kaula Asia	1965
8	Prolegomena to library Classification	S R Ranganathan Asia	1967
9	Elements of library Classification	S R Ranganathan Asia	1962
10	Out line of library Classfication	J Mills	1960
11	Introduction in library Classification	W C. B Sayees	1958
12	वृहत अंग्रेजी हिन्दी कोष	ह दे बाहरी ज्ञान	1969
13	पारिभाषिक शब्द संग्रह	भारत सरकार मंत्रालय	1962